DELHI CRIME 10 june 2022:Layout 1 6/9/2022 7:29 PM Page 1

निष्पक्ष, निर्भीक, स्वतंत्र विचार व अपराध निरोधक मुख्य हिन्दी राष्ट्रीय समाचार पत्र

दिल्ली क्राईम व भ्रष्टाचार विरोधी मोर्चा

DELHI CRIME WA BHRASHTACHAR VIRODHI MORCHA

Website- Delhicrimepress.in
Email-info@delhicrimepress.in

RNI No. DELHIN/2005/15378 | DCP Lic. No. F-2(D-9)PRESS/2005 | वर्ष-01 | शुक्रवार 10 जून 2022 | पीडीएफ अंक-51 | पृष्ठ-8 | मूल्य-निःशुल्क

मौसम

अधिकतम –42 | सूर्योदय – 5 : 22
न्यूनतम – 31 | सूर्यास्त – 7 : 18

सोना चांदी

सोना – 52595.00 प्रति 10 ग्र चांदी – 62100.00 किलो

अर्थसार

सैंसेक्स – 55320.28 | निफ्टी – 16478.10
रु/यूएस डॉलर – 77.78 | रु/यूरो – 83.20

न्यूज फ्लैश

आरबीआई ने सहकारिता के विकास को दी गति : शाह

नई दिल्ली। केन्द्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सहकारिता के विकास को गति देने का काम किया है। शाह ने सहकारी बैंकों के माध्यम से ऋण प्रवाह बढ़ाने के लिए आरबीआई द्वारा घोषित महत्वपूर्ण कदमों का स्वागत करते हुए गुरुवार को कहा कि आरबीआई ने सहकारी क्षेत्र के लिए तीन बहुत महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णयों की घोषणा की है। सर्वप्रथम, शहरी सहकारी बैंकों के लिए व्यक्तिगत आवास ऋण की सीमा को दोगुना किया गया है। इस निर्णय से अब टियर 01 अर्बन कोऑपरेटिव बैंकों (यूसीबी) के लिए व्यक्तिगत आवास ऋण की सीमा को 30 लाख रुपये से बढ़ाकर 60 लाख रुपये टियर-2 यूसीबी के लिए 70 लाख से बढ़ाकर 1.40 करोड़ और ग्रामीण सहकारी बैंकों (आरसीबी) की सीमा को 20 लाख व 30 लाख से बढ़ाकर क्रमश 50 लाख व 75 लाख किया गया है। दूसरे प्रमुख निर्णय में ग्रामीण सहकारी बैंकों (आरसीबी) को रियल स्टेट क्षेत्र को ऋण देने की अनुमति दी गई है। जिससे हमारे ग्रामीण सहकारी बैंकों का दायरा और बढ़ेगा और साथ ही लोगों को किफायती घर देने के संकल्प को भी गति मिलेगी। तीसरे प्रमुख निर्णय में अब शहरी सहकारी बैंकों को अपने ग्राहकों को कमर्शियल बैंकों की तरह ही डोर स्टेप बैंकिंग की सुविधा प्रदान करने की अनुमति दी गई है। इस निर्णय से अब प्रतिस्पर्धी बैंकिंग क्षेत्र में सहकारी बैंकों को भी लेवल प्लेयिंग फील्ड मिलेगा और वो भी अन्य बैंकों की तरह ग्राहकों को घर-घर जाकर बैंकिंग सुविधाएं दे पाएंगे। सहकारी बैंकों के माध्यम से आवास क्षेत्र में ऋण प्रवाह में वृद्धि से आर्थिक गतिविधियों में बढोतरी होगी, पूंजी निर्माण और रोजगार सृजन बढ़ेगा, जिससे अर्थव्यवस्था में गुणक प्रभाव होगा। शाह ने कहा कि एक वर्ष से भी कम की अवधि में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सहकारिता क्षेत्र के लिए कई ऐतिहासिक निर्णय लिए हैं। जिनकी जरूरत इस क्षेत्र को लम्बे समय से थी। शाह ने कहा कि सहकारिता क्षेत्र के विकास को नई गति देने वाले निर्णयों के लिए सहकारिता मंत्रालय और सहकारिता क्षेत्र से जुड़े करोड़ो लोगों की ओर से वह प्रधानमंत्री मोदी का आभार व्यक्त करते हैं।

दिल्ली में आधुनिक गोशाला बनाएगी केजरीवाल सरकार

नई दिल्ली। दिल्ली के नजफगढ़ के खेड़ा डाबर में दिल्ली सरकार मॉडल गोशाला विकसित करेगी। बीते बुधवार को दिल्ली सरकार के मंत्री गोपाल राय ने खेड़ा डाबर की हरे कृष्णा गोशाला का जायजा लिया और गोशाल परिसर में निर्मित 500 किलोवाट के सौर ऊर्जा संयंत्र का उद्घाटन भी किया। मंत्री गोपाल राय के अनुसार यह गोशाला दिल्ली की पहली मॉडल गोशाला होगी। मॉडल गोशाला का प्रस्ताव रखते हुये मंत्री ने गोशाला में मौजूद गैस प्लांट से निकलने वाले अवशेष से खाद बनाने की बात कही। मंत्री गोपाल राय ने ट्वीट कर जानकारी दी कि मॉडल गोशाला के छतों से सोलर एनर्जी पैदा कर गोशाला से निकलने वाले गोबर से बायोगैस और जैविक खाद बनाया जाएगा। मंत्री ने यहां आधुनिक सुविधाओं के साथ-साथ रोजगार पैदा होने की बात भी की। मंत्री गोपाल राय ने आगे कहा कि कृष्णा गोशाला की तरह ही पूरी दिल्ली की गोशाला को मॉडल गोशाला के रूप में विकसित किया जाएगा। इस गोशाला को मॉडल में बदलने के बाद संबंधित लोगों को रोजगार और उनकी आय में वृद्धि की बात भी की गई। ये गौशाला पूरी तरह आत्मनिर्भर होगा। यहां गायों के लिये उचित जगह होगा जहां वो घूम-घूम कर चर सकें।

मान के घर के बाहर जुटे कांग्रेसी हिरासत में

नई दिल्ली। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान के आवास के बाहर विरोध प्रदर्शन करने इकट्ठे हुए कांग्रेस नेताओं को चंडीगढ़ पुलिस ने हिरासत में ले लिया। उन्हें सेक्टर 3 के पुलिस स्टेशन ले जाया गया। हिरासत में लिए जाने के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने थाने के बाहर भी नारेबाजी की। इस विरोध प्रदर्शन पर भगवंत मान ने कहा, मुझे दुख है कि कांग्रेस के नेता मेरे आवास के बाहर उन लोगों के समर्थन में प्रदर्शन कर रहे हैं जिन पर रिश्वत लेने का आरोप है। ये लोग लुटेरों का समर्थन कर रहे हैं जो कि इस बात का सबूत है कि उनके खून में ही रिश्वतखोरी बसी है। पंजाब कांग्रेस के नेताओं का आरोप है कि वादा करने के बावजूद गुरुवार को पंजाब के सीएम भगवंत मान ने उनसे मुलाकात नहीं की। वे गिरफ्तार पूर्व मंत्री साधु सिंह के बारे में मुख्यमंत्री से बात करना चाहते थे। साधु सिंह को भ्रष्टाचार के आरोप में विजिलेंस ब्यूरो द्वारा गिरफ्तार किया गया था। कैप्टन अमरिंदर सिंह की सरकार में वह पांजबा के वन और समाज कल्याण मंत्री थे।

खत्म होने जा रही है केंद्रीय विद्यालयों में गर्मी की छुट्टी

नई दिल्ली। दिल्ली समेत देश के अलग-अलग हिस्सों में गर्मी आग बरसा रही है। देश के कई राज्यों के स्कूलों में गर्मी की छुट्टी समाप्त हो चुकी है। इस बीच केंद्रीय विद्यालय और यूपी शिक्षी विभाग ने स्कूलों को खोलने का फिर से खोलने का निर्णय लिया है। अगामी 17 जून को देश भर के केंद्रीय विद्यालयों की गर्मी की छुट्टी खत्म हो जायेगी और 18 जून से दुबारा बच्चों की पढ़ाई शुरू हो जायेगी। केंद्रीय विद्यालयों में 7 मई से गर्मी की छुट्टी जारी है। देश के जिन शहरों के केंद्रीय विद्यालयों में 17 जून को गर्मी की छुट्टी खत्म होने जा रही है, उनके नाम हैं- देहरादून, दिल्ली, गुरुग्राम, फरीदाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद, चंडीगढ़, कोलकाता, गुवाहाटी, जयपुर, जम्मू, लखनऊ, पटना, रांची, सिलचर, तिनसुकिया, वाराणसी, अहमदाबाद, बेंगलुरु, चेन्नई, एणार्कुलम, हैदराबाद, जबलपुर, मुंबई, रायपुर, भुवनेश्वर, भोपाल। दिल्ली से सटे नोएडा, गाजियाबाद और हापुड़ समेत पूरे उत्तर प्रदेश में आगामी 16 जून स्कूल खुल जाएंगे और पढ़ाई दोबारा शुरू हो जाएगी। उत्तर प्रदेश के बेसिक शिक्षा परिषद के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्कूलों में गर्मी की छुट्टी 15 जून को खत्म होने जा रही है। यूपी के स्कूलों में 19 मई से गर्मी का छुट्टी जारी है, 26 दिन की छुट्टी के बाद इन स्कूलों में दूबारा 16 जून से बच्चों की पढ़ाई शुरू हो जायेगी।

बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को करेगा मजबूत : प्रधानमंत्री

- स्टार्ट-अप्स की संख्या कुछ सौ से बढ़कर 70 हजार हुई

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो-2022 इस क्षेत्र में 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान को मजबूत करेगा। उन्होंने कहा कि देश का पहला बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो देश में बायोटेक क्षेत्र के व्यापक विकास का प्रतिबिंब है। प्रधानमंत्री मोदी प्रगति मैदान में बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो 2022 के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन बायोटेक्नोलॉजी विभाग तथा बायोटेक्नोलॉजी इंडस्ट्री रिसर्च असिस्टैंस काउंसिल (बीआईआर-एसी) द्वारा किया जा रहा है। यह प्रदर्शनी बीआईआरएसी की स्थापना के दस वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित की जा रही है। इस प्रदर्शनी की थीम ह्यबायोटेक स्टार्टअप इनोवेशंस : आत्मनिर्भर भारत की दिशा मेंह्न है। प्रधानमंत्री ने इस मौके पर कहा कि पिछले आठ वर्षों में भारत की जैव-अर्थव्यवस्था आठ गुना बढ़ी है। हम 10 अरब डॉलर से बढ़कर 80 अरब डॉलर तक पहुंच चुके हैं। भारत, बायोटेक के वैश्विक पारिस्थितिकी तंत्र में शीर्ष दस देशों की लीग में शामिल होने से बहुत दूर नहीं है। उन्होंने कहा कि दुनिया में हमारे आईटी पेशेवर की स्किल और इनोवेशन को लेकर विश्वास नई ऊंचाई पर है। यही विश्वास, यही प्रतिष्ठा, इस दशक में भारत के बायोटेक क्षेत्र, भारत के बायो प्रोफेशनल्स के लिए होते हम देख रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत को बायोटेक के क्षेत्र में अवसरों की भूमि माना जा रहा है। उन्होंने इसके लिए मुख्य रूप से पांच कारण बताये हैं। इसमें विविध आबादी, विविध जलवायु क्षेत्र। प्रतिभाशाली मानव पूंजी पूल। भारत में व्यापार करने में आसानी की दिशा में बढ़ रहे प्रयास। भारत में लगातार बढ़ रही जैव उत्पादों की मांग और भारत के बायोटेक सेक्टर की सफलताओं का ट्रेक रिकॉर्ड शामिल है। उन्होंने कहा कि पिछले 8 वर्षों में देश में स्टार्ट-अप्स की

....शेष भाग पेज 3 पर

राष्ट्रपति आज श्री माता वैष्णो देवी के दर्शन करेंगे, सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए

जम्मू। राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद आज श्री माता वैष्णो देवी के दर्शन करेंगे। अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान राष्ट्रपति, उपराज्यपाल के साथ जम्मू कश्मीर के सुरक्षा हालात, विकास प्रोजेक्ट समेत अन्य अहम मुद्दों पर चर्चा करेंगे। राष्ट्रपति के जम्मू दौरे को देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए हैं। राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट (आईआ-ईएम) के दीक्षांत समारोह में शामिल होने के लिए अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान सुबह जम्मू पहुंच गए। जम्मू एयरपोर्ट पर उपराज्यपाल मनोज सिन्हा और जम्मू के मेयर चंद्र मोहन गुप्ता ने उनका स्वागत किया। इसके उपरांत राष्ट्रपति एयरपोर्ट से सीधा राजभवन के लिए रवाना हो गए। राष्ट्रपति के जम्मू दौरे को देखते हुए सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध किए गए हैं। राष्ट्रपति दोपहर बाद आईआईएम जम्मू के दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हो रहे हैं। वह आज श्री माता वैष्णो देवी के दर्शन करेंगे और उसी दिन वापस लौट जाएंगे। अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान राष्ट्रपति, उपराज्यपाल के साथ जम्मू कश्मीर के सुरक्षा हालात, विकास प्रोजेक्ट समेत अन्य अहम मुद्दों पर चर्चा करेंगे। प्रशासन व पुलिस के वरिष्ठ अधिकारी राष्ट्रपति के शहर में मौजूद होने के बाद से लगातार सुरक्षा प्रबंधों की समीक्षा कर रहे हैं।

जल-जंगल-जमीन को बचाने के लिए समर्पित थे बिरसा मुंडा : राहुल गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि महान स्वतंत्रता सेनानी वीर बिरसा मुंडा का जीवन जल-जंगल-जमीन को बचाने के लिए समर्पित रहा। मुंडा आदिवासी अस्मिता और संस्कृति के जननायक और महान स्वतंत्रता सेनानी थे। राहुल ने गुरुवार को वीर बिरसा मुंडा की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि देश के लिए समर्पित ऐसे महानायक को वह नमन करते हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रवक्ता रणदीप सिंह सुरजेवाला ने मुंडा के प्रति श्रद्धांजलि प्रकट करते हुए कहा कि महज 25 साल की उम्र में धरती आबा ने शांति की कलम से क्रांति की जो गाथा लिखी, वो इतिहास के पन्नों पर अमिट अक्षरों में दर्ज है। उल्लेखनीय है कि भगवान बिरसा का जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड के खूंटी जिले के उलिहातू गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम सुगना मुंडा और माता का नाम करमी था। वर्ष 1895 में बिरसा ने अंग्रेजों की ओर से लागू की गई जमींदारी प्रथा और राजस्व-व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। जिसके चलते अंग्रेजों ने उन्हें छल से बंदी बना लिया। भगवान बिरसा की 09 जून, 1900 को जेल में संदेहास्पद अवस्था में मौत हो गई थी। बिरसा के संघर्ष और बलिदान की वजह से उन्हें हम ह्यधरती आबाह्न के नाम से भी जानते हैं।

राष्ट्रपति चुनाव के लिए 18 जुलाई को मतदान, 21 को आएंगे नतीजे : मुख्य चुनाव आयुक्त

नई दिल्ली। देश के 16वें राष्ट्रपति पद के लिए 18 जुलाई को मतदान होगा और 21 जुलाई को नतीजे आयेंगे। वर्तमान राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द का कार्यकाल 24 जुलाई को समाप्त हो रहा है। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने आयोग में अपने साथी अनूप चन्द्र पांडेय के साथ गुरुवार को विज्ञान भवन में आयोजित संवाददाता सम्मेलन में राष्ट्रपति के चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की। राजीव कुमार ने बताया कि राष्ट्रपति पद के लिए 15 जून को अधिसूचना जारी की जाएगी। 29 जून तक नामांकन किए जा सकते हैं। सभी नामांकन दिल्ली में ही किए जा सकेंगे। नाम वापसी की अंतिम तिथि 2 जुलाई होगी। एक से अधिक उम्मीदवार होने पर मतदान 18 जुलाई को किए जायेंगे और इनके नतीजे 21 जुलाई को आयेंगे। मतगणना दिल्ली में रिटर्निंग ऑफिसर (राज्यसभा के महासचिव) की निगरानी में होगी। उन्होंने बताया कि राष्ट्रपति के लिए लोकसभा और राज्यसभा सांसद तथा राज्यों की विधानसभाओं (दिल्ली और पुडुचेरी केन्द्र शासित प्रदेशों की विधानसभा सहित) के सदस्य मतदान करते हैं। संविधान के अनुसार राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति पद के लिए होने वाले मतदान में राजनीतिक दल अपने विधायकों व सांसदों को किसी एक को मत देने के लिए व्हीप जारी अर्थात बाध्य नहीं कर सकते। राष्ट्रपति पद के लिए आनुपातिक प्रतिनिधित्व के तहत निर्वाचन मंडल मतदान करता है। निर्वाचन मंडल के सदस्य प्राथमिकता के आधार पर मत देते हैं। आयोग के अनुसार मतपत्रों पर विभिन्न भारतीय भाषाओं के अंकों में एक, दो, तीन लिखकर मत दिया जा सकता है। उम्मीदवारों की संख्या देखकर अंकों की संख्या निर्धारित होगी। मतपत्रों पर मत करने के लिए पेन चुनाव आयोग की ओर से ही मुहैया कराया जाएगा। राष्ट्रपति पद के लिए संसद भवन और राज्य विधानसभाओं में मतदान होगा। कुछ विशेष स्थितियों में मतदान केन्द्र को पहले से जानकारी देकर बदला जा सकता है। जेल में कैद विधायक अथवा सांसद पैरोल नियमों के तहत मतदान कर सकते हैं। साथ ही एहतियातन जेल में रखे गए सांसद-विधायक भी मतदान कर सकते हैं।

मत का मूल्य - देश में कुल 776 सांसद हैं और 4,033 विधायक हैं।

....शेष भाग पेज 3 पर

सार्वजनिक उद्यमों ने राष्ट्र के विकास में अमूल्य योगदान दिया है : सीतारमण

गांधीनगर/अहमदाबाद। केंद्रीय वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण और गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल ने महात्मा मंदिर में "राष्ट्र निर्माण में केंद्रीय सार्वजनिक उद्यम सीपीएसई का योगदान" विषय पर तीन दिवसीय प्रदर्शनी का गुरुवार को उद्घाटन किया। प्रदर्शनी का आयोजन केंद्रीय सार्वजनिक उद्यम विभाग के तत्वावधान में देशभर में मनाए जा रहे स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में किया गया है। सीतारमण ने कहा कि सार्वजनिक उद्यमों ने राष्ट्र के बहुमुखी विकास में अमूल्य योगदान दिया है। यह प्रदर्शनी पिछले 75 वर्षों में राष्ट्र के विकास की सेवा करने वाले सार्वजनिक उद्यमों की प्रगति को दिखाने के लिए आयोजित की गयी है। ये 75 सप्ताह स्वतंत्रता के अमृत पर्व के लिए सही समय है। इसमें सभी संगठनों को देश के विकास में अपना योगदान दिखाने का अवसर मिला है। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक उद्यमों की यात्रा 1947 से शुरू हुई और आज तक यह भारतीय अर्थव्यवस्था के उत्थान में लगातार योगदान दे रही हैं। वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के परिणामस्वरूप देश के उद्यमियों को राष्ट्र निर्माण में योगदान करने का एक उत्कृष्ट अवसर मिला। गुजरात उद्यमियों और उपक्रमों की भूमि है जो

....शेष भाग पेज 3 पर

समर्थन मूल्य पर पर्याप्त फसल नहीं खरीद रहा केंद्रः सुरजेवाला

जयपुर। कांग्रेस महासचिव रणदीप सिंह सुरजेवाला ने केन्द्र सरकार पर आरोप लगाया है कि एक बार फिर मोदी सरकार ने खरीफ फसलों के 2022-23 के समर्थन मूल्य घोषित करने में देश के किसानों से घोर विश्वासघात किया है। किसान की आमदनी बढ़ाना तो दूर, किसान का दर्द सौ गुना बढ़ा दिया है। राजस्थान से कांग्रेस के राज्यसभा प्रत्याशी सुरजेवाला ने उदयपुर में गुरुवार को कहा कि केंद्र सरकार पर्याप्त मात्रा में फसल समर्थन मूल्य पर नहीं खरीद रही है। साथ ही लागत बढ़ाकर किसानों की आमदनी को आधा कर दिया है। हाल ही में रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने बताया था कि देश में महंगाई की दर 6.7 प्रतिशत होकर अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। सरकार ने खरीफ फसलों के जो समर्थन मूल्य जारी किए हैं, वो उस महंगाई दर की वृद्धि से भी कम वृद्धि समर्थन मूल्य में की है। सामान्य तौर पर केंद्र सरकार गेहूं और धान समर्थन मूल्य पर खरीदती है, बाकी समर्थन मूल्य के लिए घोषित फसलों में नाम मात्र की खरीदी की जाती है। सुरजेवाला ने कहा कि राष्ट्रीय पतिदर्श सर्वेक्षण संगठन (एनएसएसओ) ने हाल ही में जारी रिपोर्ट में बताया था कि किसानों की औसत आमदनी 27 रुपये प्रतिदिन रह गई है और औसत कर्ज 74000 रुपये हो गया है। मोदी सरकार को किसानों से सरोकार है तो किसानों से सिर्फ समर्थन मूल्य घोषित करने की औपचारिकता का छलावा करने की अपेक्षा समर्थन मूल्य का कानून बनाए। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने छह साल पहले 2016 में किसानों के साथ फसलों के दाम दो गुना करने का छलावा किया था। उसकी पोल खुद एग्रीकल्चर की पार्लियामेंट्री कमेटी ने खोल दी। रिपोर्ट में बताया गया कि सरकार की आमदनी दोगुनी करने की घोषणा बहुत दूर की कौड़ी है। सरकार लगातार कृषि बजट का प्रतिशत कुल बजट में कम कर रही है और बीते 3 साल में 67 हजार करोड़ कृषि बजट के खर्च ही नहीं किए सरेंडर कर दिए। कमेटी ने यह भी आरोप लगाया कि मोदी सरकार कुल बजट में से प्रतिवर्ष कृषि बजट को कम करती जा रही है। 2019-20 में कुल बजट का

....शेष भाग पेज 3 पर

कुतुब मीनार परिसर में पूजा की अनुमति देने पर साकेत कोर्ट ने फैसला टाला

नई दिल्ली। दिल्ली के साकेत कोर्ट ने कुतुब मीनार परिसर में पूजा की अनुमति देने की मांग करने वाली याचिका पर फैसला टाल दिया है। आज याचिकाकताओं की ओर से एक नई अर्जी दाखिल की गई जिसके बाद एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज दिनेश कुमार ने फैसला टालने का आदेश दिया। कोर्ट ने पिछले 24 मई को फैसला सुरक्षित रख लिया था। इसके बाद इस मामले की सुनवाई करने वाले एडिशनल डिस्ट्रिक्ट जज निखिल चोपड़ा का ट्रांसफर हो गया था। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने याचिकाकर्ता की ओर से वकील हरिशंकर जैन ने कहा था कि पिछले आठ सौ वर्षों से इस परिसर का इस्तेमाल मुस्लिमों ने नहीं किया है। उन्होंने कहा कि जब मस्जिद के काफी पहले यहां मंदिर था तो पूजा की अनुमति क्यों नहीं दी जा सकती है। हरिशंकर जैन ने एंशियंट मॉनुमेंट्स एंड आर्कियोलॉजिकल साईट्स एंड रिमेंस एक्ट की धारा 16 का हवाला दिया था जिसमें पूजा स्थल की सुरक्षा का प्रावधान किया गया है। उन्होंने अयोध्या मामले में सुप्रीम कोर्ट के फैसले का जिक्र किया था जिसमें कहा गया है कि देवता हमेशा देवता रहेंगे और ध्वस्तीकरण से उसका चरित्र या उसकी गरिमा नहीं खत्म हो जाएगी। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने पूछा था कि याचिकाकर्ता को कौन से कानूनी अधिकार हैं। कोर्ट ने कहा था कि मूर्ति के होने पर कोई विवाद नहीं है, लेकिन पूजा करने के अधिकार पर विवाद है। कोर्ट ने कहा था कि सवाल है कि क्या पूजा का अधिकार एक स्थापित अधिकार है। क्या ये एक संवैधानिक अधिकार है या दूसरे तरह का अधिकार। क्या याचिकाकर्ता को पूजा के अधिकार से रोका जा सकता है। अगर ये मान लिया जाए कि कुतुब मीनार का मुसलमान मस्जिद के रूप में उपयोग नहीं करते हैं तो क्या इससे याचिकाकर्ता को पूजा करने का अधिकार किस आधार पर मिल जाता है। आठ सौ साल पहले हुई किसी घटना के आधार पर आपको कानूनी अधिकार कैसे मिल सकता है। आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) ने कोर्ट में जवाब दाखिल कर कहा था कि जब

....शेष भाग पेज 3 पर

मेधा किरीट सोमैया मानहानि मामले में शिवसेना नेता संजय राऊत को कोर्ट का नोटिस

मुंबई, (हि.स.)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश उपाध्यक्ष किरीट सोमैया की पत्नी मेधा किरीट सोमैया के मानहानि के मुकदमे में मुंबई की सेशन कोर्ट ने शिवसेना प्रवक्ता तथा राज्यसभा सदस्य संजय राऊत को आज नोटिस जारी किया है। इस नोटिस में संजय राऊत को 4 जुलाई को कोर्ट में उपस्थित रहने का निर्देश दिया गया है। किरीट सोमैया ने गुरुवार को पत्रकारों को बताया कि उनकी पत्नी ने 9 मई को मुलुंड के नवघर पुलिस स्टेशन में संजय राऊत के विरुद्ध मामला दर्ज करने की मांग की थी। जब पुलिस स्टेशन में मामला दर्ज नहीं किया गया तो उन्होंने मुंबई के सेशन कोर्ट में संजय राऊत के विरुद्ध मानहानि का मुकदमा किया था। इसी मामले में आज कोर्ट ने संजय राऊत को 4 जुलाई को अदालत में उपस्थित रहने का आदेश जारी किया है। उल्लेखनीय है कि संजय राऊत ने किरीट सोमैया की पत्नी मेधा सोमैया के युवक प्रतिष्ठान पर मीरा-भायंदर इलाके में शौचालय बनाने के काममें 100 करोड़ रुपये का घोटाला होने का आरोप लगाया था। इस मामले में किरीट सोमैया का कहना है कि शौचालय निर्माण का काम कुछ करोड़ का था, फिर 100 करोड़ रुपये का घोटाला किस तरह हो सकता है। किरीट सोमैया ने कहा था कि संजय राऊत झूठा आरोप लगाकर उन्हें तथा उनके परिवार को बदनाम कर रहे हैं।

DELHI CRIME 10 june 2022:Layout 1 6/9/2022 7:29 PM Page 2

सम्पादकीय

रहने दो गांधी जी को ही नोटों में

राजधानी के संसद मार्ग पर बनी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) बिल्डिंग के बाहर लगी यक्ष और यक्षिणी की मूर्तियों के पास खड़े होकर बैंक के कुछ मुलाजिम बात कर रहे हैं कि अगर उनके बैंक ने कुछ करेंसी नोटों पर गांधी जी के जल चित्रों के अलावा किसी अन्य महापुरुष के चित्रों को भी जगह देनी शुरू कर दी तो क्या होगा? दरअसल रिजर्व बैंक के मुंबई, दिल्ली, कानपुर आदि के दफ्तरों में आजकल इस तरह की चचाएं चल रही हैं। इसकी वजह यह है कि रिजर्व बैंक में शीर्ष स्तर पर विचार हो रहा है कि कुछ नोटों पर कुछ अन्य महापुरुषों के जल चित्र भी शामिल कर लिए जाएं। यानी गांधी जी के साथ कुछ करेंसी नोटो में कुछ अन्य महापुरुषों को भी जगह मिल जाए। अगर यह होता है तो फिर तमाम दूसरी हस्तियों के जल चित्र भी आरबीआई की तरफ से जारी होने वाले नोटों पर शामिल करने की मांग होने लगेगी। यह निश्चित है, इसलिए भारत के करेंसी नोटों पर बापू के ही जल चित्र बनें रहें तो सही होगा। यह बात समझ से परे है कि हमारे नोटों में गांधी जी को अपदस्थ करने की कोशिशें क्यों होने लगी हैं। इसकी जरूरत ही क्या है? क्या इस तरह की किसी ने मांग की है? गांधी जी का वैसे ही अब लगभग पूरे देश में भरपूर अनादर होने लगा है। उनकी मूर्तियों को तोड़ा जा रहा है। उनके हत्यारे को हीरो मानने वाले भी पैदा हो गए हैं। वे सिर्फ आरबीआई की तरफ से जारी होने वाले नोटों में ही सुरक्षित थे। अब वहां से भी उन्हें बाहर किया जा रहा है। इसे रोका जाना चाहिए। हां, रिजर्व बैंक अब तो यह सफाई दे रहा है कि गांधी जी अपनी जगह पर रहेंगे। पर जन्नत की हकीकत कुछ और है। बेशक देश को उन लोगों के नाम बताए जाएं, जो गांधी जी को नोट से भी बाहर करना चाह रहे हैं? यह किसकी शह और पहल पर हो रहा है? खबर है कि आईआईटी, दिल्ली के प्रो.दिलीप टी साहनी को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) ने एक बेहद अहम जिम्मेदारी सौंपी है कि वे यह देख कर बताएं कि भारत के विभिन्न करेंसी नोटों में महात्मा गांधी के साथ-साथ गुरुदेव रविन्द्रनाथ टेगौर तथा पूर्व राष्ट्रपति तथा मिसाइल मैन एपीजे अब्दुल कलाम के जल चित्रों (वाटर मार्क) का उपयोग करना कैसा रहेगा। बताया जाता है कि आरबीआई ने उन्हें इन दोनों महापुरुषों के जल चिह्नों (वाटर मार्क) के दो-दो सेट भेजे हैं। प्रो. साहनी अब बताएंगे कि करेंसी नोटों में इन दोनों महापुरुषों के जल चिह्न किस तरह के दिखाई देते हैं। दरअसल यह खबर है कि सरकार विचार कर रही है कि कुछ करेंसी नोटों में टेगौर तथा डॉ. कलाम के जल चित्र भी शामिल कर लिए जाएं। हालांकि, इस बारे में अंतिम निर्णय होना बाकी है, पर सरकार ने अपने कदम बढ़ाने जरूर शुरू तो कर ही दिए हैं। प्रो. साहनी को साल 2022 में शिक्षा के क्षेत्र में ठोस कार्य करने के चलते पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वे सरकार को रक्षा क्षेत्र में अनुसंधानों में मदद करते हैं। प्रो. साहनी ने आईआईटी, खड़गपुर से शिक्षा ग्रहण की है। उन्होंने आईआईटी, दिल्ली से पीएचडी की। वे लगातार चार दशक तक आईआईटी दिल्ली में पढ़ाते रहे। वे अब भी यहां पर विजिटिंग प्रोफेसर हैं। एक बात साफ हो जाए कि इसमें किसी को शक नहीं होना चाहिए कि गुरुदेव टैगोर और कलाम साहब भी देश के नायक हैं। सारा देश उनका आदर करता है। इस बारे में कोई दो राय नहीं है। पर गांधी जी के सामने सब उन्नीस हैं। गांधी तो सदियों में एक बार होते हैं। अगर देश ने अपने करेंसी नोटो में उन्हें जगह दी है तो कोई एहसान नहीं किया। जो भी गांधी जी को नोटों से बाहर करने पर आमादा हैं, वे जान लें कि एक बार नोटों से गांधी जी को हटाया गया तो फिर तमाम महापुरुषों को नोटों में जगह देने की मांग होने लगेगी। उसका कोई अंत ही नहीं होगा। तब हालात हाथ से निकल चुके होंगे। इसलिए नोटों से गांधी जी को बाहर करने से पहले सौ बार सोच लेना चाहिए। देश को कुछ चीजों में बदलाव के बारे में सोचना ही नहीं चाहिए। क्या राष्ट्रगीत को बदलने या संशोधन करने के प्रस्ताव या मांग को माना जा सकता है? नहीं न? यकीन कीजिए कि हमारे यहां राष्ट्रगान में संशोधन की मांग पहले भी उठ चुकी है। क्या राष्ट्रगान में संशोधन हो सकता है? क्या राष्ट्रगान में अधिनायक की जगह मंगल शब्द होना चाहिए? क्या राष्ट्रगान से सिंध शब्द के स्थान पर कोई और शब्द जोड़ा जाए? पहले भी सिंध शब्द को हटाने की मांग हुई थी, इस आधार पर कि चूंकि सिंध अब भारत का भाग नहीं है, इसलिए इसे राष्ट्रगान से हटाना चाहिए। ऐसी बेहूदगी भरी बातें करने वाले लोग हमारे बीच में कम नहीं हैं। अरबी लोग जब हिंदुस्तान आये तो सिन्धु नदी को पार करके आए। अरबी में 'स' को 'ह' बोलते हैं इसलिए सिन्ध की जगह हिन्द कहकर उच्चारण करते थे। यानि सिंध के पार 'हिन्द' और वहां के बाशिंदे 'हिन्दू'।

जब रक्षक बन जाये भक्षक, फिर बेटी कौन बचाये

लेखिका -निर्मल रानी /ईएमएस

हमारे देश में जहां कन्याओं व महिलाओं के कल्याण व उनके संरक्षण, सुरक्षा व आत्मनिर्भरता के लिये सरकार द्वारा तरह तरह की योजनाओं के दावे किये जाते हैं। जहां हमारा समाज कन्याओं की देवी स्वरूप पूजा करता और नवरात्रों में कंजक बिठाता है। जहां धार्मिक प्रवचनों व सत्संगों में पुरुषों से अधिक महिलायें बढ़चढ़कर हिस्सा लेती हों और तालियां बजा बजाकर व नृत्य कर अपनी धार्मिक श्रद्धा व भक्ति का प्रदर्शन करते न थकती हों, जहाँ लड़कियों की पूजा कर उनके पैर भी धोये जाते हों, उन्हीं कन्याओं व महिलाओं के साथ आखिर कौन सा जुल्म नहीं होता? बलात्कार,सामूहिक बलात्कार,बलात्कार के बाद हत्या, लड़कियों के चेहरे पर तेजाब डालकर उनके चेहरे को बदसूरत बनाने जैसा जघन्य अपराध,शादी करने का झांसा देकर अपनी वासना की हवस पूरी कर किसी लड़की को धोखा देना, दहेज की मांग, और मांग न पूरी होने पर हत्या कर देना या पत्नी को छोड़ देना अथवा मनमुटाव रखना या इसी बहाने मार पीट करते रहना आदि जैसे अनेक जुल्म इसी 'देवी रुपी' कन्याओं के साथ आये दिन होते रहते हैं। एक आंकलन के अनुसार भारत में 88 मिनट के अंतराल में बलात्कार की एक घटना होती है। ऐसे में सवाल यह है कि क्या समाज व परिवार का कोई वर्ग या रिश्ता ऐसा भी है जहां कन्या को व उसकी इज्जत आबरू को पूरी तरह सुरक्षित समझा जाये? क्या पिता के पास उसकी अपनी पुत्री सुरक्षित है? क्या भाई के पास उसकी बहन सुरक्षित है? क्या गुरु के पास उसकी शिष्या, किसी संत, पुजारी या मौलवी के पास श्रद्धा भाव लेकर सत्कारवश जाने वाली किसी बच्ची की इज्जत सुरक्षित है? किसी अधिकारी के मातहत काम करने वाली महिला, किसी नेता के पास अपनी फरियाद लेकर पहुंची कोई लड़की अपना दुखड़ा लेकर इंसाफ मांगने के लिये थाने पहुंची कोई लड़की, आखिर कौन सी ऐसी जगह है जहाँ हम और आप दावे से यह कह सकें कि अमुक वर्ग या अमुक रिश्ते के अंतर्गत बेटियां और उनकी इस्मत व आबरू पूरी तरह सुरक्षित है।लड़कियों के प्रति असुरक्षा की इस तरह की भावना कोई कोरी कल्पना पर नहीं बल्कि भारत के किसी न किसी कोने से प्राप्त होने वाली अविश्वसनीय किन्तु सत्य व दिल दहलाने वाली खबरों पर आधारित हैं। उदारहरण के तौर पर पिछले दिनों इंदौर शहर के खजलाना थाना क्षेत्र से एक ऐसी खबर आई जिसे सुनकर किसी भी मानव हृदय रखने वाले व्यक्ति की रूह काँप उठे। खबरों के अनुसार एक दुराचारी व्यक्ति जोकि किसी खाड़ी देश में एक पेट्रोकेमिकल कंपनी में कार्यरत है वह अपनी ग्यारह वर्षीय सगी बेटी के साथ दुष्कर्म करने का आदी हो गया था। उसने अपनी बेटी की आयु 15 वर्ष होने तक यह कुकर्म जारी रखा। हद तो यह कि उसने इन चार वर्षों में कई बार अपनी बेटी से अप्राकृतिक दुष्कर्म भी किया। वह केवल अपनी बेटी से दुष्कर्म करने की खातिर ही वर्ष में दो बार अरब देश से इंदौर आता और जब मौका मिलता वह उसके साथ कुकर्म करता। वह बेटी को यह बात किसी से भी न बताने को कहता और बताने पर उसे जान से मारने की धमकी देता। पिछले दिनों एक दिन जब उसके शरीर में पीड़ा हुई तो उसने अपनी मां से इन बातों का जिक्र किया। पहले तो उसकी मां को यकीन ही नहीं हुआ। परन्तु लड़की के बहुत यकीन दिलाने पर वह मान गयी। और बेटी के साथ उसने पुलिस में जाकर एफ आई आर कर दी। जब वासना का भेड़िया उसका हब्शी बाप पिछले दिनों पुनः अपनी बेटी को अपनी हवस का शिकार बनाने भारत आया तो इंदौर पुलिस ने उसे गिरफ़्तार कर लिया। इसी तरह भाई, चाचा, मामा, ससुर, जेठ, देवर, जीजा जैसे पवित्र रिश्तों को कलंकित करने वाले अनेक समाचार प्राप्त होते रहते हैं। इसी तरह एक सामूहिक बलात्कार पीड़िता जब आप बीती लेकर थाने पहुंची तो मौका पाकर थानेदार ने भी उसके साथ बलात्कार कर दिया। इससे बड़ा राक्षसीय व अमानवीय कृत्य और क्या होगा? गुरु शिष्या या अध्यापक व छात्रा का रिश्ता भी किसी पिता या अभिभावक के कम नहीं। परन्तु यह रिश्ता भी हमारे देश में तार तार हो चुका है। इसके उदाहरण गिनने की तो जरुरत ही नहीं क्योंकि कई 'कुप्रसिद्ध गुरु घंटाल' आज भी अपने ऐसे ही दुषकर्मों की सजाएं जेल की सलाखों के पीछे रहकर काट रहे हैं। मंदिर-मस्जिद-मदरसा आदि कितने पवित्र स्थलों में गिने जाते हैं। परन्तु आये दिन यह खबर आती है कि कभी किसी महंत ने किसी बाबा या पुजारी ने अथवा किसी मौलवी या हाफिज ने किसी बच्ची या महिला के साथ अपना मुंह काला किया। उदाहरण स्वरूप पिछले दिनों एक ताजातरीन हृदय विदारक घटना राजस्थान के अलवर जिले के मालाखेड़ा क्षेत्र में घटी। यहां एक 60 वर्षीय पुजारी एक पांच वर्ष की मासूम बच्ची को बहला फुसला कर मंदिर में ले गया और वहीं उसके साथ जोर जबरदस्ती कर दुष्कर्म करने लगा। जब लड़की असहनीय पीड़ा से जोर जोर चीखी चिल्लाई तब उसकी आवाज सुनकर पड़ोस से लोग इकठ्ठा हुये और पुजारी को रंगे हाथों पकड़ा। उसकी आम लोगों ने खूब पिटाई की। बताया जाता है कि अलवर की पुलिस अधीक्षक तेजस्विनी गौतम स्वयं घटना स्थल पर पहुंचीं और पुजारी पर एफ आई आर से लेकर मेडिकल जांच आदि तक की कार्रवाई स्वयं अपनी देखरेख में कराई। इसी प्रकार कुछ समय पूर्व एक समाचार उत्तर प्रदेश से आया था जिसके अनुसार कोई मौलवी तलाक के बाद हलाला व्यवस्था के नाम पर तलाक शुदा महिलाओं से ऐय्याशी का धंधा चलाता था। हमारे ही देश में सत्ता के लोग विधान सभा में बैठकर ब्लू फिल्म देखते पकड़े गये। उत्तर प्रदेश का ही एक बाहुबली विधायक तो बलात्कार व कत्ल के इलजाम में अभी भी जेल में है। गोया हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं कि चाहे जिस पद, गद्दी अथवा धार्मिक या संवैधानिक मरतबे पर बैठा व्यक्ति क्यों न हो, रिश्ता भी चाहे जितना पवित्र क्यों न हो,परन्तु कभी भी उसके भीतर बैठा वासना का राक्षस उसे किसी भी पद अथवा रिश्ते को तार तार करने के लिये मजबूर कर सकता है। ऐसे में समाज के सामने आज का सुलगता सवाल यही है कि आखिर जब रक्षक ही बन जाये भक्षक, फिर बेटी कौन बचाये?

भारत जैसा कोई और नहीं

इस्लामिक सहयोग संगठन (ओआईसी) के सदस्य 57 देश हैं। आश्चर्य है कि अभी तक सिर्फ 16 देशों ने ही अपनी प्रतिक्रिया दी है। दिल्ली में हुए पैगंबर-कांड पर शेष मुस्लिम राष्ट्र अभी तक क्या विचार कर रहे हैं, कुछ पता नहीं। शायद वे यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि आखिर भाजपा प्रवक्ता ने पैगंबर मोहम्मद के बारे में वास्तव में कहा क्या है? जो कुछ टीवी चैनल पर कहा गया है और बाद में टवीट किया गया है, उसे पूरी तरह से हटा लिया गया है। इसीलिए अब उसके विरुद्ध जो कुछ भी कहा जाएगा, वह किसी अन्य स्त्रोत से जानकर कहा जाएगा। यह भारत-विरोधी अभियान अब वैसे ही चलेगा, जैसे कि अफवाहों के दम पर कई अभियान चला करते है। भारत सरकार के प्रवक्ता और हमारे राजदूतों ने सभी देशों को आगाह कर दिया है कि भारत सरकार का इस तरह के निरंकुश बयानों से कुछ लेना-देना नहीं है लेकिन दुनिया के सभी इस्लामी देशों में भारत को बदनाम करने का अभियान अभी जोरों से चलता रहेगा। भारत सरकार इसकी काट करती रहेगी लेकिन उसको इससे डरने की कोई जरुरत नहीं है। यदि कोई देश भारत से संबंध तोड़ता है तो उससे भारत का नुकसान जरुर होगा लेकिन उस देश का नुकसान भारत से कहीं ज्यादा होगा। अंतरराष्ट्रीय संबंध कभी भी एकतरफा नहीं होते। जहां तक मोदी सरकार का सवाल है, उसने इस्लामी राष्ट्रों के साथ अपने संबंध काफी घनिष्ट बनाए हैं। यदि मोदी खुद भी एक बयान जारी करके इस्लामी राष्ट्रों की समझ को ठीक कर दें तो इसमें कोई बुराई नहीं है। जैसे उन राष्ट्रों ने भारत का विरोध करके एक औपचारिकता निभाई है, वैसे ही मोदी भी कूटनीतिक औपचारिकता निभा सकते हैं। इस मामले को लेकर कानपुर में जरुर तोड़-फोड़ हुई है लेकिन देश के हिंदुओं और मुसलमानों ने काफी संयम का परिचय दिया है। शिवलिंग और पैगंबर के बारे में कही गई आपत्तिजनक बातों को उन्होंने अपने जी से नहीं लगाया और वे सारा तमाशा भौंचक होकर देख रहे हैं। कुछ विपक्षी नेताओं के भड़काने का कोई खास असर दिखाई नहीं पड़ रहा है। एक सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि देश के 89 प्रतिशत हिंदु और 85 प्रतिशत मुसलमान किसी भी अन्य धर्म के लोगों को ठेस पहुंचाने के विरुद्ध हैं। जो 10-15 प्रतिशत लोग ऐसा नहीं मानते, उनका कहना है कि किसी को भी अच्छा लगे या बुरा, सच तो सच है।

जनता को झटका

लेखक-सिद्धार्थ शंकर /ईएमएस

देश में महंगाई लगातार बढ़ रही है और इसे काबू में रखने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने फिर से रेपो रेट में 0.50 फीसदी की वृद्धि की है। इसके बाद यह 4.40 फीसदी से बढ़कर 4.90 फीसदी हो गई है। रेपो दर में इजाफे का सीधा असर लोन की ईएमआई पर पड़ता है और आपका खर्च बढ़ जाता है। होम लोन से लेकर ऑटो और पर्सनल लोन तक सभी पर इसका असर देखने को मिलेगा। सबसे पहले बात कर लेते हुए रेपो दर की और जानते हैं कि किस तरह से यह लोन और ईएमआई से संबंधित हैं। दरअसल, रेपो रेट वह दर होती है जिस पर आरबीआई बैंकों को कर्ज देता है, जबकि रिवर्स रेपो रेट उस दर को कहते है जिस दर पर बैंकों को आरबीआई पैसा रखने पर ब्याज देती है। रेपो रेट के कम होने से लोन की ईएमआई घट जाती है, जबकि रेपो रेट में बढ़ोतरी से कर्ज महंगा हो जाता है। यहां बता दें कि बीते चार मई को आरबीआई ने रेपो रेट में 0.40 फीसदी का इजाफा किया था और अब 35 दिन के भीतर दूसरी बड़ी बढ़ोतरी का फैसला किया है।

चार मई के बाद से रेपो रेट 0.90 फीसदी बढ़ चुका है। आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने एमपीसी की बैठक के फैसलों का एलान करते हुए महंगाई को लेकर अपनी चिंता जाहिर की। उन्होंने रूस और यूक्रेन के बीच लंबे समय से जारी युद्ध से सप्लाई चेन पर पड़े प्रभाव का जिक्र करते हुए कहा कि महंगाई पर लगाम लगाने के लिए इस तरह का निर्णय किया गया है। इसके अलावा बॉन्ड यील्ड चार साल में पहली बार 7.5 फीसदी पर पहुंच गई। वहीं क्रूड के दाम में तेजी का सिलसिला जारी है। दास ने बीते दिनों एक चैनल को दिए इंटरव्यू में कहा था, आरबीआई कम से कम अगली कुछ बैठकों में दरें बढ़ाना चाहेगा। मैंने खुद अपने मिनट्स में कहा है कि मई में ऑफ-साइकिल मीटिंग के कारणों में से एक यह था कि हम जून में ज्यादा स्ट्रॉन्ग एक्शन नहीं चाहते थे। उन्होंने ये कहा था, रेपो रेट्स में कुछ बढ़ोतरी होगी, लेकिन कितनी होगी अभी मैं ये नहीं बता पाऊंगा।

पिछली बैठक में आरबीआई गवर्नर ने साफ कहा था कि बैंक की प्राथमिकता महंगाई को थामना है। इसलिए जल्दी ही नीतिगत दरें बढ़ाई जा सकती हैं। नीतिगत दरों में बढ़ोतरी रिजर्व बैंक की मजबूरी इसलिए बन गई कि महंगाई की दर उसके छह फीसद के निर्धारित दायरे से भी ऊपर निकल गई है। ऐसे में रिजर्व बैंक कब तक चुप बैठता? गौरतलब है कि महंगाई को लेकर लंबे समय से हाहाकार मचा है। खुदरा और थोक महंगाई दोनों नित नए रिकार्ड बना रहे हैं। खाद्य वस्तुओं और खाद्य तेलों सहित जिंसों और धातुओं के बाजार में भारी तेजी बनी हुई है। मार्च के महीने में ही महंगाई दर 6.95 फीसद पर पहुंच गई थी, जो 17 महीने में सबसे ज्यादा थी। ऐसे में रिजर्व बैंक की यह जिम्मेदारी है कि वह खुदरा महंगाई दर को निर्धारित छह फीसद से ऊपर न जाने दे। इसीलिए अब एमपीसी के पास कोई चारा नहीं रह गया था, सिवाय इसके कि वह नीतिगत दरों में बढ़ोतरी का कठोर कदम उठाती। इसलिए भी कि अगर महंगाई इसी तरह बेकाबू होती रही तो अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पडड्रे लगेंगे। हालांकि महंगाई बढड्रे के कई कारण हैं। दो साल तक कोविड महामारी की वजह से अर्थव्यवस्था रसातल में चली गई। इसे पटरी पर लाने के लिए सरकार और केंद्रीय बैंक दोनों ही पहले से जूझ रहे हैं।

हालात जैसे तैसे काबू में आने शुरू हुए तो रूस-यूक्रेन युद्ध छिड़ गया। इस वैश्विक संकट ने नए सिरे से मुश्किलें खड़ी कर दीं। सबसे ज्यादा मार कच्चे तेल के दामों से पड़ी। भारत में आज महंगाई जिस रिकार्ड स्तर पर पहुंच गई है, उसका बड़ा कारण पेट्रोल और डीजल के बढ़ते दाम हैं। मुश्किल यह है कि यूक्रेन संकट कितना लंबा खिंचेगा, कोई नहीं जानता।

हर मनुष्य के जीवन हैं दुख

एक बार भगवान बुद्ध से किसी भिक्षु ने पूछा-भगवान! ईश्वर है या नहीं है? बुद्ध ने इसका सीधा उत्तर न देकर प्रश्नकर्ता भिक्षु से कहा-मनुष्य की समस्या ईश्वर के होने या न होने की नहीं है। मनुष्य की मुख्य समस्या है उसके जीवन में आने वाले दुखों की। भगवान बुद्ध ने अपने कथन को स्पष्ट करते हुए तब कहा कि तुम स्वयं देखो। जन्म दुख है, जीवन दुखों का समूह है। जिसे वृद्धावस्था कहते हैं वह दुख है और मरण दुख है। इस रूप में मनुष्य का जन्म, वृद्धावस्था और मरण सभी दुख स्वरूप ही हैं। उन्होंने कहा कि मनुष्य जो चाहता है वह उसे कभी नहीं मिलता। यह उसके जीवन का दुख है। जिसे वह कभी नहीं चाहता वह उसे अवश्य मिलता है-यह इसका दुख है। अपने परम प्रिय का वियोग इसके जीवन का दुख है और जो अप्रिय है, उसका संयोग इसके जीवन का परम दुख है। उस प्रश्नकर्ता भिक्षु को संबोधित करते हुए भगवान ने कहा कि भिक्षु! अधिक विस्तार में न जाकर तुम संक्षेप में इतना ही जानो कि रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान' ये सभी के सभी दुख स्वरूप ही हैं। रूप यानी जो संसार में दिख रहा है, यह रूप है और दुखात्मक है। वेदना यानी अनुभूति, दुख की अनुभूति दुखात्मक है। तथाकथित सुखात्मक अनुभूति भी अंततः दुख ही देती है। संज्ञा अर्थात नाम। यह भी अच्छे, बुरे, स्मरणीय और अविस्मरणीय के रूप में दुखात्मक है। संस्कार, जो पिछले अनेक जन्मों से चला आ रहा है, वर्तमान जन्म में हमारी आदत के रूप में दुख देता है। विज्ञान यहां आशय यानी विशेष ज्ञान, जो अहंकार आदि के रूप में प्रकट होकर हमारे दुख का कारण बनता है। इसलिए उन्होंने कहा कि भिक्षु! मनुष्य की समस्या ईश्वर के अस्तित्व या अनस्तित्व की नहीं है, उसकी समस्या है, उसके जीवन में व्याप्त दुखों की और इसका उपाय जानने के लिए मार्ग है, जीवन में प्राप्त होने वाले दुखों को सत्य रूप में देखना। यानी अपने अज्ञान को ज्ञान से नष्ट करने का प्रयास करना। यही दुख-निवृत्ति का सहज, सरल और सार्वकालिक मार्ग है। इसी मार्ग पर चलकर हमारी ऋषि-परंपरा के दार्शनिकों ने दुख-निवृत्ति का मार्ग पाया है। भौतिक वस्तुओं के पीछे भागने से आनंद की प्राप्ति नहीं होगी, यह परम सत्य है। भौतिक पदार्थों से अंत में दुख ही मिलता है। इस सत्य को जानकर व्यक्ति दुखों से निवृत्त हो जाता है।

मां गंगा के अवतरण का पर्व है 'गंगा दशहरा'

लेखक - डॉ. श्रीगोपाल नारसन (ईएमएस)

जिस दिन मां गंगा का धरती पर अवतरण हुआ था,उस पवित्र दिन को गंगा दशहरा के रूप में मनाया जाता है। अपने पूर्वजों की आत्मा की शांति के लिए भागीरथ गंगा को पृथ्वी पर लेकर आए थे।जिसके लिए उन्होंने कठिन तपस्या भी की थी। गंगा दशहरा पर हर वर्ष गंगा में आस्था की डुबकी लगाई जाती हैं। ऐसा कहते हैं कि इस दिन गंगा में स्नान करने से 10 प्रकार के पाप मिट जाते हैं।इस बार गंगा दशहरा पर दो शुभ संयोग बन रहे हैं। गंगा दशहरा पर रवि योग बन रहा है। इस दिन सूर्योदय के साथ ही रवि योग भी शुरू हो जाएगा। इस शुभ योग में पूजा-पाठ और मांगलिक कार्यों को करना बहुत ही शुभ माना जाता है।गंगा ज्येष्ठ माह के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को हस्त नक्षत्र में धरती पर अवतरित हुई थी। इस बार हस्त नक्षत्र 9 जून को सुबह 4 बजकर 31 मिनट से प्रारंभ होकर 10 जून को सुबह 4 बजकर 26 मिनट तक रहेगा।यही गंगा स्नान का सबसे उपयुक्त मूहर्त है। गंगा में डुबकी लगाते समय ऊँ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गंगायै नमः मंत्र का उच्चारण करना चाहिए। घर में नहाने के पानी में गंगाजल मिलाकर भी स्नान किया जा सकता हैं। गंगा दशहरा के दिन दान करने का विशेष महत्व बताया गया है। इस दिन दान-धर्म के कार्य करना बहुत ही शुभ माना जाता है। दशहरा का अर्थ 10 मनोविकारों के विनाश से है। ये दस मनोविकार हैं-क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर, अहंकार, आलस्य, हिंसा और चोरी। जिनसे मुक्ति के लिए ज्ञान गंगा का स्नान करने से हम विकारमुक्त होकर पवित्र बन सकते है। राजा भागीरथ की कठोर तपस्या, उनके अथक प्रयास और परिश्रम से इसी दिन गंगा ब्रह्मा जी के कमंडल से निकलकर शिव की जटाओं में विराजमान हुई थी और शिवजी ने अपनी शिखा को खोल कर गंगा को धरती पर जाने की अनुमति दी थी। इसलिए गंगा के धरा अवतरण दिवस को गंगा दशहरा के नाम से जाना जाता है। गंगा दशहरा के दिन प्रातः काल गंगा में स्नान करके मां गंगा की आरती करने से समस्त पापों का

विनाश हो जाने की धार्मिक मान्यता है। गंगा का जल हमेशा पवित्र व गुणकारी होता है, उसमें कभी भी कीड़े नहीं पड़ते और इसका जल प्रदूषित नहीं होता ।

इसलिए इस जल में स्नान करने से रोगों का विनाश हो जाता है। गंगा दशहरा के दिन स्नान, ध्यान और तर्पण करने से शरीर शुद्ध और मानसिक विकारों से मुक्त हो जाता है।अमृत दायिनी मां गंगा के स्पर्श मात्र से ही चराचर जीवो के पापों का अंत हो जाता है और उसे मुक्ति मिल जाती है। कहते है कि एक बार महाराज सगर ने एक बड़ा यज्ञ किया। उस यज्ञ की रक्षा का भार उनके पौत्र अंशुमान ने संभाला। इंद्र ने सगर के यज्ञीय अश्व का अपहरण कर लिया। यह यज्ञ के लिए विघ्न था। परिणाम स्वरूप अंशुमान ने सगर की साठ हजार प्रजा लेकर अश्व को खोजना शुरू कर दिया। सारा भूमंडल खोज लिया पर अश्व नहीं मिला।फिर अश्व को पाताल लोक में खोजने के लिए पृथ्वी को खोदा गया। खुदाई पर उन्होंने देखा कि साक्षात भगवान 'महर्षि कपिल' के रूप में तपस्या कर रहे हैं। उन्हीं के पास महाराज सगर का अश्व घास चर रहा है। प्रजा उन्हें देखकर 'चोर-चोर' चिल्लाने लगी। महर्षि कपिल की समाधि टूट गई। ज्यों ही महर्षि ने अपने आग्नेय नेत्र खोले, त्यों ही सारी प्रजा भस्म हो गई। इन मृत लोगों के उद्धार के लिए ही महाराज दिलीप के पुत्र भगीरथ ने कठोर तपस्या की थी। भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उनसे वर मांगने को कहा तो भगीरथ ने 'गंगा' की मांग की। इस पर ब्रह्मा ने कहा- 'राजन! तुम गंगा का पृथ्वी पर अवतरण तो चाहते हो? परंतु क्या तुमने पृथ्वी से पूछा है कि वह गंगा के भार तथा वेग को संभाल पाएगी? मेरा विचार है कि गंगा के वेग को संभालने की शक्ति केवल भगवान शंकर में है। इसलिए उचित यह होगा कि गंगा का भार एवं वेग संभालने के लिए भगवान शिव का अनुग्रह प्राप्त कर लिया जाए।' महाराज भगीरथ ने वैसा ही किया। उनकी कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माजी ने गंगा की धारा को अपने कमंडल से छोड़ा। तब भगवान शिव ने गंगा की धारा को अपनी जटाओं में समेटकर जटाएं बांध लीं।

इसका परिणाम यह हुआ कि गंगा को जटाओं से बाहर निकलने का पथ नहीं मिल सका।अब महाराज भगीरथ को और भी अधिक चिंता हुई। उन्होंने एक बार फिर भगवान शिव की घोर तपस्या शुरू की। तब कहीं जाकर भगवान शिव ने गंगा की धारा को मुक्त करने का वरदान दिया। इस प्रकार शिवजी की जटाओं से छूट कर गंगाजी हिमालय की घाटियों में कल-कल निनाद करके मैदान की ओर आई।इस प्रकार भगीरथ पृथ्वी पर गंगा का वरण करके बड़े भाग्यशाली हुए। उन्होंने जनमानस को अपने पुण्य से उपकृत कर दिया। युगों-युगों तक बहने वाली गंगा की धारा महाराज भगीरथ की साधना की गाथा कहती है। गंगा प्राणीमात्र को जीवनदान ही नहीं देती, मुक्ति भी देती है। इसी कारण भारत तथा विदेशों तक में गंगा की महिमा गाई जाती है और गंगा के अवतरण की याद में गंगा दशहरा मनाया जाता है।

प्रसंगतः दो थैले

हमारे गांवों में अक्सर एक कथा सुनने को मिलती है। ईश्वर ने जब मनुष्य की रचना की तो उसे अपनी अन्य सभी कृतियों से श्रेष्ठ बनाया। सुघड़ और सुंदर बनाने के साथ उसे बुद्धि भी दी। जब मनुष्य इस पृथ्वी पर पहुंचा तो बह्मा ने उससे पूछा, अब यहां आकर तुम क्या चाहते हो? मनुष्य ने कहा, प्रभु, मैं तीन बातें चाहता हूं। एक, मैं सदा प्रसन्न रहूं। दूसरा, सभी मेरा सम्मान करें। और तीसरा, मैं सदा उन्नति के पथ पर चलता रहूं। मनुष्य की ये इच्छाएं जान कर बह्मा जी ने उसे दो थैले दिए और कहा, एक थैले में तुम अपनी सभी कमजोरियां डाल दो, और दूसरे थैले में दूसरे लोगों की कमियां डालते रहो। साथ ही यह भी कहा कि इन दोनों थैलों को हमेशा अपने कंधों पर ले कर चलना। लेकिन हां, एक बात का ध्यान और रखना कि जिस थैले में तुम्हारी अपनी खामियां हैं, उसे तो अगली तरफ रखना। और जिस थैले में दूसरों की कमजोरियां रखी हैं, उन्हें पीछे की तरफ यानी पीठ पर रखना। समय-समय पर सामने वाला थैला खोलकर निरीक्षण भी करते रहना, ताकि अपनी त्रुटियां दूर कर सको। परंतु दूसरे लोगों के अवगुणों का थैला, जो पीठ पर डाला होगा, उसे कभी न खोलना और न ही दूसरों के ऐब देखना या कहना। यदि तुम इस परामर्श पर ठीक से आचरण करोगे, तो तुम्हारी तीनों इच्छाएं पूरी होंगी- तुम सदा प्रसन्न रहोगे, सबसे सम्मान पाओगे और सदा उन्नति करोगे। मनुष्य ने ब्रह्मा जी को नमस्कार किया और अपने दुनियावी कामकाज में लग गया। लेकिन इस बीच उसे थैलों की पहचान भूल गई। जो थैला पीछे डालना था उसे तो आगे टांग लिया और जिस थैले को आगे रख कर देखते रहने को कहा था, वह पीछे की तरफ कर दिया। तब से मनुष्य दूसरों के अवगुण ही देखता है, अपनी कमजोरियों पर ध्यान नहीं देता। इसी वजह से उसेफल भी उलटा ही मिलता है।

DELHI CRIME 10 june 2022:Layout 1 6/9/2022 7:29 PM Page 3

हरियाणा में अब ई-ऑफिस से आगे बढ़ेंगी सरकारी फाइलें

अक्टूबर तक लागू होगा ई-ऑफिस का नया वर्जन
-हिन्दी, अंग्रेजी भाषाओं में काम करेगा ई-ऑफिस

चंडीगढ़, (हि.स.)। हरियाणा के मुख्य सचिव संजीव कौशल ने कहा है कि सरकारी कार्यालयों की फाइलों को ई-ऑफिस के माध्यम से आगे बढ़ाए जाने का कार्य जारी है। इसमें और अधिक पारदर्शिता लाने के लिए ई-ऑफिस का नया वर्जन- 7 अक्टूबर माह तक शुरू कर दिया जाएगा ताकि किसी भी व्यक्ति के काम में कोई विलंब न हो। संजीव कौशल गुरुवार को चंडीगढ़ में ई-ऑफिस प्रक्रिया के क्रियान्वयन के संबंध में समीक्षा बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ई-ऑफिस का नया वर्जन-7 टेबलेट और आईपैड में भी खुल सकेगा। इसमें एक ही समय पर कई डॉक्यूमेंट्स एक साथ खोले जा सकेंगे। इसके अलावा इसमें बोलकर लिखने की सुविधा और पैराग्राफ रेफरेंसिंग फीचर भी उपलब्ध होंगे। हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषा में कार्य करने की सुविधा भी होगी। इससे सरकारी दफ्तरों में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों की कार्य करने की क्षमता में वृद्धि होगी। सरकारी कार्यालयों में ई-ऑफिस लागू करते हुए उन्हें पेपरलेस किया जाना है। इसे अब तक प्रदेश के 146 विभागों, बोर्ड एवं कारपोरेशनों में लागू किया जा चुका है। इनमें 123 विभाग व 22 सार्वजनिक उपक्रम ब्यूरो शामिल हैं। उन्होंने कहा कि राज्य में ई-ऑफिस के 32 हजार से अधिक उपयोगकर्ता हैं, जिनके लिए 6 से 8 टेराबाइट डाटा भण्डारण के लिए बढ़ाया गया है। मुख्य सचिव ने कहा कि वित्त विभाग 75 प्रतिशत तथा मुख्य सचिव कार्यालय 61 प्रतिशत कार्य ई-ऑफिस के माध्यम से कर रहा है। प्रदेश में अब तक ई-आफिस का वर्जन- 5.6 लागू है। इसे अक्टूबर माह तक नये वर्जन-7 में अपग्रेड कर सभी विभागों में लागू किया जाएगा। बैठक में राजस्व एवं आपदा विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव पी के दास, सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव अनिल मलिक, मुख्यमंत्री की अतिरिक्त प्रधान सचिव श्रीमती आशिमा बराड़, उद्योग विभाग के प्रधान सचिव विजेन्द्र कुमार, प्रशासनिक सचिव पंकज अग्रवाल, प्रबंध निदेशक हारट्रोन मनदीप बराड़, प्रशासनिक सचिव अशोक मीणा तथा मानव संसाधन विभाग के विशेष सचिवचन्द्र शेखर खरे सहित कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे।

हरियाणा के मुख्य सचिव श्री संजीव कौशल राज्य में ई ऑफिस क्रियान्वयन समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए। साथ में एसीएस श्री पी के दास व अन्य वरिष्ठ अधिकारी। (9 जून 2022)

स्कूल, कॉलेजों में व्यायाम के लिए तय हो रोजाना एक घंटा : दत्तात्रेय

-खेल सचिव एवं निदेशक ने खेलो इंडिया पर राज्यपाल को दी रिपोर्ट

चंडीगढ़, (हि.स.)। हरियाणा के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने कहा है कि प्रदेश के विश्वविद्यालयों सहित शिक्षण संस्थाओं में खेलों की बेहतर सुविधाएं हैं। इन सुविधाओं का और ज्यादा उपयोग के लिए स्कूल, कॉलेजों में नियमित रूप से एक घंटा खेल एवं शारीरिक व्यायाम के लिए निश्चित किया जाना चाहिए जिससे बच्चों में खेल के प्रति रुचि बढ़ेगी। पंचकूला में चल रहे खेलो इंडिया-2021 यूथ गेम्स के विजेता/प्रतिभागी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि यह हरियाणा की नई खेल नीति व बेहतर ढांचागत खेल सुविधाओं की बदौलत ही हो पाया है। दत्तात्रेय गुरुवार को राजभवन उनसे मिलने आए खेल एवं युवा मामले विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह से बातचीत कर रहे थे। डॉ. महावीर पंचकूला में चल रहे खेलो इंडिया-2021 गेम्स की जानकारी देने पहुंचे थे। उनके साथ विभाग के निदेशक पंकज नैन भी थे। राज्यपाल ने कहा कि खेलों की वजह से ही देश की सेनाओं में भी हरियाणा के युवाओं का 10 प्रतिशत योगदान है जबकि हरियाणा की जनसंख्या देश की जनसंख्या का मात्र अढ़ाई प्रतिशत है। खेल विभाग हरियाणा के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह ने खेलो इंडिया गेम्स-2021 की गतिविधियों के बारे में अपडेट देते हुए बताया कि आगामी 13 जून तक चलने वाले 25 खेलों में 8500 से अधिक खिलाड़ी भाग ले रहें हैं। अभी तक हरियाणा पदक तालिका में सबसे आगे चल रहा है। दो बार का विजेता महाराष्ट्र इस बार दूसरे नंबर पर है।

प्रधानमंत्री कौशल केंद्र ओरियन एजुटेक के विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र बांटे

-नौकरी मांगने वाले नहीं अपितु देने वाले बनने की दिशा में आगे बढ़ें: राजीव जैन

सोनीपत, (हि.स.)। मुख्यमंत्री मनोहर लाल के पूर्व मीडिया सलाहकार राजीव जैन ने प्रधानमंत्री कौशल केंद्र ओरियन एजुटेक के प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम एवं जॉब फेयर का शुभारंभ करते हुए पात्र विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र वितरीत किए। उन्होंने कौशल विकास में दक्षता हासिल करने वाले युवाओं को बधाई देते हुए प्रोत्साहित किया कि युवाओं को नौकरी मांगने वाले नहीं अपितु नौकरी देने वाले बनने की दिशा में कदम बढ़ाने चाहिए। इस दिशा में कौशल विकास बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। हरियाणा स्किल डेवल्पमेंट मिशन के सहयोग से आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए पूर्व मीडिया सलाहकार राजीव जैन ने कहा कि कौशल विकास का उद्देश्य यही है कि युवाओं उद्यमिता की ओर बढ़ाया जाए। युवा स्व-रोजगार स्थापित करें ताकि वे खुद का भरण पोषण करते हुए अन्य लोगों को भी रोजगार प्रदान कर सकें। आज के दौर में रोजगार ही युवाओं की पहली आवश्यकता है, जिसे वे खुद पूरा कर सकते हैं। इसके लिए उन्हें कौशल विकास की ओर कदम बढ़ाने होंगे। प्रदेश सरकार ने इसके लिए विशेष व्यवस्था की है। पलवल में तो विशेष रूप से विश्वकर्मा विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है। परिधान, ब्यूटी पार्लर, सिलाई मशीन, हॉस्पिटेलिटी इत्यादि के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। जॉब फेयर में पर्णव एसोसिएट, इलाइट स्ट्रिंग एपेरल्स, बीकानेरवाला, फोकस स्टाईल, ओम ब्यूटी पार्लर, शी ब्यूटी पार्लर आदि संस्थानों ने हिस्सा लेते हुए युवाओं का चयन किया। इस मौके पर संचालक अमित कुमार, स्वर्णजीत मुखर्जी, गौरव भोला, वैश जैन, भावना, पिंकी, हिना, संजय आदि उपस्थित थे। सबने प्रतिभागी युवाओं का हौंसला बढ़ाया।

योग दिवस के नाम पर छुट्टियों में अध्यापकों को बुलाने का होगा विरोध

जींद, (हि.स.)। हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ की बैठक जिला प्रधान साधुराम की अध्यक्षता में स्थानीय अक्षर भवन कार्यालय में संपन्न हुई। जिला प्रधान साधुराम ने बताया कि विद्यालयों में ग्रीष्मकालीन अवकाश चल रहे हैं पर सरकार किसी ना किसी बहाने अध्यापकों को छुट्टियों में भी विभिन्न कार्यों में उलझा कर रखे हुए है। अभी विभाग द्वारा ताजा जारी फरमान के माध्यम से अध्यापकों को योग दिवस के नाम पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में उपस्थित होने के आदेश दिए जा रहे हैं। हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ ऐसे तुगलकी फरमानों का विरोध करता है व मांग करता है कि अध्यापकों से किसी भी प्रकार के गैर शैक्षणिक कार्य ना लिए जाएं। जिला सचिव मामराज जांगड़ा ने कहा कि एक ओर तो सरकार दो वर्ष से अधिक समय से आंदोलनरत पीटीआई टीचर्स की कोई सुनवाई नहीं कर रही हैं। दो वर्ष के बाद भी इन अध्यापकों को स्कूलों में कार्यग्रहण नहीं करवाया गया है वहीं दूसरी ओर योग दिवस को लेकर झूठे दिखावे किए जा रहे हैं।

अगर सरकार असल में ही योग को बढ़ावा देना चाहती है तो सभी बर्खास्त पीटीआई अध्यापकों को तुरंत स्कूलों में कार्यग्रहण करवाए व प्राथमिक स्कूलों में भी पीटीआई अध्यापक का पद दिया जाए ताकि बच्चों की छोटी उम्र से ही इस ओर रूचि बनाई जा सके। जिला कोषाध्यक्ष भूप सिंह वर्मा ने कहा कि स्कूलों में शिक्षकों के लगभग 40 हजार पद रिक्त पड़े हुए हैं पर कोई भर्तियां नहीं की जा रही है। एनजीओ के माध्यम से अध्यापक भर्ती करने के प्रयास किए जा रहे हैं। पिछले छह साल से ऑनलाइन तबादले नहीं किए जा रहे हैं। स्कूलों में तीन साल से किताबें तक उपलब्ध नहीं करवाई जा रही हैं वहीं टैब बांटने के दिखावे किए जा रहे हैं। ऑनलाइन दाखिलों में जानबूझ कर अडचनें पैदा की हुई हैं ताकि सरकारी स्कूलों में दाखिले ना हो सकें। हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ इस तरह की शिक्षा व शिक्षक विरोधी नीतियों का कड़ा विरोध करता है। इस अवसर पर भूप सिंह वर्मा, सत्येंद्र कुमार, संजीव सिंगला, वेदपाल रिढ़ाल, परमात्मा प्रसाद, रोहताश आसन, महेंद्र गौतम, शमशेर कौशिक सहित अन्य अध्यापक मौजूद रहे।

सतकुंभा पर गंगा दशहरे पर हजारों ने लगाई आस्था की डुबकी

सोनीपत, (हि.स.)। सिद्धपीठ तीर्थ सतकुम्भा धाम के पीठाधीश्वर श्रीमहंत राजेश स्वरूप जी महाराज ने कहा कि गुरुवार को पूरे भारतवर्ष में गंगा दशहरा पर्व मनाया गया है इसी श्रृंखला में सिद्ध पीठ तीर्थ सतकुंभा धाम पर 20 हजार से ज्यादा श्रद्धालु गंगा दशहरे के स्नान के लिए आए भंडारा लिया और श्रद्धा के साथ स्नान किया। श्रीमहंत राजेश स्वरुप महाराज ने कहा कि हमारा तीर्थ से जुड़ा एक परिवार है श्री हजारीलाल धनखड़ जो खूबडू के रहने वाले उनका पिछले दिनों स्वर्गवास हो गया था उनके परिवार की तीर्थ के प्रति श्रद्धा स्मृति और आस्था है तो उन्होंने एक कमरे का दान किया है। स्वर्गीय हजारीलाल धनखड़ के परिवार ने भंडारे के साथ एक कमरे का आज दान किया है, उनके द्वारा सवामणी का प्रसाद लगाया गया है। त्रिवेणी लगाई गई। दिव्य संदेश में महाराज श्री ने कहा कि सर्व सिद्धि प्रदेय सतकुम्भा सर्व सिद्धियों को प्रदान करने वाला सतकुम्भा है आपकी आस्था का सतकुम्भा है और ऐसे सतकुंभा धाम पर अपने पूर्वजों के निमित अपने भगवान के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं अपना कीमती समय निकालकर यहां पर आकर के भगवान से प्रार्थना करते हैं और यह प्रभु परमात्मा सत कुंभा धाम उनकी मनोकामना को पूर्ण करता है। मां गंगा का शुभ आशीर्वाद इन भक्तों पर हो रहा है गंगा का अवतरण हुआ जो जेयष्ठ का दशहरा है सबसे बड़ा दिन है और यह मां गंगा का जन्म दिवस है। सप्त ऋषियों की तप स्थली सतकुंभा 68 तीर्थ में शामिल है। भंडारा लगा छली लगाई यह पावन सेवा है जो सभी को निरोगी काया मिले। भंडारे की सेवा इलम सिंह, सोमवीर फौजी, दीपक शर्मा ने की है। हवन किया समस्त ब्रह्मांड की सुख शान्ति के लिए पूजा पाठ की शिव की पूजा की अपने पितरों को भी जल की अंजलिया दी, याद किया। प्रबंध व्यवस्था में शिवेंदू भारद्वाज, सूरज शास्त्री, पवन शास्त्री, सोमवीर, सत्यवान बाबा, सेठपाल प्रधान, ब्रह्मपाल सेवारत रहे। आने वाले श्रद्धालुओं ने पीठाधीश्वर श्रीमहंत राजेश स्वरूप जी महाराज से आशीर्वाद लिया। पार्किंग को व्यवस्थित करने के लिए निःशुल्क पार्किंग की गई है।

एनएचएम कर्मियों ने हड़ताल कर के किया प्रदर्शन

जींद, (हि.स.)। स्वास्थ्य कर्मचारी संघ हरियाणा संबंधित भारतीय मजदूर संघ की प्रदेश कार्य समिति के आह्वान पर वीरवार को एनएचएम कर्मचारियों की लंबित मांगों को लेकर एक दिन की सांकेतिक हडताल पर रहे। इस दौरान कर्मियों ने सीएमओ कार्यालय के सामने धरना दे प्रदर्शन किया और मांगों को लेकर जमकर नारेबाजी रखी। एनएचएम कर्मियों की हडताल से स्वास्थ्य सेवाओं पर कोई फर्क नहीं पड़ा और आमदिनों की तरह ही लोगों को सभी सेवाएं उपलब्ध करवाई गई। भारतीय मजदूर संघ की तरफ से जिलाध्यक्ष सतबीर, जिलाध्यक्ष संदीप कुंडू ने बताया कि स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत एनएचएम कोरोना योद्धाओं का शोषण लंबे समय से जारी है। कई बार समझौते होने के बावजूद भी अभी तक जायज मांगों एनएचएम कर्मचारियों को पक्का करने, वेतन विंगति दूर करने, मुख्यमंत्री की सातवें वेतमान घोषणा को जारी करने, कैशलेस मेडिकल सुविधा लागू करने आदि पर सरकार उदासीन रवैया अपनाए हुए है जबकि इस समय इन्हीं कर्मचारियों की मेहनत के परिणामस्वरूप स्वास्थ्य के क्षेत्र में कई उपलब्धियां हरियाणा सरकार प्राप्त हुई हैं। प्रदेश महामंत्री जितेंद्र कुमार वत्स ने बताया कि अगर सरकार ने मांगो तो पूरा नहीं किया तो संघ बैठक कर-के अनिश्चितकालीन हड़ताल पर भी जा सकता है।

यह है मांगे - मुख्यमंत्री द्वारा की गई घोषणा के बाद भी एनएचएम कर्मचारियों को सातवें वेतन आयोग का लाभ नहीं मिला है, जो कि जल्द से जल्द दिलाया जाए। मुख्यमंत्री की घोषणा व चार वर्ष बीत जाने के बाद भी एनएचएम कर्मियों की वेतन विसंगति को दूर नहीं किया गया है, संघ मांग करता है कि जल्द से जल्द वेतन विसंगतियों को दूर किया जाए। हरियाणा सरकार द्वारा घोषित करोना प्रोत्साहन राशि पांच हजार रुपये शीघ्र दी जाए। सर्व शिक्षा अभियान की तर्ज पर अन्य कर्मचारियों को ग्रेजुएटी का लाभ दिया जाए। एनएचएम कर्मचारियों को कैशलेस मेडिकल सुविधा उपलब्ध करवाई जाए। एनएचएम में कार्यरत चिकित्सा अधिकारियों को सेवा नियमों का लाभ दिया जाए व प्रारंभिक वेतन 80 हजार रुपये किया जाए। धरने में मुख्य रूप से प्रदेश कार्यालय सचिव गौरव सहगल, प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य कुलदीप आर्य, अमित, डा. परमजीत, राकेश, रेणु, इंदू, सुनीता, संतोष, सीमा सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

पेज 1 का शेष भाग

बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान ...

संख्या, कुछ सौ से बढ़कर 70 हजार तक पहुंच गई है। ये 70 हजार स्टार्ट-अप्स लगभग 60 अलग-अलग इंडस्ट्रीज में बने हैं। इसमें भी 5 हजार से अधिक स्टार्ट अप्स, बायोटेक से जुड़े हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि बायोटेक सेक्टर सबसे अधिक मांग संचालित क्षेत्रों में से एक है। बीते वर्षों में भारत में ईज ऑफ लिविंग के लिए जो अभियान चले हैं, उन्होंने बायोटेक सेक्टर के लिए नई संभावनाएं बना दी हैं। उन्होंने कहा कि हाल में ही हमने पेट्रोल में इथेनॉल की 10 प्रतिशत ब्लेंडिंग का टारगेट हासिल किया है। भारत ने पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल ब्लेंडिंग का टारगेट भी 2030 से 5 साल कम करके 2025 कर लिया है। ये सारे प्रयास, बायोटेक के क्षेत्र में रोजगार के भी नए अवसर बनाएंगे। प्रधानमंत्री के साथ केंद्रीय मंत्री डॉ जितेंद्र सिंह, पीयूष गोयल और धर्मेंद्र प्रधान बायोटेक स्टार्टअप एक्सपो 2022 में शामिल हुए। यह प्रदर्शनी उद्यमियों, निवेशकों, उद्योग जगत के अग्रणी व्यक्तियों, वैज्ञानिकों, शोधकताओं, बायोइंक्यूबेटर्स, विनिमार्ताओं, विनियामकों, सरकारी अधिकारियों आदि को कनेक्ट करने के लिए एक प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य करेगा। प्रदर्शनी में लगभग 300 स्टालों की स्थापना की गई है जिनमें अन्य क्षेत्रों के अतिरिक्त स्वास्थ्य देखभाल, जीनोमिक्स, बायोफार्मा, कृषि, औद्योगिक बायोटेक्नोलॉजी, अपशिष्ट से मूल्य, स्वच्छ ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में बायोटेक्नोलॉजी के उपयोगों को प्रदर्शित किया गया है।

राष्ट्रपति चुनाव के लिए 18 जुलाई को मतदान, 21 को आएंगे ...

वर्तमान में जम्मू-कश्मीर केन्द्र शासित प्रदेश में विधानसभा नहीं है। विधायकों के वोट का महत्व राज्य की जनसंख्या पर आधारित होता है। इस हिसाब से कुल सांसदों के मत की कीमत 5,43,200 है और कुल विधायकों के मत की कीमत 10,86,431 है। सांसदों को मत का मूल्य 700 है। वहीं चुनाव आयोग के अनुसार प्रत्येक विधानसभा सदस्य के मत का मूल्य इस प्रकार है। आंध्र प्रदेश 159, अरुणाचल प्रदेश 8, असम 116, बिहार 173, छत्तीसगढ़ 129, गोवा 20, गुजरात 147, हरियाणा 112, हिमाचल प्रदेश 51, झारखंड 176, कर्नाटक 131, मध्य प्रदेश 131, केरल 152, महाराष्ट्र 175, मणिपुर 18, मेघालय 17, मिजोरम 8, नागालैंड 9, ओडिशा 149, पंजाब 116, राजस्थान 129, सिक्किम 7, तमिलनाडु 176, तेलंगाना 132, त्रिपुरा 26 उत्तराखंड 64, उत्तर प्रदेश 208, पश्चिम बंगाल 151, दिल्ली 58 और पुडुचेरी 16 है।

सार्वजनिक उद्यमों ने राष्ट्र के विकास में ...

भारत की विशेषता थी। उन्होंने कहा कि वर्ष 2020-21 के बजट ने प्रमुख क्षेत्रों में सार्वजनिक उद्यमों के विस्तार, विस्तार, विविधीकरण निवेश के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए हैं। इसलिए आज सार्वजनिक उद्यम निजी क्षेत्र के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं और वैश्विक प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहे हैं। हमें विकास के नए क्षेत्रों को देखने, दक्षता बढ़ाने की जरूरत है, जहां हम वेब 3, औद्योगिक क्रांति 4.0, डीप डेटा, डीप टेक्नोलॉजी से लाभ उठा सकते हैं। इस दौरान 9 से 12 जून तक देशभर में आइकोनिक सप्ताह के उत्सव के लिए केंद्रीय वित्त मंत्रालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी के साथ-साथ आत्मनिर्भर भारत के लिए सीपीएसई की भूमिका पर सम्मेलन का उद्घाटन भी किया गया। सम्मेलन में इच्छुक जिला-आकांक्षी जिलों पर विशेष ध्यान देने के साथ सीएसआर मुद्दों पर एक कार्यशाला-चर्चा श्रृंखला की सुविधा होगी। इतना ही नहीं, विभिन्न सीपीएसई के सीईओ को एमएसई से खरीद और सीपीएसई की वार्षिक ऑडिट प्रणाली जैसे मुद्दों पर एक साझा मंच के माध्यम से विचारों का आदान-प्रदान करना है। मुख्यमंत्री पटेल ने कार्यक्रम के लिए गांधीनगर का चयन करने को लेकर केंद्रीय वित्तमंत्री और केंद्र सरकार को धन्यवाद दिया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह कार्यक्रम देश के सार्वजनिक उद्यमों-सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को देश की प्रगति और विकास के लिए संयुक्त कदम उठाने के लिए प्रेरित करेगा। कार्यक्रम में केंद्र सरकार के सार्वजनिक उद्यम विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी और सात केंद्रीय सार्वजनिक उद्यम संस्थानों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

समर्थन मूल्य पर पर्याप्त फसल नहीं खरीद रहा ...

4.68 प्रतिशत कृषि बजट का हिस्सा था। इसे कम करके 2020-21 और 2021-22 में क्रमशः 4.41 प्रतिशत, 3.53 और 2022-23 में मात्र 3.14 प्रतिशत कर दिया। कांग्रेस महासचिव ने कहा कि वर्ष 2016 में मोदी सरकार ने कहा था कि विश्व की सबसे अच्छी बीमा फसल योजना ला रहे हैं जबकि उसकी सच्चाई यह है कि इस योजना में निजी कंपनियों ने 34,000 करोड़ रुपये कमाए और गुजरात सहित 06 प्रांतों ने इस योजना को बंद कर दिया। किसान सम्मान निधि के नाम पर छह हजार रुपये साल देने का स्वांग किया और पच्चीस हजार रुपये प्रति हेक्टेयर खेती की लागत बढ़ाकर किसानों को लूट लिया। यहां तक कि डीजल पर केंद्रीय एक्साइज ड्यूटी 2014 में 3.56 प्रति लीटर से बढ़ाकर 15.80 रुपये प्रति लीटर कर दिया। साथ ही पहली बार खेती पर टैक्स यानि जीएसटी लगाया गया। सुरजेवाला ने दावा किया कि हाल ही मोदी सरकार ने रबी फसल के किसानों को बहुत बड़ा धोखा दिया है। अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के चलते इस बार अंतरराष्ट्रीय बाजार में गेहूं की कीमत अच्छी थी, तो एक्सपोर्ट पर प्रतिबंध लगा दिया और समर्थन मूल्य पर गेहूं की खरीदी आधे से भी कम कर दी। पिछले वर्ष रबी मार्केटिंग सीजन में समर्थन मूल्य पर गेहूं 433.4 लाख टन खरीदा गया था, जो इस बार मई माह तक मात्र 186.5 लाख टन खरीदा गया। देश अपेक्षा कर रहा था कि गेहूं पर 250 रुपये का बोनस घोषित कर सरकार पर्याप्त मात्रा में गेहूं खरीदेगी मगर मोदी सरकार ने देश के किसानों के साथ विश्वासघात किया।

कुतुब मीनार परिसर में पूजा की अनुमति देने ...

एएसआई ने स्मारक पर नियंत्रण लिया था, तब वहां पूजा नहीं होती थी। एएसआई ने कहा था कि कानूनन संरक्षित स्मारक में पूजा का कोई प्रावधान नहीं है इसलिए याचिका खारिज की जाए। कोर्ट ने 3 अप्रैल को एएसआई को निर्देश दिया था कि वो कुतुब मीनार परिसर में मौजूद कुव्वत उल इस्लाम मस्जिद परिसर में रखी हुई भगवान गणेश की मूर्तियों को परिसर से ना हटाए। इस मामले में पहले से ही पूजा-अर्चना अधिकार को लेकर याचिका दायर करने वाले याचिकाकर्ता ने नई अर्जी में कहा है कि गणेश जी की मूर्तियों को नेशनल म्युचुअल अथॉरिटी के दिये सुझाव के मुताबिक नेशनल म्यूजियम या किसी दूसरी जगह विस्थापित नहीं किया जाना चाहिए। इसके बजाए उन्हें परिसर में ही पूरे सम्मान के साथ उचित स्थान पर रखा जाए। वकील विष्णु जैन के जरिये दायर मुख्य याचिका में कहा गया है कि हिंदुओं और जैनों के 27 मंदिरों को तोड़कर ये मस्जिद बनाई गई है। जैन तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव और भगवान विष्णु को इस मामले में याचिकाकर्ता बनाया गया था। बता दें कि 29 नवंबर 2021 को सिविल जज नेहा शर्मा ने याचिका खारिज कर दिया था। सिविल जज के याचिका खारिज करने के आदेश को डिस्ट्रिक्ट जज की कोर्ट में चुनौती दी गई है। याचिका में कहा गया है कि मुगल बादशाह कुतुबद्दीन ऐबक ने 27 हिंदू और जैन मंदिरों की जगह कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद बना दिया। ऐबक मंदिरों को पूरे तरीके से नष्ट नहीं कर सका और मंदिरों के मलबे से ही मस्जिद का निर्माण किया गया। याचिका में कहा गया था कि कुतुब मीनार परिसर के दीवालों, खंभों और छतों पर हिन्दू औज जैन देवी-देवताओं के चित्र बने हुए हैं। इन पर भगवान गणेश, विष्णु, यक्ष, यक्षिणी, द्वारपाल, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर, नटराज के चित्रों के अलावा मंगल कलश, शंख, गदा, कमल, श्रीयंत्र, मंदिरों के घंटे इत्यादि के चिह्न मौजूद हैं। ये सभी बताते हैं कि कुतुब मीनार परिसर हिंदू और जैन मंदिर थे। याचिका में कुतुब मीनार को ध्रुव स्तंभ बताया गया था। याचिका में आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया(एएसआई) के उस संक्षिप्त इतिहास का जिक्र किया गया था जिसमें कहा गया था कि 27 मंदिरों को गिराकर उनके ही मलबे से कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण किया गया। याचिका में मांग की गई थी कि इन 27 मंदिरों को पुनर्स्थापित करने का आदेश दिया जाए और कुतुब मीनार परिसर में हिंदू रीति-रिवाज से पूजा करने की इजाजत दी जाए।

चौक का नाम महाराणा प्रताप रखने पर आभार जताया

यमुनानगर, (हि.स.)। जगाधरी-बिलासपुर रोड पर जिला जेल के पास महाराणा प्रताप के नाम से चौक बनाने का प्रस्ताव पास करने पर गुरुवार को सेवा एक प्रयास ट्रस्ट व विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने मेयर मदन चौहान का आभार जताया व धन्यवाद किया। मेयर मदन चौहान ने भी उन्हें भविष्य में हर प्रकार से सहयोग का आश्वासन दिया। इस दौरान सहयोगी संस्थाओं में समस्त राजपूत सभा, बजरंग दल, गो रक्षा दल हरियाणा, गारमेंट एसोसिएशन, फुट वियर एसोसिएशन जगाधरी आदि का सहयोग रहा। पार्षद संजय राणा ने बताया कि नगर निगम हाउस की बैठक में बिलासपुर रोड पर जिला जेल के पास वाले चौक का नाम महाराणा प्रताप चौक रखने की प्रस्ताव रखा गया था। जिसे मेयर मदन चौहान ने सर्वसम्मति से पास करवाया था। इसलिए समस्त राजपूत सभा व विभिन्न संस्थाओं ने मेयर का धन्यवाद व आभार जताया है। इस मौके पर मेयर को संस्थाओं की और से स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

सोलर वाटर पंपिंग सिस्टम का नहीं होने दिया जाएगा दुरूपयोगः डीसी कृष्ण कुमार

पलवल, 9 जून (हि.स.)। सोलर वाटर पंपिग सिस्टम बेचा या उसका गलत उपयोग किया गया तो लाभपात्र को अक्षय ऊर्जा विभाग से मिला अनुदान वापस ले लिया जाएगा। विभाग जिला के खेतों में लगाए गए सोलर वाटर पंपों के इस्तेमाल पर निगरानी रखे हुए है। उपायुक्त कृष्ण कुमार ने गुरुवार को बताया कि नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग सोलर वाटर पंपिग सिस्टम स्थापित करने पर 75 प्रतिशत अनुदान दे रहा है। किसानों को ज्यादा वित्तीय खर्च से बचाने व डीजल पंपों से छुटकारा दिलवाने के लिए यह सब्सिडी दी जा रही है। उन्होंने बताया कि सोलर वाटर पंपिग सिस्टम पर वर्ष 2020-21 और 21-22 के दौरान जिला के किसानों को 75 प्रतिशत अनुदान दिया गया। विभाग के पास इस प्रकार की शिकायतें आ रही हैं कि कुछ लोगों ने अपने सोलर वाटर पंपिग सिस्टमों को किसी दूसरे आदमी को बेच दिया है। कुछ सिस्टम आवेदन में दिखाए गए निर्धारित स्थान के अलावा अन्य स्थान पर लगा दिए हैं। उपायुक्त ने बताया कि जब सोलर वाटर पंपिग सिस्टम लगवाने की स्वीकृति किसानों को दी गई तो उस समय आवेदक ने लिखित में दिया था कि वे अपने सोलर वाटर पंपिग सिस्टम को ना तो बेचेंगें तथा ना ही किसी अन्य स्थान पर लगवाएंगें। यदि वे ऐसा करते हैं तो सरकार उनसे 75 प्रतिशत अनुदान की राशि वापिस ले सकती है।

किसानों ने की दर्ज केस को रद्द करने की मांग

यमुनानगर, (हि.स.)। किसान के बेटे के खिलाफ हुई पुलिस में शिकायत को रद्द कराने की मांग को लेकर गुरुवार को संयुक्त किसान मोर्चा के किसान, जिला बार जगाधरी के सदस्य गण और अन्य राजनीतिक संगठनों ने इकट्ठा होकर जिला पुलिस अधीक्षक को दर्ज हुए केस को खत्म करने की मांग की। इस मौके पर संगठनों के पदाधिकारियों का कहना था कि 2 जून को सेक्टर 17 जगाधरी में विवश पुत्र सतीश को गिरफ्तार कर अदालत में पेश किया गया और वह अभी भी न्यायिक हिरासत में है। उन्होंने कहा कि यह मुकदमा गलतफहमी की वजह से दर्ज हुआ है। विवश ने शिकायतकर्ता को एक मैसेज कर पैसे की मांग की थी। जिसके आधार पर यह मुकदमा दर्ज हो गया था। विवश के परिजन का कहना है कि शिकायतकर्ता और विवश अच्छे दोस्त है। दोस्तों के बीच में मजाक के रूप में ऐसा हो गया था। उसकी पैसे मांगने की कोई मंशा नहीं थी। इन सभी ने 3 जून को पुलिस के पास सारी बात बता दी थी। पुलिस को भी बताया कि यह सारा मुकदमा गलतफहमी के चलते दर्ज हुआ है, लेकिन पुलिस ने आनन-फानन में विवश को हिरासत में ले लिया और शिकायतकर्ता को भी धमकाया कि उस मुकदमें

को वापस लेने की बात की या लिख कर दिया तो तुम्हारे खिलाफ भी मुकदमा दर्ज कर दिया जाएगा। इसके बाद 4 जून को विवश के परिवार वाले व रिश्तेदारों ने जिला पुलिस अधीक्षक से इस बारे बातचीत कर न्याय की मांग की। परंतु उसके बाद पुलिस ने विवश को बिना जांच किए ही अदालत में 4 जून को पेश कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। किसान संयुक्त मोर्चा व जिला के अन्य संगठनों का कहना है कि विवश को इस तरह से गिरफ्तार किया जाना और शिकायतकर्ता के केस वापस लेने की प्रार्थना के बावजूद भी विवश को अदालत में पेश करना एक साजिश है। उन्होंने कहा कि इसलिए इस मुकदमें की किसी उच्च अधिकारी से जांच कराई जाए।

DELHI CRIME 10 june 2022:Layout 1 6/9/2022 7:29 PM Page 4

श्रीलंकाई प्रधानमंत्री बोले- भारत को छोड़कर कोई नहीं कर रहा हमारी मदद

कोलंबो, (हि.स.)। आर्थिक संकट से परेशान श्रीलंका की मुसीबत कम होने के बजाय लगातार बढ़ती जा रही हैं। यहां तक अब कोई देश, सिवाय पड़ोसी देश भारत के उसकी मदद करने के लिए आगे नहीं आ रहा है। इस बीच श्रीलंका के प्रधानमंत्री रानिल विक्रमसिंघे ने बुधवार को कहा कि भारत को छोड़कर कोई भी देश संकटग्रस्त देश को ईंधन के लिए पैसे उपलब्ध नहीं करा रहा है। संसद में विक्रमसिंघे ने कहा कि उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) प्रमुख क्रिस्टालिना जॉर्जीवा से "जल्द से जल्द" कोलंबो में एक टीम भेजने का आग्रह किया है, ताकि एक कर्मचारी-स्तर के समझौते को अंतिम रूप दिया जा सके। श्रीलंका अगले 6 महीने गुजारा करने के लिए आईएमएफ से 6 बिलियन डॉलर मांग रहा है। राज्य द्वारा संचालित सीलोन इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड (सीईबी) के इंजीनियरों द्वारा नियोजित हड़ताल के संदर्भ में विक्रमसिंघे ने कहा कि कृपया ब्लैकआउट का कारण न बनें, आप चाहे तो तख्तियां लेकर हड़ताल कर सकते हैं। उन्होंने इंजीनियरों से भावुक अपील करते हुए कहा कि अगर आप ऐसा करते हैं, तो मुझसे भारत से मदद मांगने के लिए मत क-हिए। कोई भी देश हमें ईंधन और कोयले के लिए पैसा नहीं दे रहा है। भारत ही दे रहा है। हमारी भारतीय क्रेडिट लाइन अब अपने अंत के करीब है। हम इसे बढ़ाने की बात कर रहे हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, प्रधानमंत्री विक्रमसिंघे ने आगे कहा कि भारत श्रीलंका को लगातार सहायता प्रदान नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि भारत में कुछ लोग पूछ रहे हैं कि वे हमें मदद क्यों दें। वे हमारी मदद करने से पहले हमसे कह रहे हैं कि हम पहले अपनी खुद की मदद करें। श्रीलंका में बिजली क्षेत्र के एक संघ ने बुधवार को कहा कि वह नए सरकारी कानून के विरोध में आधी रात से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर जाएगा, जिससे संभावित रूप से बिजली गुल हो सकती है। इंजीनियर्स यूनियन ने कहा कि श्रीलंका की प्रमुख बिजली कंपनी सीलोन इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड (सीईबी) के करीब 1,100 इंजीनियरों में से 900 गुरुवार को ड्यूटी पर नहीं आएंगे और जो पहले से ही बिजली संयंत्रों, पारेषण और वितरण सुविधाओं पर काम कर रहे हैं, वे आधी रात को रवाना हो जाएंगे। इस बीच, श्रीलंका ने यूरिया की खरीद के लिए भारत से 5.5 करोड़ डॉलर का कर्ज मांगा है। भारत ने भोजन, दवा और ईंधन के लिए ऋण और खरीदारों के ऋण के रूप में 3.5 बिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता प्रदान की है। उल्लेखनीय है कि श्रीलंका भोजन, ईंधन, दवाओं, रसोई गैस से लेकर टॉयलेट पेपर और माचिस की तीलियों तक जरूरी चीजों की भारी कमी से जूझ रहा है। पिछले कुछ महीनों से सीमित स्टॉक खरीदने के लिए लोगों को लंबी लाइन में लगना पड़ रहा है।

रूस यूक्रेन युद्ध की वजह से आर्थिक मंदी की आशंका बढ़ी, कई देशों में गहराएगा संकट

लंदन (ईएमएस)। विश्व बैंक ने कहा है कि कोरोना माहमारी के प्रभावों से उबर रही वैश्विक अर्थव्यवस्था पर रूस यूक्रेन युद्ध की दोहरी मार पड़ी है। इसकारण कई देशों में आर्थिक मंदी की आशंका गहरा गई है। रूस यूक्रेन युद्ध के प्रभावों से यूरोप ही नहीं पूर्वी एशिया भी प्रभावित होगा। विश्व बैंक ने चेताया है, कि यूरोप और पूर्वी एशिया के कई देश आर्थिक मंदी की चपेट में आ सकते हैं। विश्व बैंक के अध्यक्ष डेविस मैल्पस ने कहा कि पूरी दुनिया में ईंधन और खाद्य की कीमतों में बढ़ोतरी दिख रही है। मुद्रा स्फीतिजनित मंदी की संभावना और भी बढ़ी है। मुद्रास्फीतिजनित मंदी यानी स्टैगफ्लेशन उस आर्थिक हालात को कहते हैं, जब आर्थिक विकास दर स्थिर रहती है, लेकिन महंगाई और बेरोजगारी दर में तेजी बढ़ोतरी होती है। इससे निपटना किसी भी मुल्क के लिए बेहद मुश्किल होता है। मैल्पस ने कहा कि यूक्रेन में युद्ध, चीन में लाकडाउन और खाद्य आपूर्ति श्रृंखला में आ रही बाधा से मुद्रास्फीतिजनित मंदी का जोखिम बढ़ रहा है। इसके बाद कई देशों के लिए आर्थिक मंदी से बचना मुश्किल होगा। विश्व बैंक के प्रमुख का कहना है कि दुनिया के कई देशों में निवेश की कमी भी देखी जा रही है जिसके कारण विकास दर भी प्रभावित होगी। मौजूदा वक्त में कई देशों में महंगाई दर भी कई दशकों के उच्चतम स्तर पर है। मैल्पस ने कहा है कि वैश्विक खाद्य आपूर्ति के प्रभावित होने की आशंका है।

इसके बाद महंगाई के लंबे समय तक लोगों को प्रभावित कर सकती है। विश्व बैंक प्रमुख ने कहा कि यदि दुनिया वैश्विक आर्थिक मंदी की चपेट में आने से बचती है, तब मुद्रास्फीतिजनित मंदी की मार से बचना मुश्किल है। यह कई साल तक कायम रह सकती है। यह स्थिति तब तक कायम रह सकती है जब तक आपूर्ति में आ रही बाधाओं का निस्तारण नहीं कर लिया जाता। उल्लेखनीय है कि विश्व बैंक ने 2021 से 2024 के बीच वैश्विक आर्थिक विकास की दर को 2.7 फीसद पर बने रहने का अनुमान जताया है। यह 1976 से 1979 के बीच आई मंदी से भी खराब अनुमान है। दरअसल महंगाई पर काबू पाने के लिए केंद्रीय बैंक अपनी नीतिगत दरों में बदलाव करते हैं जिसका कई बार प्रतिकूल असर भी पड़ने लगता है। सन 1970 में महंगाई पर काबू पाने के लिए ब्याज दरों में इतनी अधिक बढ़ोतरी कर दी गई थी कि साल 1982 तक जाते जाते वैश्विक आर्थिक मंदी के हालात पैदा हो गए थे।

पाक के कराची के कोरंगी में श्री मरी माता मंदिर में मूर्तियों पर हमला, लूटपाट

इस्लामाबाद(ईएमएस)। पाकिस्तान में फिर कराची के कोरंगी इलाके में श्री मरी माता मंदिर में मूर्तियों पर हमला हुआ है। श्री मरी माता मंदिर कोरंगी पुलिस स्टेशन से कुछ ही दूरी पर 'जे' इलाके में है। मंदिर पर हमले की सूचना मिलने पर पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और मंदिर का निरीक्षण कर घटना की जानकारी ली। घटना के बाद हिंदू समुदाय में डर और घबराहट का माहौल है, खासकर कोरंगी इलाके में जहां किसी तरह की अप्रिय घटना को रोकने के लिए पुलिस को तैनात किया गया है। इलाके के संजीव ने बताया कि मोटरसाइकिल पर आए 6 से 8 लोगों ने मंदिर पर हमला किया। मामला दर्ज करने के लिए जब पुलिस से संपर्क किया तो उन्होंने कहा, हम नहीं जानते कि यह हमला किसने और क्यों किया है। जानकारी के अनुसार कोरंगी में भीड़ ने हनुमान मंदिर पर हमला किया था। हमलावरों ने न सिर्फ देवी-देवताओं की मूर्तियों के साथ तोड़फोड़ की बल्कि लूटपाट भी की। आरोप है कि अपराधियों को पकड़ने के लिए कोई भी पुलिसकर्मी मौके पर नहीं पहुंचा। कोरंगी एसएचओ फारूक संजरानी के अनुसार, 'पांच से छह अज्ञात संदिग्ध लोग मंदिर में घुसे और तोड़फोड़ करके फरार हो गए।' उन्होंने कहा अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है। पाकिस्तान में पहले भी हिंदू मंदिरों पर भीड़ हमला कर चुकी है। इससे पहले अज्ञात लोगों ने लरकाना में मंदिर में तोड़फोड़ की थी। अक्टूबर में कोटरी में सिंधु नदी के किनारे स्थिति ऐतिहासिक मंदिर पर अज्ञात लोगों ने कथित तौर पर हमला कर दिया था। पिछले कुछ दिनों से पाकिस्तान पूर्व बीजेपी नेता नूपुर शर्मा के बयानों पर भारत को ज्ञान दे रहा है, लेकिन उसके अपने मुल्क में हिंदू और सिख जैसे अल्पसंख्यकों और उनके पूजनस्थलों की स्थिति बेहद दयनीय है।

फैमिली बिजनेस में गड़बड़ी के आरोप, डोनाल्ड ट्रंप बेटे-बेटी के साथ देंगे गवाही

वॉशिंगटन(ईएमएस)। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप फैमिली बिजनेस में धोखाधड़ी मामले में उनके बड़े बेटे डोनाल्ड ट्रंप जूनियर और बेटी इवांका न्यूयॉर्क की सिविल जांच में 15 जुलाई से गवाही देने वाले हैं। कोर्ट की फाइलिंग में कहा गया है कि न्यूयॉर्क राज्य के अटॉर्नी जनरल लेटिटिया जेम्स और जांचकताओं की टीम को अगले सप्ताह तक पूछताछ समाप्त करनी होगी। निचली अदालत में दायर दस्तावेज के अनुसार, ट्रंप, डोनाल्ड ट्रंप जूनियर और इवांका के पास न्यूयॉर्क राज्य की सर्वोच्च अदालत में स्टे के लिए अपील करने के लिए 13 जून तक का समय है। जेम्स की कर चोरी की जांच में सबूत देने से बचने के लिए तीनों अदालत में लड़ रहे हैं, जो उनका तर्क है कि ये राजनीति से प्रेरित है। न्यूयॉर्क राज्य की जज आर्थर एंगोरोन ने फरवरी में फैसला सुनाया कि तीनों को गवाही देनी चाहिए। जज ने ट्रंप की एक याचिका को खारिज करते हुए ये फैसला दिया। कोर्ट को लगता है कि ट्रंप ऑर्गनाइजेशन ने बैंक लोन के लिए आवेदन करते समय अचल संपत्तियों के मूल्य को धोखाधड़ी से बढ़ा दिया था। टैक्स का कम निर्धारण करने के लिए ऐसा किया गया। हालांकि, ट्रंप ने ऐसी बातों को खारिज किया है। पिछले महीने पूर्व राष्ट्रपति ने नागरिक जांच के हिस्से के रूप में ऑडिटिंग और टैक्स के दस्तावेज मुहैया करने से इनकार कर दिया था। इसके लिए उन्हें कोर्ट में 110,000 डॉलर का जुमार्ना अदा करना पड़ा था। अगर ट्रंप और उनके बेटे-बेटी के खिलाफ वित्तीय कदाचार का सबूत मिलता है तो, ट्रंप संगठन पर मुकदमा किया जा सकता है। हालांकि, इस केस में आपराधिक आरोप दर्ज नहीं हो सकते।

बायोलॉजी टीचर ने आईएस की 100 से ज्यादा महिला आतंकियों को दी थी हथियार चलाने की ट्रेनिंग

वॉशिंगटन (ईएमएस)। अमेरिका के मध्यपश्चिमी राज्य कैंसास में एक महिला को आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक और अल-शाम को मदद पहुंचाने के लिए दोषी ठहराया गया है। ट्रायल के दौरान महिला ने स्वीकार किया उसने एक अमेरिकी कॉलेज पर हमले की साजिश को अंजाम दिया। इसके लिए उसने सीरिया में एक महिला दल के 100 से अधिक लड़ाकों को ट्रेनिंग भी दी। 42 साल की एलिसन फ्लूक-एकरेन को 100 से ज्यादा महिला आर्तकियों को ट्रेनिंग देने का दोषी ठहराया गया है। पुलिस की चार्जशीट में उसे एक मां, शिक्षका और आईएसआईएस बटालियन का नेता बताया गया है। रिकॉर्ड के मुताबिक, वह आखिरी बार अमेरिका में 8 जनवरी 2011 को देखी गई थी। इससे पहले उसने इजिप्ट और लीबिया की यात्रा की थी। फिर 2014 में सीरिया का रुख किया था। सीरिया में छह सरकारी गवाहों में एक गवाह के अनुसार, एकरेन ने अमेरिकी कॉलेज पर हमले की योजना पेश की थी। इसमें कॉलेज कैंपस में विस्फोटक से धमाका करना था। हालांकि, शुरूआती चार्जशीट में कहा गया है। एकरेन ने कहा कि ये योजना आईएसआईएस के तत्कालीन नेता अबू बक्र अल-बगदादी को पेश की गई थी लेकिन आखिरकार इसे रोक दिया गया था।

आतंकवादी संगठन के समर्थन में एकरेन ने कहा कि उसने महिलाओं और कुछ युवतियों को एके-47 असॉल्ट राइफल, ग्रेनेड और आत्मघाती बेल्ट के इस्तेमाल के लिए प्रशिक्षित किया था। उसने कुछ समय के लिए खतीबा नुसायबाह की भी कमान संभाली, जो इस्लामिक स्टेट के मिशन को बनाए रखने के लिए महिला लड़ाकों का समूह है। रिपोर्ट के मुताबिक फ्लूक-एकरेन ने कैंसास यूनिवर्सिटी में जीव विज्ञान की पढ़ाई की और इंडियाना के एक कॉलेज में भी दाखिला लिया। सोमवार को अदालत में उसने कहा कि उसके समूह ने जानबूझकर युवा लड़कियों को हथियारों का प्रशिक्षण नहीं दिया था लेकिन वे भीड़ का हिस्सा हो सकते हैं। समूह को इसका फायदा मिल सकता था। इससे पहले असिस्टेंट यूएस अटॉर्नी राज पारेख ने अदालत में कहा कि कुछ युवा लड़कियों ने जूरी के सामने गवाही दी थी कि उन्होंने फ्लूक-एकरेन से हथियार चलाने की ट्रेनिंग ली थी।

ड्रग्स ट्रैफिकिंग व हत्या के आरोप में ईरान में एक दिन में 12 कैदियों को दी फांसी

तेहरान(ईएमएस)। ईरान में एक ही दिन में 12 कैदियों को फांसी दी गई। जिन 12 कैदियों को फांसी दी गई है, उनमें 11 पुरुष और 1 महिला कैदी है। ये सभी बलूचिस्तान के रहने वाले थे और सुन्नी समुदाय से ताल्लुक रखते थे। इन सभी पर ड्रग्स की तस्करी या फिर हत्या करने का आरोप है। ईरान में लगातार दी जा रही फांसी से मानवाधिकार संगठनों की चिंता बढ़ी है। सभी को सिस्तान-बलूचिस्तान प्रांत की मुख्य जेल जाहेदान में फांसी दी गई। यह प्रांत पाकिस्तान व अफगानिस्तान की सीमा से सटा है। नार्वे के ईरान ह्यूमन राइट्स ने यह जानकारी दी है। इन 12 लोगों में से 6 को ड्रग्स से जुड़े आरोपों में फांसी की सजा दी गई है। अन्य 6 लोगों को हत्या करने के आरोप में फांसी दी गई है। एक साथ 12 अपराधियों को सजा-ए-मौत देने के लिए ईरान सरकार की तीखी आलोचना हो रही है। सरकार पर आरोप है कि पिछले कुछ सालों में बड़ी संख्या में अल्पसंख्यक सुन्नी समुदाय के लोगों को फांसी की सजा दी जा रही है। ईरान में ज्यादातर लोग शिया धर्म को मानने वाले हैं। ईरान ह्यूमन राइट्स के कार्यकताओं का कहना है कि ईरान में जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया जा रहा है। इसमें खासतौर पर कुर्द, बलूच और अरब शामिल हैं। संगठन के मुताबिक, साल 2021 में ईरान में दी गई कुल फांसी में 21 फीसदी लोग बलूच लोग थे, जबकि ईरान की कुल पॉपुलेशन में सिर्फ 2-6 प्रतिशत लोग ही बलूच हैं। एमनेस्टी इंटरनेशनल की रिपोर्ट के मुताबिक, मौत की सजा देने वाले देशों में ईरान सबसे ऊपर है। साल 2021 में 314 लोगों को मौत की सजा दी गई। यह साल 2020 की तुलना में 25 फीसदी ज्यादा है। 2020 में 246 लोगों को मौत की सजा दी गई थी।

आज का इतिहास 10 जून

1868 सर्बिया के युवराज माइकिल की हत्या हुई.
1937 कनाडा के प्रधानमंत्री राबर्ट गोर्डन का निधन हुआ.
1944 फ्रांसीसी प्रतिरोधी आंदोलन के विरोध में नाजी सैनिकों ने थ्रेडोर सुर ग्लेन फ्रांस के सभी लोगों की हत्या कर दी.
1946 इटली में गणराज्य बना और वहां के शासक अब्रटों को गद्दी छोड़नी पड़ी.
1975 भारत(नागपुर)में प्रथम हिन्दी विश्व सम्मेलन हुआ.
1996 ब्रिटेन और आयरलैंड के बीच शांतिवार्ता शुरू हुई,लेकिन उसमें आयरिश रिपब्लिकन आर्मी को नही शामिल किया गया.
1999 लेफ्टिनेंट सौरभ कालिया समेत पांच अन्य सैनिकों के क्षत-विक्षत शव पाकिस्तानी सैनिकों ने भारतीय सेना को सौंपे. बटालिक टाप पर भारतीय सेना का कब्जा.
2000 संचार मंत्री रामविलास पासवान द्वारा संचार कर्मियों को मुफ्त टेलीफोन देने के फैसलों को प्रधानमंत्री की मंजूरी.
2001 भारत ने जिम्बाब्वे को क्रिकेट टेस्ट मैच में हराकर 15 वर्ष बाद विदेश में पहली जीत हासिल की.
2007 पूर्व राज्यसभा सदस्य राजेन्द्र सिंह का जबलपुर में निधन.
2007 इंग्लैंड में 8वें आइफा पुरस्कारों में रंग दे बसंती ने सर्वश्रेष्ठ फिल्म के अलावा निर्देशन, पटकथा, संगीत व अन्य पुरस्कार जीते.

मछली पकड़ने संबंधी करार स्थगित करने के लिए जापान ने की रूस की आलोचना

टोक्यो (ईएमएस)। जापान ने विवादित द्वीपों के निकट समुद्र में जापानी नौकाओं को मछली पकड़ने की इजाजत देने वाले समझौते को स्थगित करने संबंधी रूस की घोषणा की बुधवार को आलोचना की। मछली पकड़ने का करार 1998 से चल रहा है, जिससे जापान की मछली पकड़ने वाली नौकाओं को रूस के कब्जे वाले कुरील द्वीपसमूह के आसपास संचालन की अनुमति मिलती है, जापान भी इस इलाके पर दावा करता है और उसे उत्तरी क्षेत्र बताता है। मछली पकड़ने की इजाजत के बदले जापान भुगतान और अन्य शर्तों का पालन करता है जिन्हें लेकर दोनों देशों के बीच हर साल समझौता होता है। इस समझौते का निलंबन स्पष्ट रूप से यूक्रेन में हमले के विरोध में जापान द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के जवाब में किया गया है। इससे इस क्षेत्र में जापानी नौकाओं की सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। समझौते से पहले रूसी अधिकारी नौकाओं को जब्त कर लेते थे या उन पर गोलियां दागते थे। मुख्य कैबिनेट सचिव हिरोकाजु मात्सुनो ने कहा कि यह खेदजनक है कि रूस ने इस तरह से सहयोग को निलंबित करने की एकतरफा घोषणा कर दी। उन्होंने प्रशांत क्षेत्र में सबसे बड़े रूसी द्वीप सखालिन पर असंबंधित विकास परियोजनाओं को वित्त पोषित करने में जापान की विफलता को दोष देने के लिए रूस की आलोचना की। मात्सुनो ने कहा जापान समझौते के तहत जापानी नौकाओं का सुरक्षित संचालन सुनिश्चित करने के लिए बातचीत करेगा।

इस्लाम और कुरान के अपमान में तालिबान ने मॉडल समेत 4 लोगों को हिरासत में लिया

इस्लामाबाद(ईएमएस)। तालिबान ने इस्लाम और कुरान के अपमान के आरोप में अफगानिस्तान के एक मशहूर फैशन मॉडल अजमल हकीकी और उनके तीन साथियों को हिरासत में ले लिया। तालिबान के खुफिया महानिदेशालय ने ट्विटर पर वीडियो पोस्ट किया जिसमें फैशन मॉडल अजमल हकीकी के हाथों में हथकड़ी दिखाई दे रही है। विवादास्पद वीडियो में हकीकी के सहयोगी गुलाम सखी कुरान की अरबी आयतों को हास्यपूर्ण आवाज के साथ बोलते हैं, जिस पर हकीकी को हंसते हुए देखा जा सकता है। सखी समेत तीन अन्य साथियों के साथ मौजूद हकीकी ने कहा, मैं अफगानिस्तान के लोगों, आदरणीय धार्मिक विद्वानों और इस्लामी अमीरात से माफी मांगता हूं। सखी हिरासत में लिए जाने से पहले भी दो बार माफी मांग चुके थे। चीनी राजदूत ने अफगान उप विदेश मंत्री स्टानेकजई से मुलाकात की। उन्होंने कहा कि चीन सरकार अब अफगानिस्तान में परियोजनाओं को शुरू करने और सहयोग को बढ़ाने के लिए तैयार है। रिपोर्ट के मुताबिक, तालिबानी प्रवक्ता की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि चीनी राजदूत के साथ बैठक अफगानिस्तान-चीन के बीच ऐतिहासिक संबंधों, द्विपक्षीय सहयोग और अफगानिस्तान में पूरे नहीं हुए प्रॉजेक्ट को फिर से शुरू होने पर केंद्रित थी। तालिबानी मंत्री ने चीन से अफगानिस्तान के नूरिस्तानी प्रांत में लगी आग पर काबू पाने में मदद के लिए अनुरोध किया। चीन ने कहा कि वह तत्काल अपनी सरकार से इसका अनुरोध करेगा।

यूक्रेन के एक सुपरबाजार में रुसी हमले के बाद फैले मलबे को हटाते हुए स्थानीय रहवासी। (फोटो-ईएमएस)

DELHI CRIME 10 june 2022:Layout 1 6/9/2022 7:29 PM Page 5

रूस ने भारत की दो तेल वितरक कंपनियों को सस्ता तेल देने से किया इनकार!

- रोसनेफ्ट ने कहा, भारतीय कंपनियों को देने के लिए उसके पास अतिरिक्त तेल नहीं बचा

नई दिल्ली (ईएमएस)। रूस में कच्चे तेल की सबसे बड़ी उत्पादक कंपनी रोसनेफ्ट ने भारत की दो तेल वितरक कंपनियों के साथ क्रूड ऑयल की खरीद के सौदा समझौते पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया है। बताया जा रहा है कि रूस की सबसे बड़ी तेल उत्पादक कंपनी रोसनेफ्ट ने भारत की कंपनियों के साथ समझौता करने से पहले ही कुछ अन्य देशों के साथ तेल आपूर्ति का सौदा कर चुका है। इस सौदे के बाद रोसनेफ्ट ने कहा है कि भारतीय कंपनियों को देने के लिए उसके पास अतिरिक्त तेल नहीं बचा है। बता दें कि बीते 24 फरवरी को राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा यूक्रेन पर सैन्य कार्रवाई शुरू करने के बाद पश्चिमी देशों ने रूस पर कई तरह के प्रतिबंध लगा दिए हैं। यहां तक कि कई यूरोपीय देशों ने रूस से कच्चे तेल और गैस की खरीद करना भी बंद कर दिया है। यूक्रेन पर सैन्य कार्रवाई और पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंध के बाद से ही भारत की तेल वितरक कंपनियां रूस से सस्ता तेल खरीदने की फिराक में जुट गई थीं। अब जबकि रूस की तेल उत्पादक कंपनी रोसनेफ्ट ने भारत को कच्चा तेल देने से इनकार कर दिया है, तो आने वाले दिनों में भारत की तेल वितरक कंपनियों को हाजिर बाजार से महंगे दामों पर तेल की खरीद करनी पड़ सकती है। मीडिया की रिपोर्ट्स के अनुसार यूक्रेन के साथ युद्ध छिड़ने के बाद से भारत की तीन तेल वितरक कंपनियां इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड (आईओसीएल), भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीपीसीएल) और हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉरपोरेशन लिमिटेड (एचपीसीएल) रूस की रोसनेफ्ट कंपनी से 6 महीने के स्टॉक के लिए सस्ता तेल खरीदने के लिए सौदा करने में जुटी थीं। रिपोर्ट्स की मानें तो रूस की तेल उत्पादक कंपनी रोसनेफ्ट केवल इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन लिमिटेड के साथ ही तेल बिक्री के सौदे पर हस्ताक्षर करने पर राजी हुई है। बाकी की दो तेल कंपनियां भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम को तेल देने से साफ इनकार कर दिया है। रिपोर्ट की मानें तो रूस की रोसनेफ्ट ने भारत की इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन के साथ कच्चे तेल की बिक्री के लिए जो समझौता किया है उसके अनुसार, रोसनेफ्ट शुरू में इंडियन ऑयल को 60 लाख बैरल कच्चा तेल देगी और जरूरत पड़ने पर उसने इंडियन ऑयल को 30 लाख बैरल अतिरिक्त तेल देने का सौदा किया है। इसके साथ ही, रोसनेफ्ट ने बाकी की दो कंपनियों भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम के प्रस्ताव को ठुकरा दिया है. इस सौदे से जुड़े सूत्र बताते हैं कि रोसनेफ्ट ने हिंदुस्तान पेट्रोलियम और भारत पेट्रोलियम के साथ कच्चे तेल की आपूर्ति करने का कोई वादा नहीं किया है।

वित्तवर्ष 2025 तक दोगुनी बढ़ सकती है डाटा सेंटर की क्षमता

मुंबई (ईएमएस)। वित्तवर्ष 2025 तक डाटा सेंटर की क्षमता बढ़कर दोगुना होने का अनुमान है। यह अभी 870 मेगावाट है जो बढ़कर 1,700 से 1,800 मेगावाट हो सकता है। साथ ही इसमें तब तक 40,000 करोड़ रुपए के निवेश का अनुमान है। एक रिपोर्ट के अनुसार बढ़ते डिजिटाइजेशन और स्थानीयकरण के साथ इस साल के आखिर तक 5जी की सेवाओं के शुरू होने डाटा की मांग तेजी से बढ़ेगी। क्रिसिल की रिपोर्ट में कहा गया है कि डाटा केंद्रों की मांग और क्लाउड स्टोरेज में पिछले कुछ समय से तेजी आ रही है। कॉरपोरेट एडवांस टेक्नोलॉजी का और डिजिटल इंफ्रा पर फोकस कर रहा है। दूसरी ओर स्मार्ट उपकरण का भी लोग तेजी से उपयोग कर रहे हैं। क्रिसिल की रिपोर्ट के अनुसार, 2021 में वायरलेस मोबाइल डाटा ट्रैफिक 31 फीसदी बढ़कर 253 एक्साबाइट (1 एक्साबाइट में एक अरब गीगाबाइट) हो गया था क्योंकि लोगों ने कोरोना की वजह से कार्यालयों के बंद होने से बड़ी संख्या में घर से काम किया। इससे डाटा की मांग में तेजी आई। रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि 5जी सेवा के शुरू होने से डाटा की मांग में और तेजी आएगी। साथ ही सरकार भी तमाम डिजिटल पहल पर फोकस कर रही है। इसने कहा कि देश में डाटा सेंटर आकर्षक इंफ्रा असेट क्लास के रूप में उभर रहा है। रिपोर्ट का अनुमान है कि डाटा की मांग में मुंबई अव्वल रहेगा जो पहले से ही वर्तमान क्षमता का करीबन आधा हिस्सा का उपयोग कर रहा है। इसके अलावा हैदराबाद, चेन्नई, पुणे में आगे चलकर 400 मेगावाट की मांग आ सकती है।

ट्विटर बिना फेरबदल करोड़ों दैनिक ट्वीट संबंधी आंकड़े मस्क से साझा करेगा

सैन फ्रांसिस्को (ईएमएस)। ट्विटर ने सोशल मीडिया मंच के अधिग्रहण को आगे बढ़ाने की एक कोशिश के तहत अरबपति एलन मस्क को बिना फेरबदल किए करोड़ों दैनिक ट्वीट संबंधी आंकड़े उपलब्ध कराने की योजना बनाई है। मीडिया में आई कई खबरों में इसकी जानकारी दी गई। टेस्ला के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) एलन मस्क ने 21 अप्रैल को 44 अरब डॉलर में ट्विटर को खरीदने के लिए एक प्रस्ताव पेश किया था। मामले से जुड़े वकीलों ने हालांकि आंकड़े साझा करने की योजना के बारे में कोई जानकारी नहीं दी। मस्क ने भी ट्विटर पर इस संबंध में कुछ नहीं बताया, जबकि वह हमेशा इस समझौते से जुड़ी जानकारी इस सोशल मीडिया मंच पर देते रहे हैं। ट्विटर ने भी इन खबरों की पुष्टि करने से इनकार कर दिया और सोमवार को जारी किए गए एक बयान का जिक्र किया, जिसमें कंपनी ने कहा था कि वह मस्क के साथ सहयोगपूर्ण तरीके से जानकारी साझा कर रही है। इससे पहले मस्क ने कहा था कि ट्विटर को खरीदने का उनका सौदा तब तक आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक कि कंपनी सार्वजनिक रूप से इस बात के सबूत नहीं दिखाती कि उसके मंच पर फर्जी या स्पैम खाते पांच प्रतिशत से कम हैं। टेक्सास के अटॉर्नी जनरल केन पैक्सटन ने भी ट्विटर के अपने स्पैम एवं फर्जी खातों की जानकारी का खुलासा करने में कथित रूप से विफल होने के मामले की जांच शुरू करने की सोमवार को घोषणा की थी। वाशिंगटन पोस्ट ने सबसे पहले मामले से परिचित व्यक्ति का हवाला देते हुए मस्क को आंकड़ों तक पूरी पहुंच प्रदान करने की ट्विटर की योजना की सूचना दी। अन्य खबरों ने सुझाव दिया कि अरबपति को केवल आंशिक पहुंच प्राप्त हो सकती है।

निजी उपयोग के लिए उद्यमों को स्पेक्ट्रम आवंटित करने का औचित्य नहीं: सीओएआई

नई दिल्ली (ईएमएस)। उद्योग निकाय सेल्युलर ऑपरेटर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (सीओएआई) ने कहा कि निजी कैप्टिव नेटवर्क के संचालन के लिए उद्यमों को सीधे स्पेक्ट्रम आवंटित करने का कोई औचित्य नहीं है। सीओएआई ने यह भी कहा कि लाइसेंस प्राप्त दूरसंचार कंपनियां निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं को सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी और लागत प्रभावी समाधान देने में सक्षम हैं। कैप्टिव नेटवर्क से आशय कंपनियों के ऐसे दूरसंचार नेटवर्क से है, जो उनके निजी उपयोग लिए हो। सीओएआई के सदस्यों में रिलायंस जियो, भारती एयरटेल और वोडाफोन आइडिया शामिल हैं। उद्योग निकाय की टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि दूरसंचार परिचालक और प्रौद्योगिकी कंपनियां 5जी स्पेक्ट्रम आवंटन और कैप्टिव निजी नेटवर्क की बहस को लेकर उलझी हुई हैं। निजी उद्यमों ने दावा किया है कि दूरसंचार कंपनियों पर निर्भरता के बिना कैप्टिव नेटवर्क के निर्माण के लिए सीधे स्पेक्ट्रम देने से डिजिटल एजेंडा में तेजी आएगी। हालांकि सीओएआई ने इस तर्क को खारिज करते हुए 5जी प्राइवेट नेटवर्क पर अपने स्थिति पत्र में सरकार से आग्रह किया है कि निजी कैप्टिव नेटवर्क पर ऐसे किसी भी स्पेक्ट्रम को आरक्षित या डी-लाइसेंस नहीं करना चाहिए, जिसकी पहचान मोबाइल सेवाओं के उपयोग के लिए की गई है। सीओएआई ने कहा कि ऐसा करने से सरकारी खजाने की कीमत पर निजी वाणिज्यिक संस्थाओं को अनुचित लाभ मिलेगा। उद्योग निकाय ने यह भी कहा कि इससे बुनियादी नीतियों में मनमानी को बढ़ावा मिलेगा, जो नेटवर्क में निवेश को हतोत्साहित करेगा तथा सरकारी खजाने की कीमत पर निजी वाणिज्यिक संस्थाओं को अनुचित लाभ मिलेगा।

मई में चीन की कारोबारी गतिविधियों में आया सुधार

बीजिंग (ईएमएस)। शंघाई और अन्य औद्योगिक केंद्रों में कोविड-19 महामारी पर काबू पाने के लिए लगाए गए प्रतिबंधों में राहत के बाद चीन की कारोबारी गतिविधियों में सुधार हुआ है। जानकारी के मुताबिक एक एजेंसी के बयान में कहा कि मई में निर्यात एक साल पहले की तुलना में 16.9 प्रतिशत बढ़कर 308.3 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया। यह आंकड़ा अप्रैल में 3.7 प्रतिशत की वृद्धि के मुकाबले अधिक है। समीक्षाधीन अवधि में आयात 4.1 फीसदी बढ़कर 229.5 अरब डॉलर हो गया। अप्रैल में इसमें 0.7 फीसदी की तेजी हुई थी। उपभोक्ता मांग कम होने की वजह से आयात में वृद्धि अभी भी कमजोर है। इसी तरह कमजोर वैश्विक मांग के चलते निर्यात के मोर्चे पर चुनौतियां बनी हुई हैं।

इस साल टाटा मोटर्स करेगी भारी भर्तियां, बढ़ाएगी शोध एवं विकास क्षमता

नई दिल्ली (ईएमएस)। देश की मशहूर वाहन निमार्ता कंपनी टाटा मोटर्स चालू वित्त वर्ष में मौजूदा कर्मचारियों के कौशल विकास के साथ ही नई भर्ती के जरिये अपनी शोध एवं विकास (आरएंडडी) क्षमताओं को मजबूत करने की तैयारी कर रही है। कंपनी के एक शीर्ष अधिकारी ने यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस कवायद का मकसद इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) खंड सहित विभिन्न व्यावसायिक कार्यक्षेत्रों में दक्षता को बढ़ाना है। कंपनी ईवी खंड में बैटरी पैक और वाहन के रंगरूप को लेकर अपनी विशेषज्ञता बढ़ाने पर विचार कर रही है। टाटा मोटर्स के अध्यक्ष (यात्री वाहन और इलेक्ट्रिक वाहन) शैलेश चंद्रा ने विश्लेषकों के साथ बातचीत में कहा, जहां तक आरएंडडी में भर्ती की बात है, हम इस साल खासतौर से जोरदार भर्ती करने जा रहे हैं, लेकिन इसके साथ ही एक अन्य क्षेत्र है, जहां हम बहुत गहराई से काम कर रहे हैं और वह है आरएंडडी के भीतर मौजूदा इंजीनियरों का कौशल विकास। उन्होंने कहा कि कंपनी बेहद गंभीरता के साथ अपने आरएंडडी आधार का विस्तार करने की योजना बना रही है। चंद्रा ने कहा कि क्षमताओं को बढ़ाने के लिए जेएलआर सहित अन्य समूह संस्थाओं के साथ सहयोग बढ़ाया जाएगा। उन्होंने कहा, जेएलआर सहित विभिन्न टाटा कंपनियों के साथ कई तरह के गठजोड़ होंगे।

इसलिए क्षमताएं केवल टाटा मोटर्स के भीतर ही सीमित नहीं होंगी, बल्कि जेएलआर सहित दूसरी टाटा कंपनियों के साथ तालमेल के अवसरों पर भी विचार किया जाएगा। जैसे सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में बहुत अधिक क्षमता है। ये ऐसे क्षेत्र हैं, जहां हम ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

कैमरा खंड अगले दो वर्षों में राजस्व बढ़ाने में योगदान देगा: फुजीफिल्म

नई दिल्ली (ईएमएस)। फुजीफिल्म को चालू वित्त वर्ष (2022-23) में उसके भारतीय कारोबार से दो अंकों की वृद्धि की उम्मीद है। कंपनी के एक अधिकारी ने कहा कि इस दौरान स्वास्थ्य और उपभोक्ता कारोबार का प्रदर्शन मजबूत रहेगा। फुजीफिल्म इंडिया अपने कैमरा व्यवसाय के विस्तार के हिस्से के रूप में अपनी लोकप्रिय इंस्टैक्स श्रृंखला में नए मॉडल पेश कर रहा है। उसे उम्मीद कि स्वास्थ्य सेवा विभाग के अलावा कैमरा खंड अगले दो वर्षों में राजस्व को बढ़ाने में दूसरा सबसे बड़ा योगदान करेगा। कंपनी ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों चैनलों में इंस्टैक्स श्रृंखला की खुदरा उपस्थिति का विस्तार कर रही है। कंपनी को उम्मीद है कि यह कैमरा मौजूदा 500 स्थानों से बढ़कर इस साल के आखिर तक लगभग 2,000 स्थानों पर बिक्री के लिए उपलब्ध होगा। फुजीफिल्म के एक अधिकारी ने कहा कि कुल मिलाकर कंपनी ने वित्त वर्ष 2020-21 और वित्त वर्ष 2021-22 में अच्छी बढ़त हासिल की है। पूर्व-कोविड अवधि की तुलना में इसने अपने कारोबार में 40 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि की है।

मोटोरोला भारत में जल्द लांच करेगा नया जी-सीरीज स्मार्टफोन, डिजाइन और स्पेसिफिकेशन लीक

नई दिल्ली (ईएमएस)। मोटोरोला भारत में एक नया जी-सीरीज स्मार्टफोन लॉन्च करने वाला है। बताया जाता है कि कंपनी 7 जून को भारत में अपना जी82 5जी नए मिड-रेंज स्मार्टफोन को लॉन्च करेगी। फिलहाल कंपनी मोटो जी गो स्मार्टफोन पर काम कर रही है। लेनोवो के स्वामित्व वाले सब-ब्रांड ने अभी तक आगामी बजट स्मार्टफोन की लॉन्च तिथि की पुष्टि नहीं की है। इस बीच मोटो जी गो के डिजाइन लीक हो गए हैं। डिजाइन लीक को साझा करने वाले टिपस्टर सुधांशु ने आगामी मोटोरोला स्मार्टफोन के कुछ प्रमुख स्पेसीफिकेशन का भी खुलासा किया है। आइए एक नजर डालते हैं मोटो जी गो के स्पेसिफिकेशन, डिजाइन और लीक हुई अन्य जानकारियों पर। शेयर की गई इमेज के अनुसार फोन में डिस्प्ले के चारों ओर काफी मोटे बेजल होंगे। मोटोरोला फोन को वाटर-ड्रॉप नॉच डिस्प्ले के साथ लॉन्च करेगी। इसके अलावा इसके मल्टी-टच डिस्प्ले में आईपीएस एलसीडी पैनल होगा। इसके वॉल्यूम और पावर बटन दाएं किनारे होंगे, जबकि बाएं किनारे में माइक्रोएसडी कार्ड और सिम ट्रे के लिए एक स्लॉट दिया गया है। इतना ही नहीं बायोमेट्रिक्स के लिए फोन में रियर माउंटेड फिंगरप्रिंट स्कैनर दिया गया है। इसमें एआई फेस अनलॉक के लिए भी सपोर्ट मिलने की संभावना है। फोन में पॉलीकाबोर्नेट बैक में वर्टिकली अलाइन्ड कैमरा सेटअप दिया गया है, जबकि इसकी बैक साइड पर डुअल कैमरा सेटअप होगा। सुधांशु के अनुसार फोन में 13एमपी का मुख्य कैमरा लगा है। इसके अलावा फोन में 2एमपी का सेकेंडरी कैमरा भी होगा। सेल्फी के लिए फोन में 5एमपी का फ्रंट कैमरा सेंसर मिलेगा। फोन में एलईडी फ्लैश भी दी गई है। इसके अलावा निचले किनारे पर यूएसबी टाइप-सी पोर्ट है। वहीं ऊपरी किनारे पर एक हेडफोन जैक भी दिया गया है। फोन का बेस मॉडल 2 जीबी रैम के साथ आता है। हालांकि फोन का डिस्प्ले साइज, प्रोसेसर और बैटरी की डिटेल्स अभी सामने नहीं आ पाई हैं। फोन आउट ऑफ बॉक्स के एंड्रॉयड 11 (गो) ऐडिशन प्रोसेस चलता है।

पॉपुलर एसयूवी स्कॉर्पियो का नया मॉडल होगा लॉन्च

-महिंद्रा ने बोले- नई स्कॉर्पियो को उड़ाने पड़ेगी न्यूक्लियर बॉम्ब की जरूरत

नई दिल्ली(ईएमएस)। स्वदेशी कंपनी महिंद्रा एसयूवी स्कॉर्पियो का नया मॉडल लॉन्च करने जा रही है। महिंद्रा ने ट्रेलर में इसे बिग डैडी ऑफ एसयूवीएस बताया है।अब महिंद्रा एंड महिंद्रा के प्रमुख आनंद महिंद्रा का एसयूवी को लेकर किया गया एक ट्वीट काफी सुर्खियां बटौर रहा है। जिसमें उन्होंने एक यूजर को जवाब देते हुए कहा कि इस एसयूवी को उड़ाने के लिए रोहित शेट्टी को न्यूक्लियर बॉम्ब की जरूरत पड़ेगी। उम्मीद की जा रही है कि स्कॉर्पियो-एन को काफी दमदार इंजन के साथ उतारा जाएगा। लॉन्च होने पर इसका मुकाबला एमजी एस्टर, किआ सेल्टोस और हुंडई क्रेटा से होगा।दरअसल, जब आनंद महिंद्रा ने एसयूवी का टीजर शेयर किया तो एक ट्विटर यूजर ने प्रसिद्ध फिल्म डायरेक्टर रोहित शेट्टी का जिक्र किया।इसमें कहा गया था कि रोहित शेट्टी नई स्कॉर्पियो के लॉन्च की उम्मीद कर रहे होंगे।बता दें कि सिंघम और सूर्यवंशी जैसी हिट फिल्मों के निर्देशक शेट्टी को दिमाग को हिला देने वाले स्टंट सीन के लिए जाना जाता है। उनके ट्रेडमार्क एक्शन सीन में लगभग हमेशा कारें धमाके के साथ उड़ती हुई दिखाई देती हैं। यूजर के इस कमेंट ने आनंद महिंद्रा का ध्यान खींचा जो ट्विटर पर अपने मजाकिया पोस्ट के लिए जाने जाते हैं। इसके बाद जवाब में उन्होंने लिखा, रोहित शेट्टी जी, गाड़ी को उड़ने के लिए आपको एक परमाणु बम की आवशयकता होगी. अब महिंद्रा का यह कमेंट खूब वायरल हो रहा है। कई यूजर लिख रहे हैं- अब मजा आएगा. काफी लंबे इंतजार के बाद नेक्स्ट-जेनरेशन महिंद्रा स्कॉर्पियो आखिरकार लॉन्च होने जा रही है। स्कॉर्पियो भारतीय बाजार में काफी पॉपुलर एसयूवी है।एक समय था जब स्कॉर्पियो सबसे ज्यादा पसंदीदा एसयूवी हुआ करती थी। अब इस एसयूवी को नए रूप के साथ फिर से उतारा जा रहा है। नई स्कॉर्पियो का नाम स्कॉर्पियो-एन है। कंपनी के मुताबिक, स्कॉर्पियो के मौजूदा मॉडल की बिक्री भी जारी रहेगी। इसे स्कॉर्पियो क्लासिक के नाम से जाना जाएगा। एसयूवी का नया मॉडल 27 जून को लॉन्च होगा।

दैनिक पंचांग

10 जून 2022 को सूर्योदय के समय की ग्रह स्थिति

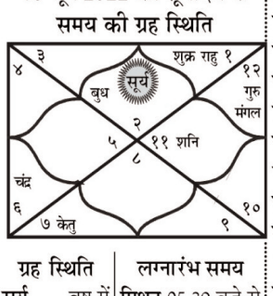

ग्रह	स्थिति
सूर्य	वृष में
चंद्र	कन्या में
मंगल	मीन में
बुध	वृष में
गुरु	मीन में
शुक्र	मेष में
शनि	कुंभ में
राहु	मेष में
केतु	तुला में

राहुकाल 10.30 से 12.00 बजे तक

लग्नारंभ समय	
मिथुन	05.39 बजे से
कर्क	07.52 बजे से
सिंह	10.08 बजे से
कन्या	12.20 बजे से
तुला	14.31 बजे से
वृश्चिक	16.46 ब.से
धनु	19.02 बजे से
मकर	21.07 बजे से
कुंभ	22.53 बजे से
मीन	00.26 बजे से
मेष	01.57 बजे से
वृष	03.37 बजे से

शुक्रवार 2022 वर्ष का 161 वां दिन
दिशाशूल पश्चिम **ऋतु** ग्रीष्म।
विक्रम संवत् 2079 **शक संवत्** 1944
मास ज्येष्ठ **पक्ष** शुक्ल
तिथि दशमी 07.27 बजे को समाप्त।
नक्षत्र चित्रा 03.37 बजे रात्र को समाप्त।
योग वरीयान 23.35 बजे को समाप्त।
करण गर 07.27 बजे तदनन्तर वणिज 18.42 बजे को समाप्त।
चन्द्रायु 10.5 घण्टे
रवि क्रान्ति उत्तर 23° 00'
सूर्य उत्तरायन
कलि अहर्गण 1871275
जूलियन दिन 2459740.5
कलियुग संवत् 5123
कल्पारंभ संवत् 1972949123
सृष्टि ग्रहारंभ संवत् 1955885123
वीरनिर्वाण संवत् 2548
हिजरी सन् 1443
महीना जिल्काद **तारीख** 10
विशेष निर्जला एकादशी व्रत।

दिन का चौघड़िया				रात का चौघड़िया			
चर	05.55	से	07.23 बजे तक	रोग	05.38	से	07.1 बजे तक
लाभ	07.23	से	08.51 बजे तक	काल	07.11	से	08.43 बजे तक
अमृत	08.51	से	10.19 बजे तक	लाभ	08.43	से	10.15 बजे तक
काल	10.19	से	11.47 बजे तक	उद्वेग	10.15	से	11.47 बजे तक
शुभ	11.47	से	01.15 बजे तक	शुभ	11.47	से	01.19 बजे तक
रोग	01.15	से	02.43 बजे तक	अमृत	01.19	से	02.51 बजे तक
उद्वेग	02.43	से	04.10 बजे तक	चर	02.51	से	04.23 बजे तक
चर	04.10	से	05.38 बजे तक	रोग	04.23	से	05.55 बजे तक

चौघड़िया शुभाशुभ- शुभत्व श्रेष्ठ शुभ, अमृत व लाभ, **मध्यम** चर, **अशुभ** उद्वेग, रोग व काल। सभी समय भारतीय मानक समय की मध्य रेखा बिन्दु के आधार पर है अत: आप अपने स्थानीय समयानुसार ही देखें। ■ Jagrutidaur.com, Bangalore

कारों पर पांच साल की वारंटी देगी अब ऑडी

-कंपनी ने नई वारंटी कवरेज की शुरूआत की

नई दिल्ली(ईएमएस)। महंगी कारें बनाने वाली कंपनी ऑडी इंडिया ने नई वारंटी कवरेज की शुरूआत की। कंपनी अब अपनी कारों पर ग्राहकों को पूरे पांच साल की वारंटी प्रदान करेगी। लग्जरी कार बनाने वाली जर्मनी की कंपनी ऑडी ने अपनी कारों पर वारंटी की समय सीमा बढ़ाने की घोषणा की है। ऑडी को भारतीय कार बाजार में उतरे हुए 15 वर्ष पूरे हो गए हैं। इसी मौके पर कंपनी ने यह नई शुरूआत की है। ऑडी इंडिया भारत में इलेक्ट्रिक कारों सहित 10 मॉडल की बिक्री करती है. कंपनी ने एक बयान जारी कर इसकी घोषणा की है।बयान में बताया गया है कि 1 जून, 2022 के बाद बेचे जाने वाली सभी कारों पर अब 5 साल की वारंटी मिलेगी। ऑडी इंडिया के हेड बलबीर सिंह ढिल्लन के कहा, भारत में शानदार 15 वर्ष पूरे होने का जश्न मनाने के तहत हमने अपने ग्राहकों को असीमित माइलेज के साथ 5 साल के लिए फर्स्ट वारंटी कवरेज की घोषणा की है.

उन्होंने कहा कि यह पहल मील का पत्थर है।ग्राहकों को मन की शांति पैकेज की पेशकश करने पर कंपनी को काफी खुशी हो रही है। बयान में कहा गया है कि आॅडी इंडिया ने अपने ग्राहकों को व्यापक वारंटी पैकेज देकर लगातार उनका भरोसा बढ़ाया है। नया वारंटी पैकेज 5 साल के लिए मान्य है।इसमें किलोमीटर की कोई बाध्यता नहीं है। इस कवरेज में 5 सालों के दौरान आॅडी की गाड़ियों में किसी भी मरम्मत या कंपोनेंट के खराब होने पर उनका रिप्लेसमेंट कवर किया गया है.ऑडी भारत में क्यू2, क्यू5, क्यू7 सहित कुल 10 मॉडल बेचती है। इनमें दो इलेक्ट्रिक एसयूवी ई-ट्रॉन और ई-ट्रॉन स्पोर्टबैक और दो इलेक्ट्रिक ग्रैंड टुअरर्स ई-ट्रॉन जीएटी और आरएस ई-ट्रान जीटी शामिल है।

आज का राशिफल

शुभ संवत 2079, शाके 1944, सौम्य गोष्ठ, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष, ग्रीष्म ऋतु, गुरु उदय पूर्वे तथा शुक्रोदय पूर्वे तिथि एकादशी, शुक्रवासरे, चित्रा नक्षत्रे, वलयोगे, वणिक करणे, कन्या की चंद्रमा, भद्रा दो.3/24 निर्जला एकादशी व्रत, मूल प्रारंभ, रात्रि 4/45 भीम सैनी, दक्षिण दिशा की यात्रा शुभ तथा उत्तम होगी।

आज जन्म लिए बालक का फल.....

आज जन्म लिया बालक योग्य, बुद्धिमान, चपल, चतुर, चंचल, स्वाभिमानी, उत्तम वृत्ति वाला, योगी-भोगी होगा।

मेष राशि :- भाग्योदय का अच्छा समय है, संतान से सुख, बाधा दूर होगी।

वृष राशि :- यात्रा में धन व्यय होगा, शरीर कष्ट, मनोवृत्ति ठीक रहेगी, कार्य पर ध्यान दें।

मिथुन राशि :- व्यवसाय में लाभ होगा, किसी मांगलिक उत्सव में सम्मिलित होंगे।

कर्क राशि :- सोचे हुये कार्यों में विघ्न उत्पन्न होगा, मन अशांत रहेगा, समय का ध्यान रखें।

सिंह राशि :- धन का लाभ होगा, आनंद प्राप्त होगा, शुभ समाचार मिलेगा, प्रयास से सफलता मिलेगी।

कन्या राशि :- धन लाभ तथा स्वास्थ में सुधार होगा, कार्य होंगे, समय का ध्यान अवश्य रखें।

तुला राशि :- अधिक परिश्रम से लाभ मिलेगा, शत्रुदल कष्टकारक होगा, ध्यान रखें।

वृश्चिक राशि :- दाम्पत्य जीवन में मधुर संबंध का आनंद मिलेगा तथा संतान सुख होगा।

धनु राशि :- विरोधियों से अवश्य सतर्क रहें, मानसिक तनाव रहेगा, समय का ध्यान रखें।

मकर राशि :- यात्रा होगी, संतान की ओर से विपरीत व्यवहार मिलेगा।

कुंभ राशि :- मांगलिक उत्सव में शामिल हेंगे, लाभ के अवसर मिलेंगे, ध्यान अवश्य दें।

मीन राशि :- स्थिति में कुछ सुधार होगा, स्वास्थ ठीक रहेगा, समय का ध्यान रखें।

DELHI CRIME 10 june 2022:Layout 1 6/9/2022 7:29 PM Page 6

रिकी पोंटिंग ने होबार्ट हरिकेंस के साथ रणनीति प्रमुख के रूप में किया तीन साल का करार

मेलबर्न, (हि.स.)। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई कप्तान रिकी पोंटिंग ने गुरुवार को बिग बैश लीग (बीबीएल) क्लब होबार्ट हरिकेंस के साथ रणनीति प्रमुख के रूप में 3 साल का करार किया है। पोंटिंग ने ऑस्ट्रेलियाई गर्मियों के दौरान चैनल सेवन के लिए एक कमेंटेटर के रूप में अपनी भूमिका जारी रखते हुए हरिकेंस के लिए अंशकालिक तौर पर काम करने के लिए अनुबंध पर करार किए हैं। पोंटिंग ने पहले ऑस्ट्रेलियाई पुरुष क्रिकेट टीम के साथ अंतरिम और विशेषज्ञ कोचिंग भूमिकाएं भी निभाई हैं, साथ ही इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में मुंबई इंडियंस और दिल्ली डेयरडेविल्स/कैपिटल्स दोनों के साथ कोच के रूप में कार्य किया है। पोंटिंग ने कहा कि वह एक ऐसे संगठन में योगदान करने में सक्षम होने के लिए रोमांचित हैं, जिसके बारे में वह बहुत भावुक हैं। रिकी पोंटिंग ने एक आधिकारिक बयान में कहा, "जब से मैं बीबीएल में हरिकेंस के लिए खेला था, तब से प्रतियोगिता और खेल में काफी बदलाव आया है, और मैं अब टी

20 खेल की बारीकियों के बारे में बहुत कुछ जानता हूं।" उन्होंने कहा, "मैं खेल के सभी रूपों में तस्मानियाई और ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट की प्रगति के बारे में भावुक हूं, इसलिए हरिकेंस के लिए इस तरह की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए कहा जाना वास्तव में विशेष है। मैं काम करने के लिए उत्सुक हूं।" पोंटिंग ने कहा, "कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों में कुछ बदलावों के साथ, मेरा मानना है कि हरिकेंस के पास हमारी पहली बीबीएल ट्रॉफी जीतने की काबिलियत है।" क्रिकेट तस्मानिया के सीईओ डोमिनिक बेकर ने कहा कि पोंटिंग को प्रतियोगिता के आंतरिक घेरे में रखना तस्मानियाई क्रिकेट और बीबीएल दोनों के लिए बहुत अच्छा था। उन्होंने कहा, " रिकी निस्संदेह दुनिया में सर्वश्रेष्ठ टी 20 रणनीतिकार है, और एक गर्वित तस्मानियाई के रूप में, हम कम से कम अगले तीन सत्रों के लिए तस्मानिया की टीम की दिशा की देखरेख करने के लिए रोमांचित हैं।" पोंटिंग आधिकारिक तौर पर हरिकेंस के साथ अपने कार्यकाल की शुरूआत तत्काल प्रभाव से करेंगे।

हम बेल्जियम की चुनौती के लिए तैयार : सविता

ब्रसेल्स, (हि.स.)। भारतीय महिला हॉकी टीम एफआईएच महिला हॉकी प्रो लीग 2021/22 में बेल्जियम के खिलाफ 11 और 12 जून 2022 को यहां एंटवर्प के स्पोर्टसेंट्रम विल्रिजक्स प्लेन स्टेडियम में डबल-हेडर मैच खेलेगी। भारतीय महिला टीम वर्तमान में अर्जेंटीना और नीदरलैंड के ठीक पीछे 8 मैचों में 22 अंकों के साथ तालिका में तीसरे स्थान पर है। दूसरी ओर, बेल्जियम इस समय 8 मैचों में 12 अंकों के साथ तालिका में सातवें स्थान पर है। सविता, जो आगामी मैचों के लिए कप्तान के रूप में भारतीय महिला हॉकी टीम का नेतृत्व करेंगी, ने बताया कि टीम ने डबल-हेडर से पहले विपक्षी टीम को घेरने के लिए कैसे तैयारी की है। सविता ने कहा, "हम बेल्जियम के लिए तैयार हैं। हमारी टीम में कई अनुभवी खिलाड़ी हैं जो जानते हैं कि विदेशी धरती पर जीतने के लिए क्या करना पड़ता है। हम हाल के महीनों में लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, और हमें विश्वास है कि हमारे पास घर से दूर जीतने के लिए बड़े मैच हैं।" सविता ने कहा, "हमने अपने पिछले दो मैचों में नीदरलैंड के खिलाफ की गई गलतियों पर काम किया है और हमें विश्वास है कि हम आगामी मैचों में उन गलतियों को नहीं दोहराएंगे। हमने उन क्षेत्रों के बारे में बात की है जहां हमें सुधार करने की जरूरत है और उन क्षेत्रों में कड़ी मेहनत की है और हमें विश्वास है कि हम यहां सफल होंगे।" भारतीय महिला हॉकी टीम अप्रैल में अपने पिछले एफआईएच महिला हॉकी

प्रो लीग 2021/22 मुकाबलों में नीदरलैंड के खिलाफ एक जीत और एक हार के बाद प्रतियोगिता में प्रवेश करेगी। भारतीय टीम ने पहला मैच 2-1 से जीता और दूसरे मुकाबले में शूटआउट (1-3) में 3-1 से हार गई, जब मैच रेगुलेशन टाइम के अंत में 1-1 से बराबरी पर था। भारतीय टीम की उप-कप्तान दीप ग्रेस एक्का ने कहा कि टीम प्रत्येक मैच के साथ सुधार कर रही है और उनका लक्ष्य बेल्जियम के खिलाफ जीत हासिल करना होगा। एक्का ने कहा, "मेरा मानना है कि हम तैयार हैं। हमें खुद पर, अपनी टीम में और सबसे महत्वपूर्ण बात, एक दूसरे पर विश्वास है। हम जानते हैं कि हमें अपना प्रदर्शन बनाए रखना चाहिए क्योंकि हम एफआईएच हॉकी महिला विश्व कप की तैयारी करते हैं, जो इस साल जुलाई में होगा।" उन्होंने कहा, "हमें बेल्जियम के खिलाफ गेंद पर कब्जा बनाए रखना चाहिए, और हमें सक्रिय होना चाहिए और गेंद पर कब्जा करने के लिए दबाव डालना चाहिए जब हमारे पास गेंद नहीं होती है। हमारा तत्काल लक्ष्य इन खेलों को जीतना है, साथ ही अर्जेंटीना के खिलाफ अगले मैच और विश्व कप से पहले हमारे मनोबल को बढ़ाना है।"

घर में पहली बार टीम का नेतृत्व नहीं करने के लिए निराश हूं : केएल राहुल

नई दिल्ली, (हि.स.)। भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच पहले टी-20 मैच से एक दिन पहले, टीम इंडिया के कप्तान केएल राहुल चोट के कारण बाहर हो गए। नए कप्तान ऋषभ पंत को शुभकामनाएं देते हुए केएल राहुल ने कहा कि वह निराश हैं और इसे स्वीकार करना मुश्किल है। टीम को शुभकामनाएं देने के लिए राहुल ने ट्वीट किया, "स्वीकार करना मुश्किल है लेकिन मैं आज एक और चुनौती शुरू करता हूं। घर में पहली बार टीम का नेतृत्व नहीं करने के लिए निराश हूं, लेकिन लड़कों को मेरा पूरा समर्थन है। समर्थन के लिए सभी का दिल से धन्यवाद। ऋषभ को बधाई और लड़कों को श्रृंखला के लिए शुभकामनाएं। जल्द ही मिलते हैं।" राहुल के अलावा स्पिनर कुलदीप यादव भी चोट के कारण दक्षिण

अफ्रीका के खिलाफ पांच मैचों की टी20 सीरीज से बाहर हो गए हैं। अखिल भारतीय वरिष्ठ चयन समिति ने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ घरेलू श्रृंखला के लिए विकेटकीपर ऋषभ पंत को कप्तान और हार्दिक पांड्या को उप-कप्तान नामित किया है। बीसीसीआई के एक बयान के अनुसार, राहुल दाहिने कमर की चोट के कारण बाहर हो हुए हैं, जबकि यादव को कल शाम नेट्स पर बल्लेबाजी करते हुए दाहिने हाथ पर चोट लगी थी, जिसके बाद उन्हें भी श्रृंखला से बाहर होना पड़ा। भारत दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में पांच मैचों की घरेलू श्रृंखला के पहले टी-20 में दक्षिण अफ्रीका से भिड़ने के लिए तैयार है।

अनमोल विश्वकर्मा ने प्री स्टेट शूटिंग चैम्पियनशिप में जीता स्वर्ण पदक

वाराणसी, (हि.स.)। 15वीं प्री स्टेट शूटिंग चैम्पियनशिप में बनारस शूटिंग अतादमी के निशानेबाज अनमोल विश्वकर्मा ने 50 मीटर प्रोन (आईएसएसएफ) श्रेणी में स्वर्ण पदक जीता। इसके अलावा अनमोल ने 50 मीटर श्री पोजिशन राइफल टीम स्पर्धा में नीरज विश्वकर्मा और विशाल भारद्वाज के साथ मिलकर रजत पदक पर निशाना साधा। प्री स्टेट चैम्पियनशिप का आयोजन 3 से 7 जून 2022 तक मुजफ्फरनगर में किया गया था। इस प्रतियोगिता में इस्के अलावा अकादमी के अन्य निशानेबाज ऋषभ दुबे, आयुष सिंह, अमित पटेल, श्रेयस पटेल, यथार्थ

सिंह एवं पीयूष ने भी अच्छा प्रदर्शन किया और आगामी स्टेट शूटिंग चैम्पियनशिप के लिए अहर्ता प्राप्त की। इस अवसर पर यूपी स्टेट राइफल एसोसिएशन के महासचिव जीएस सिंह व कोच विशाल विश्वकर्मा ने आगामी स्टेट चैम्पियनशिप के लिए निशानेबाजों को शुभकामनाएं दीं।

एशियाई कप क्वालीफायर : भारत ने अपने पहले मैच में कंबोडिया को 2-0 से हराया

-कप्तान सुनील छेत्री ने किये दोनों गोल

कोलकाता, (हि.स.)। भारत ने एएफसी एशियाई कप क्वालीफायर 2023 के अपने पहले मैच में कंबोडिया को 2-0 से बराकर तीन अंक हासिल किए। बुधवार रात यहां विवेकानंद युवा भारती क्रिरंगन स्टेडियम में खेले गए मैच में भारत के लिए दोनों गोल कप्तान सुनील छेत्री (14', 59') ने किए। मैच में जैसे ही रेफरी ने सीटी बजाई, दर्शकों से भरे स्टेडियम में भारतीय राष्ट्रीय टीम ने दिखाया कि वे मैच के लिए पूरी तरह से तैयार होके आए हैं। भारतीय टीम ने कंबोडिया को अपने ही हाफ में दबाव में ला दिया, जब मैच के दूसरे ही मिनट में रोशन सिंह ने लंबी दूरी से से बॉल को नेट में मारने की कोशिश की, लेकिन उनका यह प्रयास विफल गया। आकाश मिश्रा ने चौथे मिनट में एक सुंदर शॉट लगाया, लेकिन कंबोडियाई गोलकीपर हुल किम्हुई ने गेंद को रोक कर उनका प्रयास विफल कर दिया। मैच के सातवें मिनट में कंबोडिया ने गोल

करने का एक बेहतरीन मौका गंवा दिया। कंबोड़िया ने बाएं फ्लैंक पर हमला किया और गेंद बॉक्स के किनारे पर पड़ी थी लेकिन ओर्न चैनपोलिन का शॉट गोल पोस्ट को ऊपर से निकल गया। मैच के 14वें मिनट में कप्तान सुनील छेत्री ने पेनल्टी को गोल में बदलकर भारत को 1-0 की बढ़त दिला दी। मध्यांतर तक भारतीय टीम ने अपनी इस बढ़त को कायम रखा। मध्यांतर के बाद भारतीय टीम ने फिर से आक्रामक रूख अपनाया और मैच के 59वें मिनट में सुनील छेत्री ने अपना दूसरा गोल करते हुए भारत को 2-0 से बढ़त दिला दी। अंत में यही स्कोर निर्णायक साबित हुआ और भारत ने मैच 2-0 से अपने नाम कर तीन अंक हासिल कर लिए। इससे पहले दिन में, हांगकांग ने ग्रुप डी में अफगानिस्तान पर 2-1 से जीत दर्ज की। ग्रुप डी में भारत और हांगकांग दोनों के तीन-तीन अंक हैं। अफगानिस्तान और कंबोडिया शनिवार को होने वाले ग्रुप डी के अगले मुकाबलों में आमने सामने होंगे।

बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट मैच के लिए वेस्टइंडीज की 12 सदस्यीय टीम घोषित

-तीन खिलाड़ी करेंगे टेस्ट पदार्पण

सेंट जॉन्स, (हि.स.)। क्रिकेट वेस्टइंडीज ने गुरुवार को बांग्लादेश के खिलाफ पहले टेस्ट मैच के लिए 12 सदस्यीय राष्ट्रीय टीम की घोषणा कर दी है। दो मैचों की सीरीज की शुरूआत 16 जून से एंटीगुआ के सर विवियन रिचर्ड्स स्टेडियम में होगी। सीरीज का दूसरा मैच सेंट लूसिया के डैरेन सैमी स्टेडियम में खेला जाएगा। 12 सदस्यीय टीम में तीन अनकैप्ड खिलाड़ी डेवोन थॉमस, गुडाकेश मोती और एंडरसन फिलिप को शामिल किया गया है। क्रेग ब्रैथवेट दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला के दौरान वेस्टइंडीज की कप्तानी करते रहेंगे। अपने अनकैप्ड खिलाड़ियों के चयन के बारे में बात करते हुए, लीड चयनकर्ता डॉ डेसमंड हेन्स ने क्रिकेट वेस्टइंडीज द्वारा जारी एक आधिकारिक बयान में कहा, "डेवोन थॉमस काफी समय से अपने प्रदर्शन से टीम के दरवाजे पर दस्तक दे रहे हैं। उन्होंने हमारी फ्रेंचाइजी क्रिकेट प्रणाली में बहुत अच्छा प्रदर्शन किया है और हम इसे उनके लिए एक अच्छे अवसर के रूप में देखते हैं।" उन्होंने आगे कहा, "आप देखेंगे कि रेमन रीफर भी टीम में है। वह एक और ऐसे खिलाड़ी हैं, जिन्होंने चार दिवसीय प्रतियोगिता में और इंग्लैंड के खिलाफ (इस साल की शुरूआत में) प्रभावशाली प्रदर्शन किया है। तो फिर, हम उन लोगों को अवसर दे रहे हैं जो प्रदर्शन कर रहे हैं।" हेन्स ने कहा,"हमें लगता है कि गुडाकेश मोती उन लोगों में से एक हैं जो अच्छी गेंदबाजी भी कर रहे हैं, और हमें लगता है कि यह उनके लिए शामिल होने का एक अच्छा मौका होगा। हम बांग्लादेश के खिलाफ विश्व टेस्ट चैंपियनशिप अंक हासिल करना चाहते हैं जो बहुत महत्वपूर्ण होगा।" वेस्टइंडीज वर्तमान में विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप तालिका में छठे स्थान

पर है और उसे घर में बांग्लादेश के खिलाफ जीत की जरूरत है, जिससे उसके पास अगले साल के फाइनल में जगह बनाने का मौका होगा।

वेस्टइंडीज की टीम इस प्रकार है: क्रेग ब्रैथवेट (कप्तान), जर्मेन ब्लैकवुड, नक्रमाह बोनर, जॉन कैंपबेल, जोशुआ डा सिल्वा, अल्जारी जोसेफ, काइल मेयर्स, गुडाकेश मोती, एंडरसन फिलिप, रेमन रीफर, जेडेन सील्स, डेवोन थॉमस। **रिजर्व:** टैगनरिन चंद्रपॉल और शेरमोन लुईस।

श्रीलंका के खिलाफ तीसरे टी-20 मैच से बाहर हुए मिचेल स्टार्क

कोलंबो, (हि.स.)। ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क श्रीलंका के खिलाफ तीसरे टी-20 मैच से बाहर हो गए हैं। मंगलवार को कोलंबो में खेले गए मैच के दौरान स्टार्क के बायीं तर्जनी में चोट लगी थी, जिसके कारण उन्हें तीसरे टी-20 से बाहर होना पड़ा। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने गुरुवार को इसकी पुष्टि की। झेय रिचर्डसन, जिन्हें दूसरे टी-20 में स्टार्क की जगह ऑस्ट्रेलियाई टीम में शामिल किया गया था, ने बुधवार को खेले गए दूसरे टी-20 मैच में 26 रन देकर तीन विकेट लिए थे। झेय को स्टार्क के प्रतिस्थापन के तौर पर ऑस्ट्रेलिया की एकदिनी टीम में भी शामिल किया गया है। बता दें कि कोलंबो में खेले गए पहले टी20 मैच के दौरान स्टार्क की बायीं तर्जनी में चोट लग गई और उन्हें छह टांके लगाने पड़े थे। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज स्टार्क टीम के साथ रहेंगे और प्रशिक्षण जारी रखेंगे लेकिन चोट को ठीक करने के लिए उन्हें कम से कम सात दिन के समय की आवश्यकता होगी। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने एक आधिकारिक बयान में कहा, "स्टार्क

श्रीलंका में टीम के साथ अभ्यास करना जारी रखेंगे और एकदिवसीय श्रृंखला के दौरान संभावित रूप से वापसी करेंगे। उनके ठीक होने का समय अनिश्चित है, लेकिन अनुमान है कि उनके ठीक होने में कम से कम सात दिन लग सकते हैं।" दूसरे टी-20 मुकाबले की बात करें तो इस मुकाबले में श्रीलंका ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 9 विकेट पर 124 रन बनाए। श्रीलंका की तरफ से चरिथ असालंका ने 39 और कुशल मेंडिस ने 36 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से केन रिचर्ड्सन ने 4 और झेय रिचर्ड्सन ने 3 विकेट लिए। दो विकेट ग्लेन मैक्सवेल ने लिया। जवाब में ऑस्ट्रेलिया ने 17.5 ओवर में 7 विकेट पर 126 रन बनाकर मैच तीन विकेट से जीत लिया। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से मैथ्यू वेड ने नाबाद 26, एरोन फिंच ने 24 और डेविड वॉर्नर ने 21 रन बनाए, जबकि ग्लेन मैक्सवेल ने 19 रनों की पारी खेली। श्रीलंका की तरफ से वाहिंदु हसरंगा ने सर्वाधिक 4 विकेट लिए। जबकि दुश्मंथा चमिरा व नुवान तुसारा ने 1-1 विकेट लिया।

चेन्नईयिन एफसी ने मिडफिल्डर सौरव दास के साथ किया दो साल का करार

चेन्नई, (हि.स.)। दो बार की इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) चैंपियन चेन्नईयिन एफसी ने मिडफिल्डर सौरव दास के साथ दो साल का करार किया है। दास के आने से, जो पहले भारत के तीन शीर्ष फुटबॉल क्लबों- मुंबई सिटी, ईस्ट बंगाल और मोहन बागान- के लिए खेल चुके हैं, चेन्नईयिन का मिडफील्ड को और मजबूत होगा, जिसमें पहले से अनुभवी अनिरुद्ध थापा और युवा जितेश्वर सिंह शामिल हैं। इस गर्मी में क्लब के पांचवें करार के बारे में चेन्नईयिन एफसी के सह-मालिक वीटा दानी ने कहा, "हम कड़ी मेहनत करने वाले और जुझारू मिडफील्डर सौरव दास का चेन्नईयिन एफसी में स्वागत करते हुए बहुत खुश हैं। उन्होंने उन तीन क्लबों को प्रभावित किया है, जिनके लिए उन्होंने अब तक खेला है। हमें विश्वास है कि वह हमारे साथ अगले सीजन में भी इस गुण को बरकरार रखेंगे।" 25 वर्षीय फुटबॉलर एससी ईस्ट बंगाल से चेन्नई में शामिल होंगे, जिसके लिए उन्होंने आईएसएल में दो सत्र खेले। पिछले

सीजन में दास ने ईस्ट बंगाल के लिए 18 मैच खेले। आईएसएल के सफल क्लबों में से एक में शामिल होने पर उत्साह व्यक्त करते हुए दास ने कहाः "मैं चेन्नईयिन एफसी परिवार में शामिल होकर बहुत खुश हूं। दो बार का आईएसएल चैंपियन यह क्लब एक महान उपलब्धियों वाला क्लब है। मैं प्रशंसकों के सामने खेलने और क्लब के साथ कई ट्राफियां जीतने का इंतजार कर रहा हूं। मुझ पर विश्वास करने के लिए मैं प्रबंधन में सभी को धन्यवाद देना चाहता हूं। मैं उनसे और सभी प्रशंसकों से वादा करता हूं कि मैं प्रशिक्षण और मैचों में अपनी पूरी कोशिश करूंगा और कड़ी मेहनत करूंगा।" दास ने टाटा फुटबॉल अकादमी में अपने प्रारंभिक वर्षों को बिताने के बाद 2016 में मोहन बागान के साथ अपना पहला पेशेवर अनुबंध हासिल किया और बागान के लिए तीन आई-लीग सत्रों में भाग लिया। वह 16 लीग मैचों में दिखाई दिए और 2019-20 के आईएसएल सीजन में मुंबई सिटी जाने से पहले उनके लिए 2017 एएफसी कप में भी खेले। उन्होंने दो आईएसएल सीजन में मुंबई के लिए आठ मैच खेले।

इंडोनेशिया मास्टर्स 2022 के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे लक्ष्य सेन

जकार्ता, (हि.स.)। विश्व के नौवें नंबर के खिलाड़ी भारत के लक्ष्य सेन ने गुरुवार को जकार्ता में डेनमार्क के रैसमस गेमके को सीधे गेम में हराकर इंडोनेशिया मास्टर्स 2022 के क्वार्टर फाइनल में प्रवेश कर लिया है। कोर्ट 2 पर खेले गए इस मुकाबले में रैसमस ने पहले सेट में सेन को थोड़ी चुनौती दी, लेकिन अंत में सेन ने 21-18 से पहला सेट अपने नाम किया। दूसरे सेट में एक समय रैसमस ने 11-10 की बढ़त हासिल कर ली थी, लेकिन सेन ने बेहतरीन वापसी करते हुए दूसरा सेट 21-15 से अपने नाम किया और मैच 21-18,21-15 से जीतकर क्वार्टरफाइनल में प्रवेश किया। बता दें कि अब से कुछ देर में आज पीवी सिंधु महिला एकल में क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने के लिए ग्रेगोरिया मारिस्का तुंगजंग के खिलाफ खेलेंगी।

ब्रिटेन में प्रो एम गोल्फ के लिए पहुंचे खिलाड़ी पोज देते हुए।

(फोटो-ईएमएस)

एकदिवसीय मैचों में दो बार लगातार तीन शतक लगाने वाले पहले बल्लेबाज बने बाबर आजम

मुल्तान, (हि.स.)। पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम ने बुधवार को मुल्तान में वेस्टइंडीज के खिलाफ पहले एकदिवसीय मैच में शानदार शतकीय पारी खेल एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल कर ली। बाबर एकदिवसीय मैचों में दो बार लगातार तीन शतक बनाने वाले पहले बल्लेबाज बने। बाबर ने 107 गेंदों में 103 रनों की पारी खेली और पाकिस्तान को पांच विकेट से जीत दिलाई। यह दूसरी बार है जब बाबर ने वनडे में लगातार तीन शतक बनाए हैं। उनके पहले के तीन शतक 2016 में वेस्टइंडीज के खिलाफ आए थे, जब उन्होंने एक के बाद 120, 123 और 117 रनों की पारी खेली थी। इस उत्कृष्ट उपलब्धि के साथ, बाबर विराट कोहली के लंबे समय से चले आ रहे रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ते हुए इस प्रारूप में कप्तान के रूप में सबसे तेज 1,000 रन बनाने वाले खिलाड़ी बन गए। उन्होंने पाकिस्तान के कप्तान के रूप में अपनी 13 वीं पारी में मील का पत्थर हासिल किया, जबकि कोहली को वहां पहुंचने में 17 पारियां लगीं थीं। मैच की बात करें तो इस मैच में पाकिस्तान ने वेस्टइंडीज द्वारा दिये गए 306 रनों के लक्ष्य को बाबर आजम

(103) के शानदार शतक और इमाम-उल-हक (65) के साथ किये गए उनके 103 रनो की साझेदारी की बदौलत 49.2 ओवरों में 5 विकेट के नुकसान पर हासिल कर लिया। इस जीत के साथ ही मेजबान पाकिस्तान ने तीन मैचों की श्रृंखला में 1-0 से बढ़त बना ली है।

DELHI CRIME 10 june 2022:Layout 1 6/9/2022 7:29 PM Page 7

अब देश के 35 छावनी बोर्ड और 12 सैन्य अस्पतालों में भी होगा आयुर्वेद से इलाज

- आयुष मंत्रालय ने इन केंद्रों पर आयुर्वेद चिकित्सकों को तैनात करने की व्यवस्था बनाई
- शाहजहांपुर और जबलपुर में छावनी बोर्डों के अस्पतालों में जल्द शुरू होंगे आयुर्वेद केंद्र

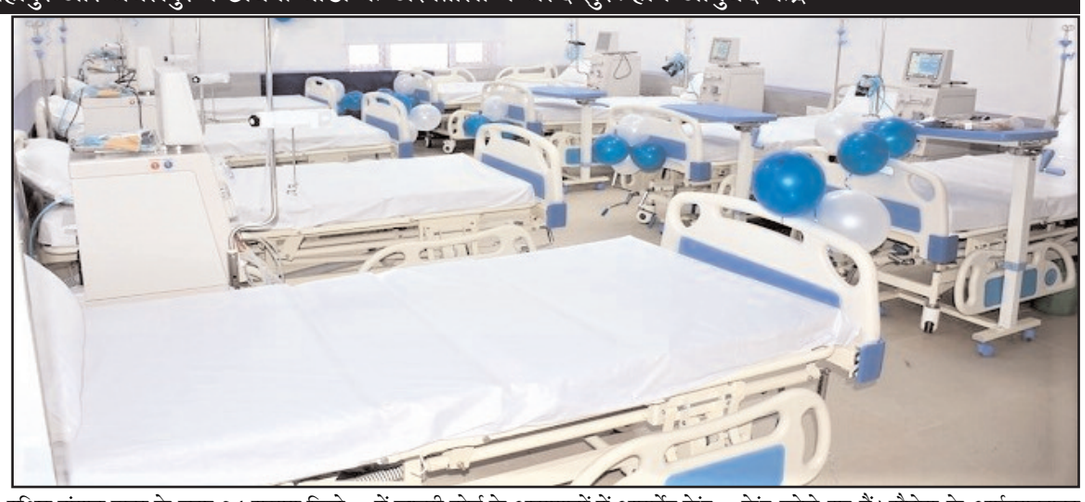

नई दिल्ली, (हि.स.)। भारतीय आयुर्वेद प्रणाली को बढ़ावा देने के मकसद से 37 छावनी बोर्ड अस्पतालों में से 35 और सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवाओं के 12 सैन्य अस्पतालों में आयुर्वेद केंद्र शुरू किये गए हैं। सरकार की इस पहल से सशस्त्र बलों के कर्मियों, असैन्य कर्मचारियों के परिवारों सहित छावनियों के निवासियों को आयुर्वेद का लाभ मिल सकेगा। साथ ही पारंपरिक भारतीय आयुर्वेद प्रणाली की दवाओं को एक बड़े समुदाय में और अधिक लोकप्रिय बनाएगी। इन आयुर्वेद केंद्रों को सक्रिय बनाने के लिए रक्षा मंत्रालय और आयुष मंत्रालय ने मिलकर कार्य किया है। इस पहल में सहयोग करने के लिए आयुष मंत्रालय ने इन आयुर्वेद केंद्रों पर आयुर्वेद चिकित्सकों को तैनात करने की व्यवस्था की है। अब तक 37 छावनी बोर्ड अस्पतालों में से 35 और सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा के 12 सैन्य अस्पतालों में आयुर्वेद केंद्रों को प्रारंभ कर दिया गया है। शाहजहांपुर और जबलपुर में छावनी बोर्डों के शेष दो अस्पतालों में आयुर्वेद केंद्रों को जल्द ही शुरू करने की योजना है। रक्षा मंत्रालय प्रवक्ता के अनुसार उत्तर प्रदेश के आगरा, इलाहाबाद, बरेली, झांसी, बबीना, मथुरा, उत्तराखंड के देहरादून, रुड़की, कैम्पटी, रानीखेत, लैंसडाउन, मध्य प्रदेश के महू, पचमढ़ी, मोरार, श्रीनगर के बादामीबाग, पश्चिम बंगाल राज्य के उत्तर 24 परगना ज़िले में बैरकपुर, गुजरात के अहमदाबाद, महाराष्ट्र के देहू रोड, खड़की, तेलंगाना के सिकंदराबाद में आयुर्वेद केंद्र खोले गए हैं।

इसके अलावा हिमाचल प्रदेश राज्य के सोलन ज़िले में दगशाई, कसौली, सुबाथु, शिमला जिले में जतोग, खास्योल, चम्बा ज़िले में बकलोह और डलहौजी, पंजाब के फिरोजपुर, जालंधर, अमृतसर, जम्मू, बिहार के दानापुर, झारखंड के रामगढ़, कर्नाटक के बेलगाम, तमिलनाडु के वेलिंगटन में छावनी बोर्ड के अस्पतालों में आयुर्वेद केंद्र खोले गए हैं। सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा के 12 सैन्य अस्पतालों की सूची में सेना के बेस अस्पताल दिल्ली कैंट-पश्चिमी कमान, सीएच (डब्ल्यूसी) चंडीमंदिर-पश्चिमी कमान, सीएच (सीसी) लखनऊ-मध्य कमान, सीएच (एससी) पुणे-दक्षिणी कमान, सीएच (ईसी) कोलकाता-पूर्वी कमान, एमएच जबलपुर-सेंट्रल कमांड, एमएच जयपुर-दक्षिणी पश्चिमी कमान, 166 एमएच, जम्मू-उत्तरी कमान, 151 बीएच, गुवाहाटी-पूर्वी कमान में आयुर्वेद केंद्र खोले गए हैं। नौसेना के आईएनएचएस अश्विनी, मुंबई में वायु सेना के सीएच (एएफ) बैंगलोर और वायु सेना अस्पताल, हिंडन में आयुर्वेद केंद्र खोले गए हैं।

इससे पहले, आयुष मंत्रालय के साथ रक्षा मंत्रालय ने दो समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए थे। पहला समझौता 37 छावनी अस्पतालों में आयुर्वेद केंद्र शुरू करने के लिए और दूसरा सशस्त्र बल चिकित्सा सेवाओं के 12 सैन्य अस्पतालों में आयुर्वेद केंद्र शुरू करने के लिए था।

निलंबित भाजपा नेत्री नूपुर शर्मा के खिलाफ भी एफआईआर

File photo

नई दिल्ली, (हि.स.)। ट्विटर सहित सोशल मीडिया पर अलग-अलग लोगों द्वारा भारतीय जनता पार्टी से निलंबित प्रवक्ता नूपुर शर्मा को धमकी देने वाले मामले में अब दिल्ली पुलिस की इंटेलीजेंस फ्यूजन एंड स्ट्रेटजिक ऑपरेशन (आईएफएसओ) यूनिट ने भी मामला दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार, बीते दिनों अनेक लोगों ने दो अलग-अलग समुदायों के लिए आपत्तिजनक पोस्ट सोशल मीडिया पर डाली। इसके अलावा आपत्तिजनक टिप्पणी भी की गई। इसे लेकर दोनों पक्षों के लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। इसके अलावा भाजपा की निलंबित नेता नूपुर शर्मा एवं अन्य के खिलाफ भी एक और एफआईआर दर्ज की गई है। आईएफएसओ यूनिट के डीसीपी केपीएस मल्होत्रा के मुताबिक बीते दिनों कुछ लोगों द्वारा एक-दूसरे समुदाय के बारे में आपत्तिजनक ट्वीट किए गए थे। इसके अलावा सोशल मीडिया पर भी आपत्तिजनक बातें लिखी गई थीं। इस तरह के कई मामलों पर संज्ञान लेते हुए स्पेशल सेल ने बुधवार को आठ लोगों के खिलाफ एक एफआईआर दर्ज की है। इस एफआईआर में भाजपा से निकाले गए नेता नवीन कुमार जिंदल, लेखिका सबा नकवी, हिन्दू महासभा से पूजा शकुन पांडेय, राजस्थान से मौलाना मुफ्ती नदीम और पीस पार्टी के प्रवक्ता शादाब चौहान के नाम शामिल हैं। इन पर लोगों की भावनाओं को आहत करने का आरोप है। वहीं, एक अन्य एफआईआर में सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वाले कुछ लोगों के खिलाफ मामला दर्ज हुआ है। इसमें भाजपा से निष्कासित नेता नूपुर शर्मा को भी आरोपित बनाया गया है। सूत्रों की मानें तो कुछ दिनों पहले आईएफएसओ ने नूपुर शर्मा की शिकायत पर एफआईआर दर्ज की थी। इसके अलावा नूपुर को मिल रही धमकियों के चलते उन्हें दिल्ली पुलिस की तरफ से सुरक्षा भी मुहैया करवाई गई है।

मेट्रो की ब्लू लाइन पर तकनीकी खराबी, हजारों यात्री परेशान

नई दिल्ली, (हि.स.)। मेट्रो की ब्लू लाइन पर गुरुवार सुबह एक बार फिर तकनीकी खराबी देखने को मिली। इसके चलते मेट्रो को बेहद धीमी रफ्तार से चलाया जा रहा है। इस तकनीकी खराबी के चलते द्वारका सेक्टर-21 से नोएडा एवं द्वारका सेक्टर- 21 से वैशाली दोनों ही रूट प्रभावित हो रहे हैं। सुबह के समय आई खराबी के चलते हजारों यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ा। वहीं, डीएमआरसी के अनुसार, सुबह 7.15 बजे से मेट्रो खराब हुई थी। जिसके कारण दो घंटे तक ब्लू लाइन की सेवा बाधित रही। अब ठीक हो गई है। जानकारी के अनुसार मेट्रो की ब्लू लाइन पर द्वारका सेक्टर 21 से नोएडा इलेक्ट्रॉनिक सिटी एवं द्वारका सेक्टर 21 से वैशाली के लिए मेट्रो चलती हैं। दिल्ली मेट्रो की यह सबसे व्यस्त लाइन है। इस पर सबसे ज्यादा यात्री रोजाना सफर करते हैं। गुरुवार सुबह लगभग 7:15 बजे इस लाइन पर तकनीकी समस्या आने के चलते मेट्रो अपनी पूरी रफ्तार के साथ नहीं चल रही है। डीएमआरसी ने इसे लेकर ट्वीट किया है। उन्होंने यात्रियों को जानकारी दी है कि मेट्रो की ब्लू लाइन में आई खराबी के चलते इस पर सफर करने वाले यात्रियों को समय लग सकता है। डीएमआरसी का कहना है कि मेट्रो की ब्लू लाइन में आई तकनीकी खराबी के कारण यह समस्या हुई है। सूत्रों की माने तो मेट्रो की ब्लू लाइन में सबसे ज्यादा तकनीकी खराबी आती है। डीएमआरसी द्वारा कई बार इसे लेकर काम किया गया है लेकिन इसके बावजूद इस तरीके की परेशानी आये दिन यात्रियों को झेलनी पड़ती है।

दूसरे नम्बर पर आती है ब्लू लाइन मेट्रो - डीएमआरसी के अनुसार, सबसे बड़ी पिंक लाइन है। यह 57 किलोमीटर की है। इसमें करीब 38 मेट्रो स्टेशन है, जबकि दूसरे नम्बर पर ब्लू लाइन है। इसकी दूरी 56 किलोमीटर तक है और इस बीच इसमें 49 स्टेशन आते हैं।

भारत ने वियतनाम को 12 हाई-स्पीड गार्ड बोट सौंपी, समारोह में शामिल हुए राजनाथ

नई दिल्ली, (हि.स.)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने अपने दौरे के दूसरे दिन हांग हा शिपयार्ड में भारत की ओर से वियतनाम को 12 हाई-स्पीड गार्ड बोट सौंपी। रक्षा मंत्री ने इस समारोह में शामिल होने पर खुशी जताते हुए कहा कि यह समारोह भारत सरकार द्वारा 100 मिलियन अमेरिकी डॉलर की रक्षा लाइन ऑफ क्रेडिट के तहत 12 हाई स्पीड गार्ड बोट बनाने की परियोजना के सफल समापन का प्रतीक है। रक्षा मंत्री अपनी वियतनाम यात्रा के दूसरे दिन 12 हाई स्पीड गार्ड बोट के हैंड-ओवर समारोह में शामिल होने के लिए हांग हा शिपयार्ड पहुंचे। इस मौके पर राजनाथ सिंह ने भरोसा जताया कि यह समारोह भारत और वियतनाम के बीच कई और सहकारी रक्षा परियोजनाओं का अग्रदूत होगा। शुरूआती पांच नावों का निर्माण भारत में एलएंडटी शिपयार्ड में किया गया था और शेष सात वियतनाम के हांग हा शिपयार्ड में बनाई गई हैं। रक्षा मंत्री ने कहा कि मुझे इस ऐतिहासिक समारोह में शामिल होकर बहुत खुशी हो रही है, जो रक्षा लाइन ऑफ क्रेडिट के तहत 12 हाई स्पीड गार्ड नौकाओं के निर्माण की परियोजना का सफल समापन है। राजनाथ सिंह ने कहा कि यह परियोजना हमारे 'मेक इन इंडिया- मेक फॉर द वर्ल्ड' मिशन का एक ज्वलंत उदाहरण है। हमें बहुत खुशी होगी कि वियतनाम जैसे करीबी मित्र रक्षा उद्योग सहयोग में वृद्धि के माध्यम से हमारे रक्षा उद्योग परिवर्तन का हिस्सा बनें। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने हनोई में वियतनाम के राष्ट्रपति गुयेन जुआन फुक से मुलाकात की और इसके बाद हनोई में वियतनाम के राष्ट्रीय रक्षा मंत्रालय का दौरा किया। उन्होंने अपने वियतनामी समकक्ष जनरल फान वान जियांग के साथ द्विपक्षीय चर्चा की। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने वियतनाम के हनोई में सैन्य इतिहास संग्रहालय का दौरा किया। उन्होंने हनोई में भारतीय समुदाय के सदस्यों से मुलाकात की और उन्हें संबोधित किया। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह अपनी यात्रा के पहले दिन हनोई में वियतनाम के राष्ट्रीय रक्षा मंत्री जनरल फान वान गियांग के साथ द्विपक्षीय बैठक की। भारत-वियतनाम रक्षा साझेदारी पर संयुक्त 'विजन स्टेटमेंट' पर हस्ताक्षर किए गए। उन्होंने वियतनाम के प्रधानमंत्री फाम मिन्ह चिन से मुलाकात की। रक्षा मंत्री हनोई में एक ऐसे पगोडा में पहुंचे जहां पर भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने साठ साल पहले वियतनाम के प्रेसिडेंट हो ची मिन्ह के साथ एक बोधि वृक्ष लगाया था। उसी वृक्ष के नीचे खड़े हो कर उन्होंने बौद्ध भिक्षुकों से बातचीत की। राजनाथ सिंह ने कहा कि हनोई में ऐतिहासिक ट्रैन क्वोक पगोडा में जाने के बाद धन्य महसूस कर रहा हूं। वियतनाम के साथ हमारी साझा बौद्ध विरासत हमारे आधुनिक संबंधों की एक मजबूत कड़ी है।

चक्रवातों की तरह अब लू के भी रखे जाएंगे नाम

नई दिल्ली (ईएमएस)। तूफान और चक्रवात की तरह, जल्द ही लू यानी हीटवेव के भी नाम रखे जाएंगे। दरअसल हीटवेव को नाम देने के पीछे की वजह उनके महत्व को उजागर करना, लोगों और सार्वजनिक अधिकारियों को सतर्क करना है ताकि जरूरत पड़ने पर आवश्यक कदम उठाए जा सकें। स्पेन का सेविले शहर भीषण गर्मी की लहरों का नामकरण शुरू करने वाला पहला शहर होगा। पांच अन्य शहर - लॉस एंजिल्स; मियामी; मिल्वौकी; कैनसस सिटी, मिसौरी; और एथेंस - ने भी लू को वर्गीकृत करने के लिए मौसम के आंकड़ों और सार्वजनिक स्वास्थ्य मानदंडों का इस्तेमाल करते हुए एक समान पहल तैयार की है। वे थ्री-कैटेगरीज सिस्टम का इस्तेमाल करेंगे, जो प्रत्येक शहर की विशेष जलवायु के लिए सबसे उपयुक्त हो उसके आधार पर इनका नाम रखा जाएगा।

- कब मिलेगी भीषण गर्मी से राहत?

अर्शट-रॉक के मुख्य हीट साइंस एड-वाइजर लैरी कल्कस्टीन ने कहा कि प्रत्येक भाग लेने वाले शहर में "फामुर्लों का एक अलग सेट" होता है जो यह निर्धारित करेगा कि शहरी संरचना के आधार पर कैटेगरीज कैसी दिखती हैं। अर्शट-रॉक और इसका दो साल पुराना एक्सट्रीम हीट रेजिलिएशन एलायंस नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन और विश्व मौसम विज्ञान संगठन को हीट वेव्स के नामकरण और रैंकिंग को एक आदर्श बनाने के लिए जोर दे रहा है।

सत्येंद्र जैन की मुश्किलें बढ़ीं, कोर्ट ने 13 जून तक ईडी की हिरासत में भेजा

नई दिल्ली। दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट ने मनी लाउंड्रिंग के आरोप में गिरफ्तार दिल्ली सरकार के मंत्री सत्येन्द्र जैन को 13 जून तक ईडी की हिरासत में भेज दिया है। सत्येंद्र जैन को ईडी की हिरासत में भेजने के कोर्ट के आदेश के बाद जब सत्येंद्र जैन कोर्ट रूम से बाहर निकले तो उनकी तबीयत बिगड़ गई। सत्येन्द्र जैन को सांस लेने में तकलीफ होने पर राम मनोहर लोहिया अस्पताल ले जाया गया। सत्येन्द्र जैन की ओर से पेश वकील ने कहा कि सत्येंद्र जैन को कई बीमारियां हैं। उन्हें कोरोना हुआ था। उन्होंने कहा कि सत्येंद्र जैन को डिस्पेप्सिया की बीमारी है और ईडी की जांच के तरीके से परेशान हैं। सुनवाई के दौरान ईडी ने सत्येंद्र जैन की पांच दिनों की हिरासत की मांग की। ईडी ने कहा कि सत्येंद्र जैन पूछताछ में सहयोग नहीं कर रहे हैं। ईडी ने कहा कि अभी इस मामले में दूसरे लाभार्थियों का पता लगाया जाना बाकी है। सत्येंद्र जैन की हिरासत की ईडी की मांग का विरोध करते हुए सत्येंद्र जैन की ओर से पेश वकील ने कहा कि नौ दिनों की पूछताछ में भी ईडी हिरासत मांग रही है जिसका मतलब है कि उसने पूछताछ के लिए दिए गए समय का उपयोग नहीं किया। ईडी जबरन गुनाह कबूल करवाना चाहती है। 31 मई को कोर्ट ने सत्येन्द्र जैन को आज तक की ईडी हिरासत में भेजा था।

सत्येन्द्र जैन को 30 मई को गिरफ्तार किया गया था। जैन की पेशी के दौरान ईडी की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा था कि कैश दिल्ली में दिया गया। ये कैश कोलकाता में हवाला के जरिये एंट्री ऑपरेटर्स तक पहुंचा। ये एंट्री ऑपरेटर्स कंपनियों में शेयर खरीद कर निवेश करते थे। ये फर्जी कंपनियां थीं। इन फर्जी कंपनियों में निवेश कर काला धन को सफेद बनाया जा रहा था। पैसों से जमीन खरीदने का काम किया गया। प्रयास नामक एनजीओ के जरिये कृषि भूमि खरीदी गई। कोर्ट ने तुषार मेहता से पूछा था कि क्या आप 2015-17 के लेनदेन की बात कर रहे हैं। तब मेहता ने कहा था कि हां। मेहता ने कहा था कि ईडी ने उन्हें जांच के लिए बुलाया, लेकिन उन्होंने जांच में सहयोग नहीं किया। मेहता ने कहा था कि हमें ये पता लगाना है कि पैसा किसी और का लगा था कि नहीं, इस पैसे से किसको लाभ हुआ इसका पता लगाना है। उन्होंने कहा था कि ये मामला केवल 4.81 करोड़ का ही नहीं है। सत्येन्द्र जैन की ओर से वरिष्ठ वकील एन हरिहरन ने कहा था कि सत्येन्द्र जैन जांच में लगातार सहयोग कर रहे हैं। हरिहरन ने कहा था कि ईडी जो दलीलें दे रहा है वो 2017 में दाखिल चार्जशीट का दोहराव मात्र है।

उस केस में एक इंच आगे नहीं बढ़ा गया है। 5-6 बार सत्येन्द्र जैन को बुलाया गया और वे जांच में शामिल हुए। हरिहरन ने कहा था कि सह-आरोपी कुछ भी कर सकता है उसके लिए आरोपी जिम्मेदार नहीं है। सीबीआई जांच में भी आय के स्रोत का पता नहीं लगाया गया। इस बात का कोई सबूत नहीं है कि आरोपी का पैसा हवाला के जरिये गया। सत्येन्द्र जैन के घर पर दो बार छापा डाला गया। उनका बैंक खाता सीज किया गया। हरिहरन ने कहा था कि सत्येन्द्र जैन ने मंत्री बनने के बाद सभी कंपनियों से इस्तीफा दे दिया था। ईडी के पास जांच करने के लिए सबकुछ है।

हमारे सहयोगी संरक्षक एवम् ब्यूरो प्रमुख

प्रधान सम्पादक – नरेन्द्र कुमार

सहयोगी संरक्षक

अनिल सेठी

नरेश ए बाबू-कार्यकारी निदेशक

संपादन सहयोगी - मोहित शुक्ला

सदस्य एवं रिपोर्टर

•राजकुमार कश्यप (दिल्ली) •दीपक कुमार (पटियाला)
• वीरेन्द्र कुमार ठाकुर •वीरेंद्र सिंह बघेल (फरीदाबाद)
• अनीता सिंह •राम नाथ •मुकेश गुप्ता, मीनाक्षी निगम
•मोहम्मद शमशेर (दिल्ली) • मुकेश जोशी (उत्तराखण्ड)
• अशोक कुमार, काजल शर्मा (गुरूग्राम)
• अवध किशोर त्रिपाठी (अहमदाबाद)
•श्याम लाल (मेरठ) •रामनरेश सिंह (पडरौना, उत्तरप्रदेश)
•नवीन सुरेल, तालबहेट, ललितपुर, (झाँसी)
• ओम शुक्ला, मनीष शुक्ला, शिवम शुक्ला (कानपुर)
• ओमपाल वर्मा, इन्द्रमणी मंडल (रायपुर छत्तीसगढ़)
• फ्रूमू लामों सिलीगुड़ी, रोशन कुमार मिश्रा (पश्चिम बंगाल)
■ पिंटू बनर्जी (पश्चिम बंगाल)

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक हैं।

समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री, लेख, रचनाओं, एवम् विज्ञापनों में लेखकों और विज्ञापन दाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए दिल्ली क्राईम व भ्रष्टाचार विरोधी मोर्चा की किसी भी तरह की जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र दिल्ली ही मान्य होगा।

विशेष :- किसी भी परिस्थिति में निर्णय लेने का अधिकार केवल संपादक को है।

S-529, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली - 110092

संपर्क – 011-35631400
Customer Care No.
83750 00628

ADVERTISMENT RATE TARIFF PLAN

FULL PAGE | HALF PAGE | QUARTER PAGE

FULL FRONT PAGE	₹ 1,20,000/-
FULL INNER PAGE	₹ 60,000/-
FULL BACK PAGE	₹ 90,000/-
HALF FRONT PAGE	₹ 66,000/-
HALF PAGE INNER	₹ 36,000/-
HALF PAGE BACK	₹ 51,000/-
QTR. PAGE FRONT	₹ 36,000/-
QTR. PAGE INNER	₹ 21,000/-
QTR. PAGE BACK	₹ 30,000/-

Classifieds Ads. Per Column / 3 CM. Rs.2100/-
Visiting Card Size Advertisements:
Front Page Rs. 6000/- Back Page Rs. 4500/-
Inner Page Rs.3000/-

DELHI CRIME 10 june 2022:Layout 1 6/9/2022 7:29 PM Page 8

पृथ्वीराज की कम कमाई पर सोनू सूद ने कहा, पैनडेमिक के बाद चीजें बदल गई

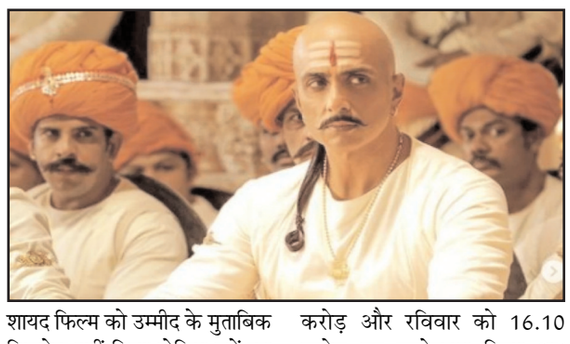

मुंबई (ईएमएस)। अक्षय कुमार स्टारर फिल्म सम्राट पृथ्वीराज बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद के मुताबिक कमाई नहीं कर सकी है। फिल्म को लेकर काफी उम्मीदें थीं कि ये बॉक्स ऑफिस पर सुनामी ला देगी, लेकिन खिलाड़ी कुमार की मूवी को शानदार रिस्पॉन्स नहीं मिला है। इस पर अब सोनू सूद ने प्रतिक्रिया दी है। सोनू सूद मूवी सम्राट पृथ्वीराज में चांद बरदाई का रोल प्ले किया है। उनके काम की लोग जमकर तारीफ भी कर रहे हैं। सोनू सूद से फिल्म को टिकट खिड़की पर उम्मीद के मुताबिक रिस्पॉन्स ना मिलने पर सवाल हुआ तब अभिनेता ने कहा, ये फिल्म स्पेशल है। मुझे शानदार किरदार निभाने का मौका मिला। लोगों ने काफी प्यार भी दिया। मैं दर्शकों के प्यार के लिए उनका शुक्रगुजार हूं। शायद फिल्म को उम्मीद के मुताबिक बिजनेस नहीं मिला लेकिन हमें इस स्वीकारने की जरूरत है कि पैनडेमिक के बाद चीजें बदल गई हैं। मैं कहूंगा कि मैं इससे खुश हूं और जिस तरह लोगों ने प्यार बरसाया है। सम्राट पृथ्वीराज के कलेक्शन की बात करें मूवी ने 10.70 करोड़ के साथ खाता खोला था। शनिवार को फिल्म ने 12.60 करोड़ और रविवार को 16.10 करोड़ का कलेक्शन किया था। ओपनिंग वीकेंड में फिल्म ने 39.40 करोड़ कमाए। अक्षय कुमार की फिल्म वर्किंग डेज में कैसा कलेक्शन करती है, इसपर सबकी नजरें टिकी हैं। अक्षय की मूवी सम्राट पृथ्वीराज की कार्तिक आर्यन की फिल्म भूल भुलैया 2 से तुलना करें, तब खिलाड़ी कुमार मात खाते दिखते हैं।

मिस मार्वल की रिलीज के लिए फरहान का आभार व्यक्त

मुंबई (ईएमएस)। मिस मार्वल की रिलीज से पहले, अभिनेता फरहान अख्तर ने इसके मेकर्स का आभार व्यक्त किया है। वह इस सीरीज से मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स (एमसीयू) की शुरूआत कर रहे हैं। सीरीज में फरहान अख्तर के अलावा, इमान वेल्लानी, मोहन कपूर, जेनोबिया श्रॉफ, सागर शेख, अरामिस नाइट और फवाद खान अहम किरदार में हैं। सीरीज 8 जून को डिज्नी प्लस हॉट स्टार पर स्ट्रीम होगी। फरहान ने स्ट्रीमिंग से पहले एक खूबसूरत नोट लिखा है। फरहान ने नोट में लिखा, यह पोस्टर सीरीज के बनाने वालों की सराहना के के तौर पर है, यह निर्देशकों और कैमरे के सामने और पीछे उन सभी की सराहना करता है, जिन्होंने मिस मार्वल को बनाने में सहयोग किया। यह मेरी शूटिंग के दिनों के दौरान उनके गाइडेंस के लिए शरमीन ओबैद-चिनॉय की सराहना पोस्ट है। फरहान आगे लिखते हैं, यह मार्वल की प्रशंसा में है। मुझे उनकी इनक्लूसिवनेस का हिस्सा बनने पर गर्व है। यह शो डायवर्सिटी का फेस्टिवल है और यह निश्चित रूप से उपमहाद्वीप की लाखों युवा लड़कियों और लड़कों के लिए खुशी और सेल्फ आइडेंटिटी का गौरव लाएगा। पूरी तरह से मनोरंजन और सहजता से मंत्रमुग्ध होने के लिए तैयार रहें। धन्यवाद और शुभकामनाएँ, टीम मिस मार्वल। मिस मार्वल में मुख्य रूप से कई एशियाई कलाकार हैं। इस सीरीज में फरहान के अलावा फवाद भी हैं। फवाद ने पहले पुष्टि की थी कि वह सीरीज में हैं। फिल्म कंपेनियन के साथ एक इंटरव्यू में, फवाद ने पुष्टि की, हां, मैं हूं। वहां तब मैं इनकार नहीं कर सकता, अब तो मैं झूठ नहीं बोल सकता, वहां तब उन्होंने खुद न्यूज लगा दी है। मिस मार्वल इमान वेल्लानी लीड रोल निभा रही हैं। वह सीरीज में कमला खान उर्फ मिस मार्वल बनी हैं।

बॉक्स आफिस पर गिरते कैरियर ग्राफ को सहारा देने के लिए सलमान ने बोनी कपूर का जताया आभार

मुंबई (ईएमएस)। आईफा 2022 अवॉर्ड्स सेरेमनी से कई तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं. इवेंट से जुड़ी कई मजेदार जानकारियां लोग शेयर कर रहे हैं। इसमें सलमान खान का एक बयान भी शामिल है। सलमान ने आईफा में बोनी कपूर को धन्यवाद दिया और कैरियर के बुरे दौर में सहारा देने के लिए उनके प्रति आभार प्रकट किया। बता दें कि मलाइका अरोड़ा और अर्जुन कपूर की रिलेशनशिप की वजह से सलमान ने कपूर परिवार से दूरी बना ली थी, लेकिन आईफा में सलमान ने अर्जुन कपूर के पिता बोनी कपूर की जमकर तारीफ की और निरंतर सहयोग के लिए उनका आभार जताया। सलमान खान ने आईफा अवॉर्ड्स 2022 में उन लोगों का आभार जताया, जिन्होंने इंडस्ट्री में उनके सक्सेसफुल एक्टर बनने में मदद की। इन लोगों में सबसे ऊपर नाम अर्जुन कपूर के पिता बोनी कपूर का नाम आता है. उन्होंने सलमान खान को वांटेड में कास्ट करने का अप्रूवल दिया था. यह सलमान के करियर की सबसे हिट फिल्म साबित हुई. इसके बाद सलमान ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा. सलमान खान ने आईफा 2022 में बोनी कपूर का आभार जताते हुए कहा जब वह बुरे दौर से गुजर रहे थे, तब बोनी कपूर ने उनकी मदद की थी। उन्होंने कहा बोनी जी ने मुझे वांटेड जैसी सुपरहिट फिल्म दी। इससे मेरी बॉक्स ऑफिस पर वापसी हुई। वांटेड के अलावा बोनी जी ने मुझे नो एंट्री दी, जिससे अनिल कपूर का कमबैक हुआ। सलमान खान ने कहा बोनी जी ने मेरी हमेशा हेल्प की है। इसके लिए मैं हमेशा उनका शुक्रगुजार रहूंगा। बता दें कि सलमान शुरू से ही बोनी कपूर के काफी नजदीक रहे हैं। सलमान और अनिल कपूर की भी काफी अच्छी दोस्ती रही है। बता दे बोनी देश के सबसे बड़े प्रोड्यूसर्स में एक हैं। वह बालीवुड के अलावा साउथ की फिल्में भी प्रोड्यूस करते हैं।

रणवीर-सारा ने करण जौहर के साथ 'नाच पंजाबन' गाने पर किया डांस

वरुण धवन की फिल्म जुग जुग जियो 24 जून को रिलीज होने वाली है। इस फिल्म का गाना 'नाच पंजाबन' हिट हो चुका है। अब इस गाने पर कई सेलेब्स रील्स बना रहे हैं। सारा अली खान ने भी अपने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया है जिसमें वो नाच पंजाबन सांग पर करण जौहर और रणवीर सिंह के साथ डांस करती दिख रही हैं। वीडियो में रणवीर, सारा और करण जौहर तीनों ही नाच पंजाबन गाने के हुक स्टेप करते नजर आए। इन तीनों ही स्टार्स को एक साथ ट्रेंडिंग गाने पर डांस करते देख वरुण धवन ने रिएक्ट किया है। वरुण ने लिखा सारा का सारा प्यार। अब ये वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। बता दें कि नाच पंजाबन सांग रिलीज होते ही वरुण धवन ने वीडियो बनाते हुए 'नाच पंजाबन' चैलेंज की शुरूआत की थी।

बॉलीवुड का हिस्सा नहीं बनना चाहती थीं काजोल

बॉलीवुड एक्ट्रेस काजोल और उनकी मां तनुजा जल्द ही 'कौन बनेगा करोड़पति' के मराठी वर्जन 'कोण होणार करोडपति' में गेस्ट के तौर पर नजर आएंगी। काजोल ने शो पर खुलासा किया कि वो कभी एक एक्टर नहीं बनना चाहती थीं। साथ ही उन्होंने कहा कि वो रेगुलर जॉब करना चाहती थीं। शो के दौरान बातचीत करते हुए एक्ट्रेस ने कहा, "मैं कभी भी बॉलीवुड या हिंदी फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा नहीं बनना चाहती थी। मैं इंडस्ट्री में एक एक्ट्रेस के तौर पर एंट्री करना नहीं चाहती थी। मैं हमेशा से एक जॉब करना चाहती थी। एक ऐसी जॉब जहां मेरे अकाउंट में हर महीने सैलरी आए।" काजोल ने 2019 में दिए एक इंटरव्यू में कहा था, "मेरे करियर की शुरूआत अच्छी नहीं थी। मेरी पहली फिल्म अच्छा परफॉर्म नहीं कर पाई थी। मैंने कभी एक्टिंग को करियर के रूप में नहीं देखा था। ये बस हो गया और मैं भी फ्लो के साथ चलती रही। मैं फिल्म सलेक्शन के मामले में बहुत चूजी रही हूं। फिल्मों में काम करते वक्त मैंने बहुत अच्छा टाइम एंजॉय किया है और कुछ अमेजिंग लोगों से भी मुलाकात हुई।"

पैगंबर मोहम्मद पर टिप्पणी के मामले में निंदा करने में सरकार ने एक सप्ताह का वक्त लगा दिया : नसीरुद्दीन शाह

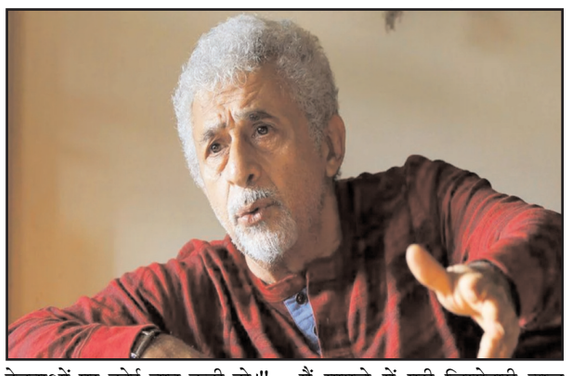

नई दिल्ली (ईएमएस)। पैगंबर मोहम्मद पर टिप्पणी से संबंधित विवाद पर अपनी राय जताते हुए बॉलीवुड अभिनेता नसीरुद्दीन शाह ने कहा कि इस पूरे मामले में देर से कार्रवाई की गई। इस मामले ने अपना 'मुंह खोलने' में और निंदा करने में सरकार ने करीब एक सप्ताह का वक्त लगा दिया। उन्होंने एक समाचार चैनल से कहा कि इस तरह के बयान पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश जैसे देशों में सामने आते हैं। यहां शीर्ष स्तर पर इस तरह की बात नहीं आती। नुपुर शर्मा के बारे में नसीर ने कहा कि वह 'फ्रिंज एलिमेंट' (अराजक तत्व) नहीं हैं, वह बीजेपी की राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं (थीं)। नुपुर ने कहा है कि हिंदू देवताओं के खिलाफ कमेंट किए गए, इसके कारण वह आहत हुईं और इस तरह की बात कह गईं। इस पर नसीर ने कहा, "आप मुझे कोई भी ऐसा बयान/रिकॉर्डिंग दिखाएं जिसमें मुस्लिमों ने हिंदुओं देवी-देवताओं पर कोई बात कही हो।" नसीरुद्दीन शाह ने कहा, "मुझे लगता है कि समय आ गया है। अगर वे समाज में फैल रही नफरत को रोकना चाहते हैं तो पीएम नरेंद्र मोदी को आगे आना चाहिए।" इस सवाल पर कि हाल के समय में विभिन्न मसलों को लेकर दोनों पक्षों की ओर से आक्रामक बयान सामने आए हैं, इसके लिए मीडिया और सोशल मीडिया कितने जिम्मेदार हैं, नसीर ने कहा कि मैं मामले में पूरी जिम्मेदारी न्यूज चैनलों और सोशल मीडिया की मानता हूं जिन्होंने इस मामले को आक्रामक रूप दिया। इस विवाद पर हिंदू समाज की ओर से मजबूत आवाज उठनी चाहिए। एक अन्य सवाल पर नसीर ने कहा कि आज आलम यह है कि यदि कोई मुस्लिम अपने अधिकार की बात करता है तो उस पर निशाना साधा जाता है। आखिर हम हर किसी को भारतीय की तरह क्यों नहीं देखते।

कबीर सिंह के थप्पड़ वाले सीन पर कियारा ने रखी बात

मुंबई (ईएमएस)। कियारा आडवाणी बी-टाउन की मशहूर अभिनेत्री में से एक हैं। कियारा की अपकमिंग फिल्म जुग जुग जियो है। साल 2014 में फिल्म फुगली से बॉलीवुड डेब्यू करने वाली अभिनेत्री की फिल्म भूल भुलैया 2 इन दिनों बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचा रही है। इसके अलावा कियारा ने कबीर सिंह, गुड न्यूज शेरशाह जैसी हिट फिल्में दी हैं। फिल्म कबीर सिंह में एक सीन की वजह से कियारा खूब सुर्खियों में रहीं। इसके बारे में कियारा ने एक टीवी शो पर बताया था। साल 2019 में रिलीज हुई फिल्म कबीर सिंह ने बॉक्स ऑफिस पर ताबड़तोड़ कमाई की थी। शाहिद कपूर और कियारा आडवाणी के करियर की हिट फिल्म थी। इस फिल्म को बेहद पसंद किया गया थो एक सीन को लेकर खूब बवाल भी मचा था। समाज के एक तबके ने इसपर आपत्ति जाहिर की थी कि फिल्म में कियारा आडवाणी पर शाहिद कपूर ने हाथ उठाया था। साल 2021 में कियारा ने माना था कि जो फिल्म में हुआ वह ठीक नहीं था। हम सभी को इसका एहसास है, लेकिन कुछ दर्शकों को लगा कि ये फिल्म केवल एक थप्पड़ को लेकर ही थी। उन्होंने उसके बाद के नतीजों को नहीं देखा। कबीर के लिए कुछ भी काम नहीं आया और प्रीती (कियारा) ने उसे छोड़ दिया। वह पछताया और फिर वापस आया। लेकिन लोगों ने इस फिल्म को सिर्फ एक थप्पड़ के तौर पर देखा इससे मेरा दिल टूट गया। तमाम लोगों ने सिर्फ एक थप्पड़ पर ही फोकस किया। बता दें कि कबीर को एक गुस्से वाले इंसान के तौर पर दिखाया गया था। तमाम आलोचनाओं के बावजूद फिल्म कबीर सिंह ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार प्रदर्शन किया।

नूपुर शर्मा के बचाव में उतरीं कंगना रनोट

बॉलीवुड की क्वीन कंगान रनोट इन दिनों अपनी फिल्मों से ज्यादा अपनी बयानबाजी के लिए जानी जाती हैं। उनकी इस बयानबाजी में पॉलीटिकल कमेंट ज्यादा रहते हैं। फिलहाल कंगना बीजेपी की पूर्व राष्ट्रीय प्रवक्ता नूपुर शर्मा के सपोर्ट में उतरी हैं। उन्होंने नूपुर के सपोर्ट में लिखा कि यह अफगानिस्तान नहीं है। दरअसल, नूपुर ने पैगंबर मोहम्मद पर विवादित टिप्पणी की थी। कंगना ने अपनी पोस्ट में लिखा, नूपुर को अपने मन की बात कहने की पूरी आजादी है। नूपुर को दी गई हर तरह की धमकियां मैंने देखी हैं। हिंदू भगवानों को हर दिन अपमानित किया जाता है तो हम कोर्ट जाते हैं। ये अफगानिस्तान नहीं है।

हमारे पास एक व्यवस्था में चलने वाली सरकार है, जिसे लोगों ने ही चुना है। इस पूरी प्रोसेस को लोकतंत्र कहते हैं। यह बात सिर्फ उन लोगों के लिए है जो हमेशा इस बात को भूल जाते हैं।

केके के आखिरी गाने पर गुलजार हुए इमोशनल

दिग्गज दिवंगत सिंगर केके का 6 जून को आखिरी गाना 'धूप पानी बहने दे' रिलीज हुआ। अब हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में वेटरन राइटर-लिरिसिस्ट गुलजार साहब ने इस गाने में सिंगर के साथ काम करने के अपने अनुभव के बारे में बताया है। साथ ही गुलजार साहब ने यह भी कहा कि ऐसा लगता है कि केके आखिरी बार बस अलविदा कहने के लिए ही आए थे। गुलजार साहब का कहना है कि जब उन्हें डायरेक्टर श्रीजीत मुखर्जी की हिंदी फिल्म 'शेरदिलः द पीलीभीत सागा' के गाने 'धूप पानी बहने दे' पर केके के साथ काम करने का मौका मिला तो उनका दिल खुशी से भर गया था। कृष्णकुमार कुनाथ को केके के नाम से जाना जाता है, उनका पिछले हफ्ते 53 साल की उम्र में कोलकाता में एक कॉन्सर्ट के बाद कार्डियक अरेस्ट के कारण निधन हो गया था। गुलजार साहब ने पहली बार केके के साथ 1996 में बनी उनकी फिल्म 'माचिस' में काम किया था। गुलजार ने कहा, "हाल ही में रिलीज हुआ गाना उनके लिए हमेशा खास रहेगा। श्रीजीत ने 'शेरदिल' में मुझे शामिल कर मुझ पर एहसान किया है। इतनी खूबसूरत फिल्म के लिए न सिर्फ मुझे लिखने को मिला, बल्कि केके के साथ सदियों बाद काम करने और मिलने का मौका मिला। केके ने सबसे पहले माचिस में मेरा एक गाना 'छोड़ आए हम वो गलियां' गाया था।" इस गाने से ही केके ने अपना बॉलीवुड डेब्यू किया था।

दूरदर्शन पर आएगी स्पेशल सीरीज, देश के गुमनाम नायकों की कहानियां दिखाई जाएगी

नई दिल्ली (ईएमएस)। देश इस पूरे साल आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। इसी कड़ी में दूरदर्शन एक नया कार्यक्रम लेकर आ रहा है, जिसमें देश के गुमनाम नायकों की कहानियों और भारतीय इतिहास के बारे में बताया जाएगा। यह पूरा कार्यक्रम 75 एपिसोड का है। मुंबई स्थित प्रोडक्शन हाउस कॉन्टिलो पिक्चर्स द्वारा निर्मित स्वराज नामक सीरीज, 1498 से भारत के नायकों और ऐतिहासिक कहानियों को उजागर करेगी। इस दौरान वास्को डी गामा का पहली बार भारत आने से लेकर भारत को आजादी मिलने तक की कहानी दिखाई जाएगी। यह आजादी का अमृत महोत्सव-भारत की आजादी के 75 साल पूरे करने के लिए केंद्र सरकार का अभियान है। बता दें कि प्रोडक्शन हाउस कॉन्टिलो ने अतीत में कई लोकप्रिय टेलीविजन धारावाहिकों का निर्माण किया है। विशेष रूप से पौराणिक और ऐतिहासिक, जैसे संकटमोचन महाबली हनुमान और सोनी टीवी पर प्रसारित विघ्नहर्ता गणेश, कलर्स पर चक्रवर्ती अशोक सम्राट और जीटीवी पर झांसी की रानी आदि कार्यक्रमों का निर्माण किया है। यह सीरीज ताजा शो के बैच का हिस्सा है, जिसे प्रसार भारती अपनी नई सामग्री अधिग्रहण नीतियों के तहत लगभग 10 प्रोडक्शन हाउस से प्राप्त कर रहा है, जिसमें साईंबाबा टेलीफिल्म्स, सीमा कपूर प्रोडक्शन, एंडेमोल शाइन इंडिया, बालाजी टेलीफिल्म्स आदि शामिल हैं। बता दें कि प्रसार भारती की डीडी के लिए तीन नई सामग्री अधिग्रहण नीतियां हैं। इसमें एक सीधी असाइनमेंट प्रक्रिया शामिल है, जिसके तहत दूरदर्शन एक प्रतिष्ठित प्रोडक्शन हाउस का चयन करता है और कंटेंट बनाने के लिए एक थीम प्रदान करता है। इसके अलावा एक राजस्व-साझाकरण मॉडल भी है, जिसके तहत प्रोडक्शन हाउस डीडी या खुद की थीम पर कंटेंट का उत्पादन कर सकते हैं और फिर राजस्व दोनों के बीच साझा किया जाता है। डीडी सीमित कीमत पर फ्री-टू-एयर चैनलों द्वारा प्रसारित नहीं किया गया कंटेंट भी प्राप्त कर सकता है।

शादी से चंद घंटे पहले विग्नेश शिवन ने नयनतारा के नाम लिखा रोमांटिक नोट

साउथ सुपरस्टार नयनतारा और विग्नेश शिवन एक दूसरे को लगभग छह साल तक डेट करने के बाद आज शादी के बंधन में बंधने जा रहे हैं। शादी से ठीक चंद घंटे पहले विग्नेश शिवन ने होने वाली पत्नी नयनतारा के लिए एक प्यार भरा नोट लिखा है। विग्नेश ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम पर नयनतारा की कुछ तस्वीरें साझा करते हुए लिखा-'आज 9 जून है जिस दिन हम शादी करने वाले हैं। मैं भगवान, यूनिवर्स को धन्यवाद कहना चाहता हूं। भगवान ने मुझे सबसे खूबसूरत इंसान दिया है जो हमेशा मेरे साथ रहेगा। वो एक अच्छी इंसान है। मुझे मेरी दुआओं का फल मिल चुका है। अब मैं शान से कह सकता हूं कि नयनतारा मेरी जिंदगी की रौनक है। मैं उससे बहुत प्यार करता हूं। कुछ घंटों बाद मैं नयनतारा को दुल्हन के लिबास में देखने वाला हूं। मुझे यकीन नहीं हो रहा है।

मैं इस दिन का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। मैं जल्द ही अपनी जिंदगी की एक नई शुरूआत करने वाला हूं। जिसके साक्षी मेरे परिवार के लोग और दोस्त बनने वाले हैं।' सोशल मीडिया पर विग्नेश का यह पोस्ट वायरल हो रहा है। रिपोर्ट्स के अनुसार नयनतारा और विग्नेश शिवन आज तमिलनाडु के खूबसूरत शहर महाबलीपुरम में शादी करेंगे। नयनतारा और विग्नेश शिवन ने महाबलीपुरम के एक आलीशान रिसॉर्ट को बुक किया है।इस ग्रैंड शादी में दोनों के परिवार के अलावा कुछ करीबी दोस्त और रिश्तेदार शामिल होंगे।

सूडोकु नवताल- 6097

मध्यम

8		4	3	9	7	5		6
3					2			
		7	6	5				4
9	6		5			1		7
5		1	4		9	8		2
4		8					5	3
2				6	1	4		
			7					8
7		9	8	3	5	6		1

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -6096 का हल

7	8	4	9	5	2	6	1	3
9	6	2	4	3	1	8	5	7
1	3	5	7	8	6	2	4	9
4	2	3	6	1	5	9	7	8
8	5	9	2	4	7	1	3	6
6	7	1	3	9	8	4	2	5
3	1	7	8	6	4	5	9	2
5	9	6	1	2	3	7	8	4
2	4	8	5	7	9	3	6	1

शब्दजाल - 6844

छ	त्ती	स	घं	टे	द	रि	बु	लं	दी	क	
दो	वि	ल	ग	व	जी	ग	द	इ	ता	ली	
उ	उ	ला	ल	को	ठी	ची	ता	रा	ऊं	क	
स्ता	ज	स	दो	पु	ज	न	ही	न	चे	क	
द	खु	चो	द	लू	लं	का	रो	ग	लो	क	
जी	द	ल	रों	य	ख	धुं	ना	हि	ग	को	
ती	लो	लै	ड़ी	की	प	ध	श	चु	र	ल	
क	र्ज	ला	ई	धा	बा	क	गो	ल	नौ	ण	
ने	बा	म	न्न	ब्रा	ह	रा	री	श	प	ती	
तें	दु	ज	प	व	जी	र्त	त	बें	हा	त	
क	दु	नू	रा	नी	ल	गा	य	द	प	थ	

शब्द जाल में डैनी की 10 फिल्मों के नाम ढूंढिए. नाम ऊपर से नीचे व तिरछे हो सकते हैं.

छत्तीस घंटे, बुलंदी, दो उस्ताद, लालकोठी, चोरों की बारात, चुनौती, लैला मजनू, धुंध, ऊंचे लोग, हीरो

शब्दजाल - 6843 का हल

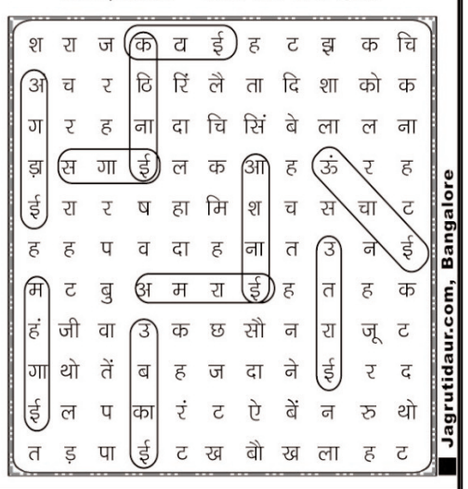

Jagrutidaur.com, Bangalore

अष्टयोग-5797

	3	2		6		5
	33		35		28	
1		5	4			2
	35		35	7	32	
7		6		4		1
	33		31		30	4
3		4		2	5	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5796 का हल

6	1	4	7	2	5	3
5	33	3	35	1	27	7
4	3	7	5	6	1	2
3	29	2	45	7	33	6
1	3	6	7	5	2	4
2	29	1	33	4	30	5
7	4	5	2	3	6	1

Jagrutidaur.com, Bangalore

स्वामी एवं संपादक इंद्रा द्वारा S-529, स्कूल ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली - 110092 से जारी
Customer Care No:- 8375000628, For News & Advertisement- 8588881461, Email-info@delhicrimepress.in, Website- www.Delhicrimepress.in